नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

५ रुपए

मई '९२


चाहे समय हो पढ़ाई का
या वक्त हो खेल का
हर समय है
मॉर्टन का
MORTON
SWEETS
मॉर्टन कन्फैक्सनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो०ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार
बढ़ते बच्चों का मनपसंद साथी मॉर्टन। वर्षों से अपनी उत्कृष्ट शुद्धता और पौष्टिकता के लिए मशहूर-मॉर्टन आपकी, तथा आपके बच्चों की पहली पसंद। चखिये मनपसंद मॉर्टन और खो जाइये स्वादों की रंगीन दुनिया में।
कोकोनट कुकीज़, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम, कोकोनट तथा चाकलेट टफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक स्वादिष्ट स्वादों में उपलब्ध।
और अब केसर बाइट;
केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।
चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अँपर गैंगेज सूगर एंड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है।
किसी भी प्रकार से व्यापार चिन्ह अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।
CC/M-1/91 HIN

डायमण्ड कामिक्स पेश करते हैं



डायमण्ड कार्टून-कहानी-शीर्षक प्रतियोगिता में भाग लीजिए! और जीतिए आकर्षक पुरस्कार। विवरण के लिए नये डायमण्ड कामिक्स देखें



पज़ल पैक चार पुस्तकों का दूसरा सैट
(आपके मस्तिष्क को विकसित और बुद्धि को पैना करने की नियमत कोशिश में। दिलचस्प और उपयोगी सामग्री से लबालब भरा अपनी तरह का एकदम अनुपम संग्रह)
अब प्रस्तुत है, प्रथम सैट नं. 1 से 4 की अपार सफलता के बाद पज़ल पैक का दूसरा सैट **(नं. 5 से 8)**
जल्दी कीजिए!
आज ही अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या हमें लिखें। मूल्य प्रत्येक 5/-

महाबली शाका के 20 कामिक्स का सैट
20 स्टिकर फ्री मूल्य प्रत्येक 6.00

1 अप्रैल 1992 में प्रकाशित अन्य डायमण्ड कामिक्स

फैण्टम-18 (डाइजेस्ट)	15.00
ताऊजी-14 (डाइजेस्ट)	15.00

नये डायमण्ड मिनी कामिक्स

चाचा भतीजा और लुटेरा सांप	2.50
महाबली शाका और मौत के पुजारी	2.50
राजन इकबाल और अनोखे चोर	2.50
झुमरू की चालाकी	2.50

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कॉमिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

मिलें, क्लब के अन्य सदस्यों से!

चाचा चौधरी, लम्बू मोटू, जाब, पिंकी, बिल्लू, ताऊजी, फौलादी सिंह, चन्नी चाची, दाबू, महाबली शाका, चाचा भतीजा, राजन इकबाल, जेम्स बाड, फैण्टम, मैण्ड्रेक.... और कई अन्य मशहूर पात्र।

इन सब पात्रों से मिलाने का श्रेय 'डायमण्ड कॉमिक्स' को है जो देश में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स हैं और हर महीने अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बंगाली और मराठी भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं।

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टाल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

मुफ्त उपहार!

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बनने पर आपको पहली वी.पी. में 'चिल्ड्रन जोक्स' नामक पुस्तक उपहार स्वरूप मुफ्त भेजी जाएगी तथा आपके जन्मदिन पर एक विशेष उपहार भी मुफ्त भेजा जाएगा। समय-समय पर अन्य उपहार भी आपको मिलते रहेंगे।

डाक खर्च माफ!

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाने पर आपको हर महीने वी.पी. से घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स प्राप्त होते रहेंगे। कहीं आने-जाने की भी जरूरत नहीं। जो डाकिया आपका कॉमिक्स पेक्ट लेकर आएगा, आपने केवल उसे कॉमिक्स का मूल्य ही देना है। डाक खर्च भी आपको नहीं देना पड़ेगा।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

सदस्य बनने पर हर महीने आपको 3/-रु. की बचत वी.पी. पर और 7/-रु. की बचत डाक खर्च पर होगी। यानी आपको 10/-रु. की बचत और 12 वी.पी. लगातार छुड़वाने पर आपको 12/-रु. मूल्य की एक डाइजेस्ट उपहार स्वरूप मुफ्त मिलेगी।

अपने मित्रों को सदस्य बनाएं, इनाम पाएं!

यदि आप अपने चार मित्रों के नाम पते व सदस्य शुल्क (10/-रु. प्रत्येक सदस्य) भिजवायेंगे तो आपको उपहार स्वरूप 12/-की एक डाइजेस्ट मुफ्त दी जाती।

हाँ! मैं ''अंकुर बाल बुक क्लब'' का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाकघर __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10/-रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूँ।

मेरा जन्मदिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002



आपके लिए
आपके परिवार के लिए
रूह अफ़ज़ा, अद्वितीय, प्राकृतिक ताज़गी देने वाला पेय।
इसके गुण और बेमिसाल स्वाद प्राकृतिक द्रव्यों से प्राप्त होते हैं। ज़ब भी एक ताज़गी देने वाले पेय की ज़रूरत हो, केवल रूह अफ़ज़ा लीजिए।
रूह अफ़ज़ा आपके पूरे परिवार के मनपसंद आहार को एक महत्वपूर्ण विशेषता प्रदान करता है। यह मिल्क शेक, आईस्क्रीम, नींबू पानी और कस्टर्ड सभी को अत्यन्त मज़ेदार बनाता है।
गर्मी के दिनों में प्यास, लू लगना, सिर दर्द, चक्कर आना, सुस्ती, बदन में पानी की कमी के लिए सदा रूह अफ़ज़ा प्रयोग करें।
जड़ी बूटियों, जीवन दायक तत्वों और प्राकृतिक विटामिनों का अनोखा मिश्रण।
ROOHAFZA
HAMDARD DAWAKHANA (WAKF) DELHI
हमदर्द
शरबत
रूह अफ़ज़ा
८५ वर्षों से अधिक समय से सबका मनपसन्द शरबत
Chaitra-D HWL 2691 A HIN

आओ बात करें

पांड्य राज्य की राजधानी मदुरै थी। वहां के प्रतापी राजा थे पुण्यनिधि। उनके राज्य में सारी प्रजा सुखी थी। पुण्यनिधि खूब दान देते, यज्ञ करते। समय-समय पर तीर्थ-यात्रा भी करते थे।

एक बार पुण्यनिधि ने राज्य का भार पुत्र को सौंप दिया। उन्होंने सेतुबंध रामेश्वर की यात्रा करने का निश्चय किया। अपने परिवार तथा लाव-लश्कर के साथ पुण्यनिधि वहां जा पहुंचे।

राजा पुण्यनिधि स्नान-ध्यान और दान आदि करके वहां से लौटने लगे। राह में उन्हें एक सुंदर कन्या मिली। उन्हें लगा जैसे उनकी अपनी ही बेटी हो। बोले—"बेटी, तुम कौन हो ? यहां किसलिए आई हो ?"

कन्या ने कहा—"मैं अनाथ हूं। आपकी पुत्री बनने आई हूं। आपके साथ महल में रहूंगी। लेकिन एक शर्त है—यदि कोई बल पूर्वक मेरा हाथ पकड़ लेगा या छेड़ेगा तो आप उसे दंड देंगे।"

राजा बोले—"बेटी, तुम जो कह रही हो, मैं वह सब करूंगा। वैसे भी घर में कोई बेटी नहीं है, एक बेटा है। तुम अंतःपुर में मेरी रानी के साथ रहना। जब तुम विवाह के योग्य हो जाओगी, तो जैसा चाहोगी, वैसा ही मैं करूंगा।"

कन्या उनके साथ ही राजधानी चली आई। पुण्यनिधि की रानी थी विंध्यावली। राजा ने विंध्यावली से कहा—"अब यह हमारी बेटी है।"

रानी ने बड़े प्रेम से उस कन्या का हाथ पकड़ लिया। अपनी बेटी मानकर ही उसका पालन-पोषण करने लगी।

कन्या एक दिन महल के उद्यान में फूल चुन रही थी। साथ में कई सखियां थीं। आपस में हंसी-ठिठोली कर रही थीं। तभी वहां एक ब्राह्मण आया। उसके शरीर पर भस्म और माथे पर त्रिपुंड लगा था। उसने झट से कन्या का हाथ पकड़ लिया। कन्या चिल्ला उठी। उसकी सखियां भी घबरा गईं। क्षण भर में ही कई सैनिक वहां आ गए। राजा पुण्यनिधि भी पहुंच गए। उन्होंने पूछा—"बेटी, तुम क्यों चिल्ला रही थीं !"

कन्या की आंखों में आंसू थे। दुखी स्वर में बोली—"पांड्यनाथ, इस ब्राह्मण ने मेरा हाथ पकड़ लिया। देखिए, अब भी निडर होकर पेड़ के नीचे खड़ा है।"

राजा पुण्यनिधि को अपना दिया वचन याद हो आया। उन्होंने सैनिकों को आज्ञा दी। ब्राह्मण को पकड़ लिया गया। हथकड़ी-बेड़ी पहनाकर रामनाथ मंदिर में डाल दिया गया।

रात हुई। पुण्यनिधि ने सपने में देखा कि जिस ब्राह्मण को कैद में डाला गया था, वह तो साक्षात भगवान हैं। चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए हैं। साथ ही राजा की वह कन्या खिले हुए कमल पर बैठी लक्ष्मी हैं। अब राजा को भला नींद कहां !

राजा झट से उठे और कन्या के पास गए। वहां कन्या को महालक्ष्मी के रूप में पाया। प्रणाम करके उनके साथ ही रामनाथ मंदिर में गए। वहां ब्राह्मण को भी साक्षात विष्णु के रूप में पाया। हाथ जोड़कर खड़े हो गए। कहने लगे—"प्रभो, मैंने अनजाने में यह अपराध किया है। मुझे क्षमा कर दीजिए।"

पुण्यनिधि की प्रार्थना सुनकर भगवान बोले—"राजन, मैं तो स्वभाव से ही भक्तों के वश में हूं। तुमने कोई अपराध नहीं किया। तुम्हारी भक्ति की परीक्षा के लिए ही, यह सब किया गया। अनाथ की रक्षा किस प्रकार करनी चाहिए, यह तुमने दिखा दिया। अनाथ बालिका के रूप में होने पर भी तुमने इन्हें घर में रखा और सेवा की। मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

श्रीहरि ने राजा से कहा—"राजन्, तुमने जो मुझे बांधा है, मैं इससे छूटना नहीं चाहता। इसकी स्मृति सदा बनी रहे, इसलिए मैं अब यहां इसी रूप में निवास करूंगा। मेरा नाम 'सेतुमाधव' होगा।" इतना कह प्रभु अंतर्धान हो गए। यह कथा हमसे गुपचुप बहुत कुछ कह देती है, क्या भला ?

—तुम्हारे भइया

नंदन मई '९२
वर्ष : २८ अंक : ७

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

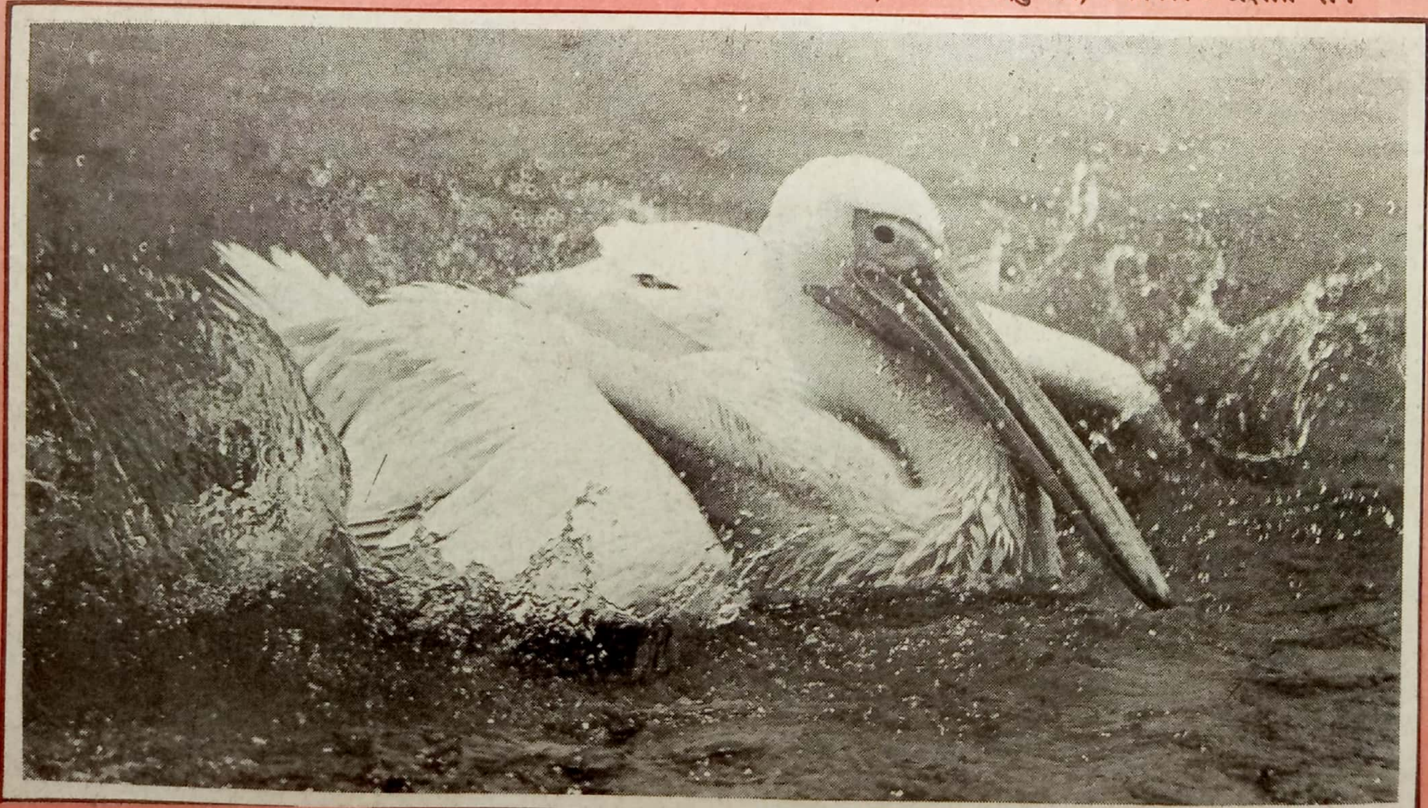
कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : इंद्रजीत जुनेजा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन





नमक का पहाड़

— रामपाली भाटी

त्रिविक्रमपुर में रहते थे पंडित रत्नाकर त्रिपाठी। उनके तीन बेटे थे। बड़ा बेटा चिंतामणि और छोटा बेटा मतिराम कविताएं लिखते थे। रसीली कविताओं के कारण राजा-महाराजा उनका सम्मान करते थे। कीमती उपहार और धन देते थे। लेकिन मंझले बेटे को रसीली कविताओं में कोई रुचि नहीं थी। वह वीर रस की कविताएं लिखता था।

वह कहता— "कवि के बुलाने पर देवी सरस्वती जब आती हैं, तो उन्हें रसीली कविताएं ज्यादा अच्छी नहीं लगतीं। उनकी थकावट तो तब मिटती है, जब कविताएं वीरता और राष्ट्र-प्रेम से भरी हों।"

मंझले की बात सुनकर लोग उसकी हंसी उड़ाते। उसे निठल्ला तक कहते। मंझला कुछ करता-धरता नहीं था, इसलिए उसका नाम ही मंझला निठल्ला पड़ गया।

एक दिन की बात, मंझला खाना खाने बैठा। दाल में नमक कुछ कम था। उसने बड़ी भाभी से कहा— "भाभी, दाल कुछ फीकी है। नमक तो देना।"

भाभी ने सोचा— 'मेरे पति चिंतामणि का सब बहुत सम्मान करते हैं। उन्हीं की कमाई से यह घर चलता है। यह मंझला तो न कुछ करता है, न धरता है। मुफ़्त खा-खाकर हाथी-सा मोटा हो रहा है।'

मंझले की बात सुन, भाभी चिढ़कर बोली— "हां मंझले, तुमने बहुत-सा कमाकर नमक से घर भर दिया है! अब जैसा भी है, खा लो।"

भाभी की बात मंझले को बहुत चुभी। उसने थाली वैसी ही छोड़ दी। बोला— "अच्छा भाभी! अब जब नमक कमाकर लाऊंगा, तभी इस घर में भोजन करूंगा।" कहकर वह बाहर निकल गया।

बाहर तो निकल आया, मगर उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे? उसने चित्रकूट के राजा रुद्रराम सोलंकी का नाम सुन रखा था। चलते-चलते उन्हीं के दरबार में जा पहुंचा। महाराज सिंहासन पर बैठे थे। मंझले ने वहां जाकर उन्हें प्रणाम किया। उनकी प्रशंसा में वीर रस से भरी कुछ कविताएं सुनाईं।

रुद्रराम सोलंकी ने ऐसी कविताएं पहली बार सुनी थीं। वह बहुत प्रसन्न हुए। बोले— "अरे, तुम तो कवियों के भूषण हो। आज से तुम यहीं रहो।"

उस दिन से मंझले का नाम कवि भूषण पड़ गया। राजा ने उसके रहने और खान-पान की व्यवस्था करा दी।

चित्रकूट में कुछ दिन शांति से बीते। लेकिन बुंदेलों ने आक्रमण कर दिया। रुद्रराम युद्ध हार गए। एक बार फिर मंझला बेघर-बार हो गया।

वह चित्रकूट छोड़, आगे चलते-चलते औरंगजेब के दरबार में पहुंचा। औरंगजेब को भी उसकी कविताएं रास आईं। उसने मंझले को जागीर देनी चाही, लेकिन वहां भी मंझले का मन नहीं लगा।

उन दिनों महाराष्ट्र के वीर शिवाजी का नाम चारों ओर फैला हुआ था। वह दक्षिण भारत के बहुत-से किले जीत चुके थे। रायगढ़ को उन्होंने अपनी राजधानी बनाया था। शिवाजी की वीरता और देशभक्ति से मंझला बहुत प्रभावित हुआ। एक दिन वह शिवाजी से मिलने चल दिया। चलते-चलते रायगढ़ पहुंचा।

शाम का समय था। देवी के मंदिर की घंटियां बज

रही थीं। मंझला मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ गया। सोचने लगा— 'ऐसा क्या करूं, जिससे शिवाजी महाराज से भेंट हो जाए।' तभी वहां एक व्यक्ति आया। वह देवी भवानी की पूजा करके लौट रहा था।

सीढ़ियों पर मंझले को सोच में बैठा देख, उसने पूछा— "तुम कौन हो ?यहां क्या कर रहे हो ?"

मंझला बोला— "मन में सिर्फ एक इच्छा लिए पूरे नौ माह पैदल चलकर यहां पहुंचा हूं। काश ! मेरी यह इच्छा पूरी हो जाती।"

"क्या चाहते हो ?"— उस व्यक्ति ने पूछा।

— "मैं शिवाजी महाराज के दर्शन करना चाहता हूं। उन्हें अपनी कविताएं भी सुनाना चाहता हूं।"

—"मैं शिवाजी का दरबारी हूं। तुम अपनी कविताएं मुझे सुनाओ। यदि पसंद आई, तो कोशिश करूंगा कि शिवाजी से तुम्हारी भेंट हो जाए।"

मंझला बहुत खुश हुआ। शिवाजी की प्रशंसा में उसने जो कविता लिखी थी, वही सुनाने लगा।

कविता सुनने के बाद दरबारी बोला— "जरा फिर सुनाओ।" इस प्रकार मंझले ने एक ही कविता अठारह बार सुनाई।

एक ही कविता सुनाते-सुनाते मंझला थक गया था। झुंझलाकर बोला— "अब आप कहें, तो मैं कोई दूसरी कविता सुनाऊं ?"

मंझले की बात सुनकर दरबारी जोर से हंसा। कहा— "मैंने यह निश्चय कर लिया था कि जितनी बार तुम यह कविता सुनाओगे, उतने ही लाख मोहरें, उतने ही हाथी और उतने ही गांव दूंगा। मगर तुम तो अठारह बार में ही थक गए।"

उस व्यक्ति की बात सुन, मंझला चौंक गया। बोला— "आपका परिचय !"

"मैं ही शिवाजी हूं।" फिर मंझले को अपनी निशानी देते हुए शिवाजी ने कहा— "कल इसे लेकर दरबार में अवश्य आना।"

शिवाजी के जाने के बाद मंझला चकित हो गया। जो कुछ हुआ, वह सच था या स्वप्न !

अगले दिन मंझला शिवाजी के दरबार में पहुंचा। शिवाजी ने उसका सम्मान किया। अपने पास बिठाया। कहा— "तुम अपनी भेंट स्वीकार करो। आज से तुम यहीं रहोगे। देशभक्ति की कविताएं सुनाकर हम सबका उत्साह बढ़ाओगे।"

जल्दी ही मंझला रुद्रराम सोलंकी के दिए कवि भूषण नाम से मशहूर हो गया।

एक बार उसे अपने घर की याद सताने लगी। शिवाजी से आज्ञा ले कर, ठाठ-बाट के साथ वह अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसने बहुत-सा नमक खरीदकर ऊंटों पर लदवा दिया। गांव में जब पहुंचा, तो उसे देखने के लिए भीड़ लग गई। उसने ऊंटों से नमक उतरवाकर घर के सामने रखवा दिया। दूर से वह नमक का पहाड़ दिखाई देता था।

फिर आवाज लगाई— "भाभी, देखो मैं नमक कमाकर लाया हूं। संभालो इसे।"

भाभी ने बाहर निकलकर देखा, तो ठगी-सी रह गई। इतने हाथी-घोड़े नौकर-चाकर ! मंझले ने हाथी से उतरकर भाभी के चरण छुए, तो वह संकोच से गड़ गई। इधर मंझले ने चरण छुए, उधर पूरे गांव के लोगों ने महाकवि भूषण की जय से आकाश गुंजा दिया। ●



पहचानते नहीं

—महेश दत्त

दीनू एक चोर था। रोज रात होने पर वह और उसके कुछ साथी गांव के बाहर मिलते। चोरी की योजना बनाते। इसी प्रकार उनका जीवन-यापन होता था।

एक बार, दीनू रात को अपने साथियों से मिलने घर से निकला ही था कि उसे दो बूढ़े दिखाई दिए। उनमें से एक काफी बीमार लग रहा था। पास आने पर उन्होंने पानी मांगा।

दीनू बड़े पसोपेश में था। एक तरफ उसके साथी गांव के बाहर इंतजार कर रहे थे। दूसरी ओर यह बूढ़ा बीमार था। उसे यह भी डर था कि कहीं वह इन्हें घर पर छोड़कर जाए और ये घर का सारा सामान लेकर रफूचक्कर हो जाएं। अंत में उसने घर पर ही रहने का निश्चय किया। रात को अपने खाने में से कुछ उनको भी दे दिया। उसे गुस्सा तो आ रहा था कि कहां से ये दोनों टपक पड़े?

अगले दिन सुबह जब वे दोनों व्यक्ति चलने लगे, तो उन्होंने दीनू को एक मुट्ठी भर अशर्फियां दीं। दीनू चकित हो गया। बोला— "आप मुझे इतनी सारी स्वर्ण-मुद्राएं किसलिए दे रहे हैं?"

एक वृद्ध ने कहा— "हमारे कारण कल शाम तुम वहां नहीं जा सके, जहां जा रहे थे। उस कारण शायद तुम्हारा नुकसान भी हुआ हो। यह उसी नुकसान की भरपाई है।"

इतना कहकर दोनों बूढ़े चले गए।

दीनू समझ नहीं सका कि उन दोनों को उसके बारे में कैसे पता चला? वह सोच-सोचकर हैरान होता रहा। शाम हुई। रोज की ही तरह वह अपने मित्रों से मिलने निकल पड़ा। रास्ते में उसे सामने से वही दोनों बूढ़े आते दिखाई दिए। वे उसी तरफ आ रहे थे। दीनू उत्सुकता से उन्हें देख रहा था कि अभी वे उससे फिर मिलेंगे। किंतु वे दोनों उसके पास से यूं निकल गए, जैसे कभी देखा ही न हो।

दीनू को बड़ा गुस्सा आया 'कैसे आदमी हैं? कल मैंने इनकी इतनी सहायता की। आज ये मुझे पहचान भी नहीं रहे हैं।' वह उनके पीछे चल दिया, किंतु वे गली के मोड़ पर नजर से ओझल हो गए। दीनू वहीं खड़ा हो, उन्हें इधर-उधर ढूंढ़ने लगा। तभी उसे आवाज सुनाई दी— "क्या तुम सचमुच हम से मिलना चाहते हो?"

—"हां! हां! इसीलिए तो आपको खोज रहा हूं। कहां हैं आप लोग?"

उसका इतना कहना था कि वे दोनों अंधेरे से निकल आए। दीनू ने छूटते ही पूछा— "कल आप लोगों की मैंने मदद की थी। आज आप लोग मेरे सामने से ऐसे निकल गए, जैसे मुझे जानते ही नहीं। ऐसा क्यों किया आपने?"

—"नहीं दीनू, तुम वह नहीं हो जिसके यहां हम कल रहे थे, जिसने हमारा सत्कार किया था। तुम तो एक चोर हो, इस समय चोरी करने जा रहे हो।"

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आप यह सब कैसे जानते हैं?" —दीनू ने पूछा।

"दरअसल हम देवदूत हैं। रोज रात को हम ऐसे लोगों की तलाश में निकलते हैं, जो अनजाने में बुराई के रास्ते पर चल दिए हैं। हम ऐसे लोगों की सहायता करते हैं, ताकि वे फिर से नया जीवन जी सकें। इसीलिए हमने तुम्हें कल वे अशर्फियां दी थीं। लेकिन तुमने हमारी आशाओं पर पानी फेर दिया। तुम आज फिर चोरी पर निकले। इसीलिए हमने तुम्हें अनदेखा कर दिया था। हम तो किसी दूसरे व्यक्ति को ढूंढ़ रहे थे, जिसकी मदद कर सकें।"

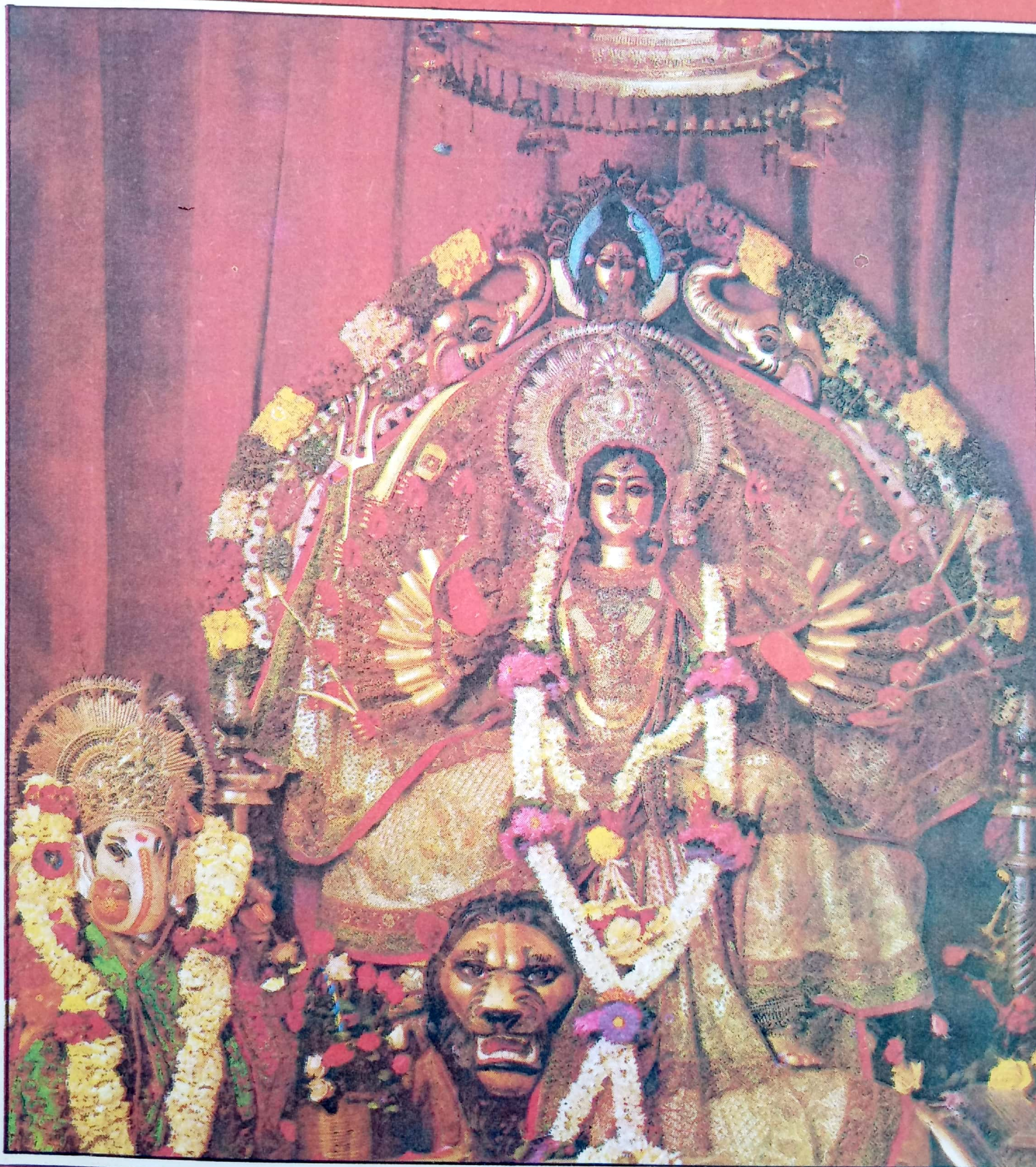
"ठीक है, मैं वैसा ही करूंगा, जैसा आप कहेंगे। लेकिन मेरी भी एक शर्त है।" —दीनू ने शांत स्वर में कहा।

बूढ़े हैरान हो गए।

"जब भी मैं भटक जाऊं आप मुझे सही रास्ता दिखाने फिर आएंगे।" —दीनू ने कहा।

बूढ़े हंस दिए। वे समझ गए कि अब दीनू कभी चोरी नहीं करेगा। उन्होंने उसे और स्वर्ण मुद्राएं दीं।

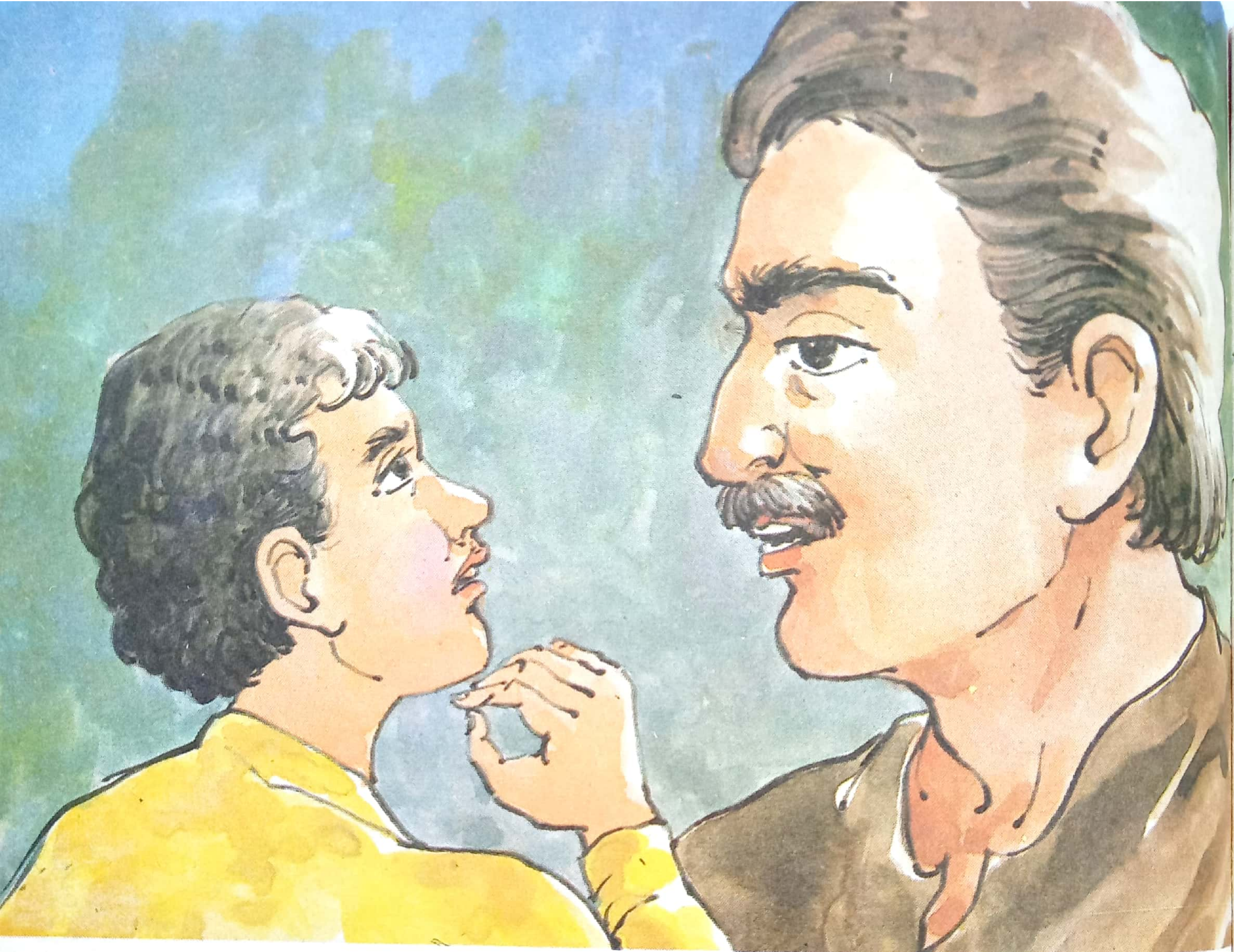
दीनू अपने बदले रूप से खुश था। ●



नंदन एलबम : १००

मां आद्या कात्यायनी

शक्तिपीठ, छतरपुर, नई दिल्ली



किसने पुकारा

—देवेन्द्र कुमार

कोई आवाज सुनकर अखिल की नींद टूट गई। सब तरफ अंधेरा था। उसने सुना—'अखिल, मैं जल्दी ही तुम्हें लेने आऊंगा।' और फिर एक डरावनी हंसी सुनाई दी। अखिल लेटा न रह सका। उठकर कमरे से बाहर निकल आया। घर में सब सो रहे थे। मन हुआ—सबको जगा दे, लेकिन फिर रुक गया। सोचने लगा—'कहीं यह मेरे मन का वहम तो नहीं।'

इधर कई दिनों से ऐसा ही हो रहा था। रात में एकाएक यही आवाज आती और नींद टूट जाती। अखिल बहुत सोचता, पर कुछ समझ न पाता। आवाज हमेशा जंगल की ओर से आती हुई लगती थी।

अखिल के पिता गंगासरन शहर के नामी रईस थे। अच्छा कारोबार था। घर में हर तरह से सुख था। अखिल पढ़ने-लिखने में होशियार था। सबसे अच्छा व्यवहार करता। उसे देखकर माता-पिता खुश हो जाते। गंगासरन पत्नी से कहते—'देख लेना, एक दिन अखिल बहुत बड़ा आदमी बनेगा।' अखिल के मन में भी सचमुच कुछ कर दिखाने की लगन थी। स्वभाव से निडर था। लेकिन इधर कुछ दिनों से परेशान रहने लगा था—उसी रहस्यमय आवाज के कारण।

सुबह अखिल की मां करुणा ने पूछा—"अखिल, क्या बात है ? चेहरा उतरा हुआ क्यों है ? रात में ठीक से नींद नहीं आई क्या ?" अखिल ने मौका देखा, तो मां को रात वाली घटना बता दी। सुनकर करुणा का चेहरा पीला पड़ गया। वह कुछ और कह पातीं, तभी गंगासरन वहां आ गए।

उन्होंने पूछा तो करुणा ने उन्हें सब-कुछ बता दिया ।

सुनते ही गंगासरन का शरीर कांप उठा । वह घबराकर एक तरफ बैठ गए । "क्या हुआ ?"—करुणा ने पूछा । गंगासरन ने आंखें उठाईं, तो उनमें डगमगाते आंसू दिखाई दिए । फिर वह रो पड़े । एक बहुत पुरानी घटना बताने लगे —

"अनेक वर्ष पुरानी बात है—एक दिन मैं घोड़े पर किसी गांव से लौट रहा था । व्यापार के सिलसिले में गया था । मैं सुनसान, ऊबड़खाबड़ रास्ते पर चला आ रहा था । अचानक दलदल में मेरा पैर फंस गया । तभी बिजली कड़की और गड्ढे के किनारे एक आदमी खड़ा दिखाई दिया । भयानक चेहरा था । उसने गरजदार आवाज में कहा—'प्राण बचाना चाहते हो ?'

" 'हां, मुझे दलदल से बाहर निकाल दो भइया ।' मैंने गिड़गिड़ाकर कहा ।

" 'तुम्हें दलदल से बाहर खींच लूंगा, पर मुफ़्त में नहीं—जो मांगूंगा, दोगे न !'—उस भयानक चेहरे वाले आदमी ने कहा ।

" 'हां, सब कुछ दे दूंगा, पर पहले मेरे प्राण बचाओ ।' —इतना कहते ही वह उछलकर मेरे पास आ गया । अगले ही पल मैं गड्ढे से बाहर खड़ा था । मैं हैरान था कि उसने किस जादू के जोर से मुझे बाहर निकाल लिया ।

"तभी उसने कहा—'अब अपना वादा पूरा करो । मुझे वह चीज दो, जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते ।'

"उसकी विचित्र बात सुनकर मैं चक्कर में पड़ गया । मैंने कह दिया—'मैं वह चीज कैसे दूंगा, जिसके बारे में मुझे कुछ पता नहीं ।'

" 'वह सब मुझ पर छोड़ दो । तुम तो बस 'हां' कह दो ।'— उस व्यक्ति ने कहा । मैंने हां कह दी । फिर पूछा—'लेकिन यह तो बताओ, तुम हो कौन ?'

" 'अग्निराक्षस !'—उसने कहा और वहां से अदृश्य हो गया । मैं डरकर वहां से भाग खड़ा हुआ । कुछ दूर मेरा घोड़ा खड़ा मिल गया । उस पर बैठकर मैं घर चला गया । घर में घुसते ही पता चला—बेटे ने जन्म लिया है—यानी तुमने ।"—गंगासरन ने बात खत्म करके अखिल की ओर इशारा किया ।

कमरे में सन्नाटा छा गया ।

"तो क्या वह आवाज अग्निराक्षस की है । और वह सचमुच मुझे लेने आएगा ?"—अखिल ने कहा । पिता ने उसे दिलासा दिया ।

घर के चारों ओर पहरा लगवा दिया गया, पर रात को अखिल को अग्निराक्षस की आवाज रोज सुनाई देती थी—'अखिल, मैं जल्दी ही तुम्हें लेने आऊंगा ।'

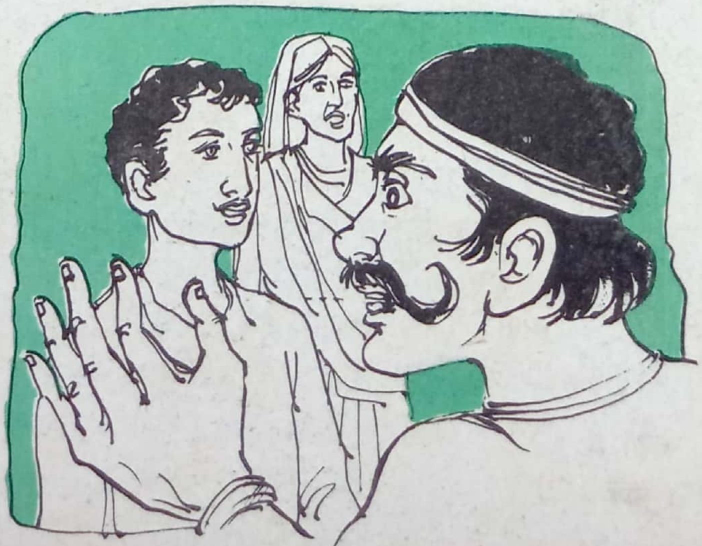
आवाज सुनते ही अखिल की भुजाएं फड़कने लगतीं । मन चाहता—अभी जाकर अग्नि राक्षस से भिड़ जाए । लेकिन वह जानता था कि मां-बाप उसे कभी नहीं जाने देंगे । आखिर एक रात जब वे सो रहे थे, वह घर से चल दिया । कमरे में पत्र लिखकर रख दिया ।

कई दिन सफर में बीत गए । अब वह बहुत थक चुका था । अंधेरा हुआ, तो वह सोच रहा था—'कहीं सिर छिपाने की जगह मिले, तो कुछ देर आराम कर लूं ।' एकाएक पेड़ों के बीच रोशनी की चमक दिखाई दी । 'जरूर कोई मकान होगा । शायद जगह मिल जाए ।' —यह सोचकर वह तेजी से आगे बढ़ा ।

एक बुढ़िया पेड़ के सामने खड़ी पूजा में मग्न थी ।

"अरे भाग जा, चला जा । बंधुल आ गया, तो न जाने क्या कर डाले ।" —बुढ़िया ने थरथराते स्वर में कहा ।

"कौन बंधुल । क्या कर डालेगा ? तुम इतनी डरी हुई क्यों हो ?"— अखिल ने पूछ लिया ।



–"कौन है, किससे बातें कर रही है मां ?"

अखिल ने देखा—कद्दावर बदन, बड़ी-बड़ी मूंछें—हाथ में तलवार ! उसने कहा— "लगता है, तुम्हीं बंधुल हो।"

"हां, मैं बंधुल ! सारी दुनिया कांपती है मुझसे। राजा-महाराजा तक डरते हैं। घने वन में मेरा हुक्म चलता है। चलो, निकालो, क्या है तुम्हारे पास ? मरने को तैयार हो जाओ।" —बंधुल ने तलवार चमकाकर कहा।

नंगी तलवार देखकर भी अखिल डरा नहीं। बोला—"मैं तो मरने ही जा रहा हूं—अग्निराक्षस की खोज में। मैं तलवार से डरने वाला नहीं।"

"अग्निराक्षस ! यह कौन है ?"— बंधुल ने जानना चाहा।

अखिल ने बताया, तो बंधुल ठठाकर हंस पड़ा—"हो हो हो ! यह छोकरा लड़ेगा राक्षस से . . .।"

अखिल ने कहा—" हां, मैं लडूंगा उससे . . . बस ,वह मिल जाए।"

अब बुढ़िया बोल उठी— "बंधुल, यह छोकरा मौत से लड़ने जा रहा है। यह कोई मालदार व्यापारी नहीं, जो तू इसे डरा-धमका कर लूट ले।"

मां की बात सुनकर बंधुल कुछ पल चुप रहा। फिर बोला— "हां, इतने वर्षों में पहली बार ऐसा कोई आया है, जो मुझसे आंख मिला सका है। छोकरा तो हिम्मती है। पर हमें क्या ? इसे मैं नहीं मारूंगा, तो अग्निराक्षस मार देगा।"

"मैं जाऊंगा।"—अखिल ने कहा और उठ खड़ा हुआ। बंधुल की मां ने उसे रोकना चाहा, पर वह रुका नहीं।

आगे रास्ता और भी बीहड़ था, पर अखिल चलता गया। दोपहर को पहाड़ी पार करके दूसरी तरफ पहुंचा, तो एक गुफा नजर आई। उसमें से धुआं निकल रहा था। अंदर आग भी दिखाई दे रही थी।

अखिल ने छेद से देखा—नीचे आग जलती हुई। उस पर बड़े बरतन में न जाने क्या खदबदा रहा था। वहीं एक विशालकाय व्यक्ति बैठा था। वह रह-रहकर उस पात्र में कुछ डालता, तो लपटें कौंधने लगतीं। वह व्यक्ति जोर-से दहाड़ता।

एकाएक अखिल के हाथ से टकराकर एक पत्थर आग में रखे बरतन में जा गिरा। वह व्यक्ति बोला—"कौन—कौन है ?" अखिल के कानों में शब्द गूंजने लगे—'अखिल, मैं जल्दी ही तुम्हें लेने आऊंगा।' हां, यह वही आवाज थी जो रात के समय उसे सुनाई देती थी। अखिल क्रोध में आकर सूराख से पत्थर नीचे फेंकने लगा। साथ में कहता जाता—"हां, मैं हूं अखिल। मैं आ गया अग्निराक्षस। बोलो, क्यों बुला रहे थे मुझे ?"

अग्निराक्षस गुफा से बाहर आकर दहाड़ा और हवा में उछला।

अखिल का बदन कांप उठा, पर फिर हिम्मत बांधकर उसने पत्थर फेंके। पत्थर अग्निराक्षस के चेहरे से टकराए। एक पल को वह लड़खड़ाया, फिर दहाड़ा। तभी पीछे से एक तीर सनसनाता हुआ आया और अग्निराक्षस की पीठ में धंस गया। एक-एक करके कई तीर आए और राक्षस लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

वह दहाड़ रहा था। पहाड़ी हिल रही थी। ढलान पर चट्टानें लुढ़क रही थीं। तभी अखिल को बंधुल नजर आया। वह हाथ में धनुष लिए खड़ा था। अग्निराक्षस की आहें – कराहें धीमी पड़ती जा रही थीं।

"बंधुल, तुम ! कब आए—और क्यों?" —अखिल ने बंधुल से पूछा।

–"मां ने कहा, और मुझे भी लगा कि जीवन में एक काम तो अच्छा करना चाहिए। बस, मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चल दिया। लेकिन इस तरह कि तुम्हें पता न चले। जब मैंने राक्षस को झपटते देखा, तो जहरीले तीर चला दिए। वरना वह तुम्हें मार डालता।"

बंधुल के घर जाकर उसने मां-बेटे से विदा ली, तो वे दोनों रो पड़े। बंधुल की मां ने कहा—"तूने इसे बदल दिया। जो काम कोई न कर सका, वह तूने कर दिखाया। तू धन्य है।"

कुछ देर बाद अखिल मुसकराता हुआ अपने घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर बढ़ रहा था। ●

बच गया गांव

— ए. असफल

उन दिनों उस्ताद 'का कही' और मुल्ला 'बेघरबार' में गाढ़ी छना करती । यह तो लोग कब के भूल चुके थे कि उनमें से एक का नाम रामशंकर नाई और दूसरे का इकबाल अली था । दरअसल, रामशंकर नाई अपने फन में बड़ा माहिर था । सो उसे धीरे-धीरे उस्ताद कहने का रिवाज चल निकला । वह बाल बनाते समय अक्सर लोगों को घटनाएं सुनाया करता । बीच-बीच में टोक देता— "का कही !" सो वह बन गया उस्ताद का कही ।... और इकबाल अली घर-बार छोड़ मसजिद के मदरसे में बस गए । सो वह बन गए मुल्ला बेघरबार ।

मुल्ला जी का अधिकांश समय बच्चों को पढ़ाने में कटता, उस्ताद जी का बाल काटने में । मुल्ला बेघरबार मुसलमान थे और उस्ताद हिंदू, पर वे दोनों इस भेद को भूल चुके थे । घंटों बातों में रमे रहते ।

जब-तब मुल्ला बेघरबार अपने बाल भी छंटवाते । उस्ताद बड़ी लगन और पुलक से बाल बनाते । बालों के बाद नाखून भी । पर पांव के नाखून कटवाते वक्त मुल्ला हमेशा ना-नुकर करते । और उस्ताद कहते— "मुल्ला जी, कर्म ही धर्म है मेरा ।... इसी में सुख मिलता है मुझे ।"

सुनते हैं, उन्हीं दिनों एक रात सिंध में बड़ी भयानक बाढ़ आ गई थी । नदी किनारे का गांव होने के कारण घाट पर तीन-चार नावें बंधी रहती थीं । लोग अपने प्राण हथेली पर लेकर नावों की ओर दौड़ पड़े । जल्दी में जिसको जहां जैसी जगह मिल रही थी, सवार होता जा रहा था ।

नदी का जल-स्तर बड़ी तेजी से बढ़ रहा था । घाट की नावें खोली जाने लगी थीं । मुल्ला जी ने कहा— "नजर दौड़ाओ उस्ताद, गांव में कोई रह तो नहीं गया !"

"मैं देखकर आता हूं ।"— उस्ताद 'का कही' बोले और पलट लिए ।

लोग जल्दी मचा रहे थे । कोलाहल में कुछ भी ठीक से सुनाई न दे रहा था । ऊंचाई पर बसा गांव चांदनी रात में साफ चमक रहा था । मुल्ला जी की नजरें उधर ही लगी थीं । उस्ताद 'का कही' के लौटने में देर हो रही थी । मुल्ला बेघरबार जानते थे कि वह यहां से हटे, तो यह आखिरी नाव भी खोल ले जाएंगे लोग ।

लेकिन लोगों में इतना धीरज कहां था ! वे चीखने लगे— "मरने दो उस्ताद 'का कही' को, पानी बढ़ रहा है..."

— "नाव खोलो ।"

—"मुल्ला जी, आप आ जाइए ।"

पर मुल्ला जी सवार न हुए । टुकुर-टुकुर ताकते रहे । और वह आखिरी नाव भी चली गई । फिर कुछ ही देर में उस्ताद 'का कही' घाट की ओर आते दिखे । उनके कंधे पर एक अपाहिज बुढ़िया थी । यह देख, मुल्ला जी गांव की ओर लौट पड़े । उस्ताद को समझते देर न लगी कि लोग नावें खोल ले गए हैं । वह बोले— "ठीक ही रहा मुल्ला जी, अभी गांव में और भी लोग बचे हैं, जानवर भी..."

और वे वापस गांव लौट आए । कहते हैं, बाढ़ बहुत भयानक थी, पर वह गांव उसकी चपेट में आने से बाल-बाल बच गया था । ●





सपने का सुख

— हरफूल सुईवाल

कंचनपुर के पास वाले गांव में रहता था तेजा। वह बहुत चालाक चोर था। कभी रंगे हाथों नहीं पकड़ा गया। जिद्दी भी बहुत था। जिस चीज की मन में ठान लेता, उसे पाने के लिए आखिरी दम तक कोशिश करता।

उसकी पत्नी नहीं चाहती थी कि तेजा चोरी करे। मगर वह जितना उसे मना करती, तेजा उतनी ही ज्यादा चोरियां करने की जिद करता।

एक रात तेजा ने सपना देखा, वह कंचनपुर के जमींदार से भी अधिक धनी व्यक्ति बन गया है। लोग अब उसका जमींदार से अधिक सम्मान करने लगे हैं। इतना ही नहीं, खुद जमींदार भी उसके साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने लगा है। जमींदार के यहां वह नहीं जाता। बल्कि स्वयं जमींदार उसके यहां चलकर आता है।

सुबह तेजा की आंख खुली, तो उसे सपने की बात का सुख बहुत सुहाना लगा। मगर सपने की बात सुनकर उसकी पत्नी जोर से हंस पड़ी— "लगता है, आपकी बुद्धि कमजोर पड़ गई है। तभी तो सपने के सुख को सच समझ बैठे हैं। कहां तो जमींदार और कहां आप एक चोर ! ... मैं तो कहती हूं कि यह बात भूल जाओ। आप तो जमींदार जैसी एक घोड़ा-गाड़ी भी नहीं ला सकते अपनी सवारी के लिए।"

पत्नी की बात तेजा को बहुत बुरी लगी। वह अपने इस अपमान से तिलमिलाता हुआ बोला— "तो तुम भी सुन लो। मैं कल ही तुम्हें घोड़ा-गाड़ी लाकर दिखा दूंगा।"

— "और नहीं दिखा सके तो..."

— "तो मैं सेंध लगाकर चोरी करना ही छोड़ दूंगा।"

बस, तेजा ने योजना बनाई कि वह आज ही रात कंचनपुर के सेठ हीरानंद के यहां चोरी करने जाएगा और बहुत-सा धन चुराकर लाएगा। ताकि जमींदार से भी अच्छी घोड़ा-गाड़ी खरीद सके। यह सोचकर वह उसी समय कंचनपुर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक व्यक्ति मिला। दोनों साथ-साथ चलने लगे। तेजा ने उससे पूछा— "कहां जाना है भाई ?"

—"कंचनपुर... और तुझे ?"

— "मैं भी वहीं चल रहा हूं। अच्छा रहा। दोनों साथ-साथ ही चलेंगे।"

जब वे कंचनपुर के निकट पहुंचे, तो रास्ते में देवी का एक मंदिर आया। तेजा बोला— "ठहरो भाई, मैं देवी मां का आशीर्वाद ले आऊं।" कहकर तेजा मंदिर में चला गया।

उस अजनबी ने सोचा— 'जरा देखूं तो, यह आदमी कैसा आशीर्वाद चाहता है ?' सो वह भी चुपके से तेजा के पीछे मंदिर में घुस गया। एक ओर खड़ा हो, तेजा की बातें सुनने लगा।

तेजा दोनों हाथ जोड़, आंखें बंद करके कह रहा था— "देवी मां, मैं आज रात सेठ हीरानंद के यहां चोरी करने जा रहा हूं। मुझे सफल होने का वरदान दो।" उसकी बात सुन, वह व्यक्ति चौंक उठा।

तेजा के लौटने पर उस व्यक्ति ने भी कहा—"जरा तुम भी ठहरो भाई। मैं भी अपनी सफलता के लिए देवी से आशीर्वाद ले आऊं।" कहकर वह भी मंदिर में चला गया। पीछे से तेजा ने भी सोचा— 'जरा सुनूं तो भला, इसकी क्या इच्छा है ?' बस, वह भी चुपके से मंदिर में पहुंच गया। ओट में खड़ा हो, सब देखने-सुनने लगा।

वह व्यक्ति कह रहा था— "देवी मां, मैं भी अपने साथी की तरह सेठ हीरानंद के यहां चोरी करने जा रहा हूं। मुझे भी सफलता का आशीर्वाद दो।" उसकी बात सुनकर तेजा भी चौंक उठा।

अब वे दोनों ही एक-दूसरे को शक की निगाह से देखने लगे। तेजा से नहीं रहा गया, तो पूछ बैठा— "जरा बताओ तो सही कि तुम कंचनपुर में क्या करते हो ?"

उस व्यक्ति ने सोचा, अब छिपाना कैसा ? दोनों एक ही मतलब से कंचनपुर जा रहे हैं, तो बात साफ ही हो जानी चाहिए। वह बोला— "करता तो कुछ नहीं, पर करने जा रहा हूं।"

— "क्या मतलब ?"

— "वही जो तुम करने जा रहे हो।"

— "तो क्या तुम भी सेठ हीरानंद के यहां जा रहे हो ?"

—"शायद पहचाना नहीं मुझे... मैं मंगल हूं, तुम्हारी ही तरह एक चोर।"

सुनकर तेजा ने बस इतना ही कहा— "चलो भाई... एक से दो भले।"

कंचनपुर पहुंचकर वे दोनों एक साथ एक सराय में ठहर गए। फिर रात होने का इंतजार करने लगे। आधी रात को वे दोनों उठकर सराय से बाहर निकल आए। मौका पाकर दोनों सेठ हीरानंद की हवेली में घुस गए। दोनों ने जी भरकर धन बटोरा और गठरियां बांधकर वहां से खिसक लिए।

सुबह होते-होते वे दोनों दूर एक जंगल में पहुंच गए। अपनी-अपनी गठरी खोलकर उन्होंने अपना-अपना माल देखा। माल देखकर दोनों के ही मन में लालच और बेईमानी आ गई। तेजा ने सोचा— 'किसी तरह मंगल को रास्ते से हटा, मैं ही यह सारा माल हजम कर लूं, तो मजा आ जाएगा। फिर तो एक साथ दो-दो घोड़ा-गाड़ियां खरीद लूंगा।'

उधर मंगल के मन में भी यही बात उठी कि यदि किसी तरह तेजा को धोखा देकर यह सारा माल मैं हड़प लूं, तो एक साथ ही मालामाल हो जाऊंगा।

पास में ही एक पहाड़ी नाला था। दोनों उसमें हाथ-मुंह धोकर थकान मिटाने के बहाने वहीं बैठ गए। तेजा मंगल को रास्ते से हटाने का मौका ढूंढ़ने लगा।

कुछ सोचकर वह मंगल से बोला— "तुम यहीं ठहरो। मुझे शक है, उधर कोई हमारी बात सुन रहा है। अभी पता करके आता हूं।" यह बहाना बनाकर तेजा उससे दूर चला गया। एकांत में छिपकर उसने झट-से अपनी कमर में बंधा छुरा निकाला और अपने कुर्ते की जेब में रख लिया। वह सोचता था, मौका पाते ही वह मंगल का काम तमाम कर



देगा।

उधर अकेले में बैठे मंगल ने सोचा— 'कहीं कोई आ ही न जाए। क्यों न मैं इस सारे धन को यहीं छिपा दूं ?' झट से उसने सोने-चांदी के गहनों से भरी दोनों गठरियां उठाईं और नदी के किनारे पानी में फेंक दीं। फिर सोचा— 'तेजा को धोखा देने के लिए क्यों न मैं घास-फूस और कंकड़-पत्थर से वैसी ही गठरियां बांधकर यहां रख दूं। ताकि वह आए, तो धोखे में रहे। फिर मैं किसी प्रकार तेजा को खत्म करके दोनों गठरियां नदी से निकालकर अपने घर चल पड़ूं।' उसने ऐसा ही किया।

तेजा वापस लौटा और मंगल के पास बैठ गया। मंगल ने पूछा— "कौन था ?"

"दो लोग थे। उधर देखो... वे जा रहे हैं।"— तेजा ने झूठ बोला।

ज्यों ही मंगल ने गर्दन घुमाकर उधर देखा, झट से तेजा ने छुरा निकालने के लिए जेब में हाथ डाला। मगर छुरा जेब में था ही नहीं। जैसे ही तेजा पास बैठा, मंगल उसे निकाल चुका था। बौखलाकर तेजा ने मंगल को नाले में धक्का दे दिया। मंगल डुबकियां खाता तेज बहाव में बहने लगा। तेजा ने फुर्ती से गठरियां उठाईं और अपने गांव की ओर दौड़ पड़ा।

घर पहुंचकर उसने दोनों गठरियां पत्नी के सामने पटककर कहा— "देखो, मैं कितना धन लाया हूं। अब यदि मैं चाहूं, तो दो-दो घोड़ा-गाड़ियां लाकर तुम्हें दिखा सकता हूं।" फिर वह अपनी विजय पर ठहाका मारकर हंस पड़ा।

पत्नी कुछ नहीं बोली। चुपचाप गठरियां खोलने लगी। ज्यों ही उसने गठरियों की गांठ खोली, उनमें से घास-फूस के साथ छोटे कंकड़-पत्थर निकलकर बिखर गए। उन्हें देख, वह हंस पड़ी। तेजा अवाक-सा खड़ा,हक्का-बक्का रह गया। जब उसे कुछ होश आया, तो वह बोला— "लगता है, अब मेरे चोरी करने के दिन खत्म हो गए हैं। तभी तो मैं आज इतना धन लाकर भी ठगा गया हूं।" उसने

सारी बातें पत्नी को सुना डालीं और भविष्य में चोरी-ठगी दोनों से तोबा कर ली। ●

खोया-पाया

—कविराज ओमप्रकाश

सुहावना मौसम और अवकाश का दिन। ऐसे में तारक को बस नदी-स्नान की सूझती है। उसने मित्रों को बुलाया और थोड़ी ही देर में घाट पर जा पहुंचा। वहां बहुत भीड़ थी।

तारक और उसके मित्र काफी देर तक स्नान का आनंद लेते रहे। फिर कपड़े बदलकर घाट से बाहर आने लगे। तारक ने देखा— एक तरफ काफी लोग खड़े हैं। वह कुछ उत्सुक हो उठा। एकाएक तेज हवा का झोंका आया। तारक के सिर से टोपी उड़कर भीड़ के बीच में जा गिरी।

वह हैरान हो गया। फिर दौड़कर भीड़ के बीच चला गया। देखा, लोगों के बीच गेरुए वस्त्रधारी एक आदमी बैठा है। तारक की टोपी उन्हीं के पास जमीन पर पड़ी थी। तारक को देखकर वह व्यक्ति हंस पड़ा। तारक ने नमस्कार किया। हवा में शब्द गूंज रहे थे— 'साधु महाराज की जय !'

साधु ने टोपी उठाकर तारक की तरफ बढ़ा दी। फिर बोले— "तारक, तू मेरे शिष्य का पुत्र है। कभी समय निकालकर आना।" तारक ने टोपी ली और चला आया। रास्ते भर एक बात दिमाग में गूंजती रही— 'आखिर साधु ने मेरा नाम कैसे जान लिया ?' घर पहुंचकर पत्नी को यह घटना बताई। पत्नी ने कहा— "हां, बात तो आश्चर्य में डालने वाली है। पर पहुंचे हुए साधु-संतों के लिए कुछ भी असंभव नहीं। एक दिन मुझे भी उनके दर्शन के लिए ले चलना।"

"लेकिन मैंने तो आज तक कोई चमत्कार नहीं देखा।"— तारक ने कह दिया।

अब तारक को ध्यान आया, उसने साधु बाबा से उनका पता-ठिकाना तो पूछा ही नहीं था ! फिर भला कैसे ले जाएगा पत्नी को उनके पास ! लेकिन यह बात उसने पत्नी से नहीं कही।

इसके दो दिन बाद की बात— वह घर से दुकान जाने के लिए निकला। गली में जा रहा था, तभी एक

व्यक्ति उसके सामने से गुजरा और पास के मकान में घुस गया। तारक ठगा-सा देखता रह गया। उस व्यक्ति की सूरत तारक के पिता से हूबहू मिलती थी। एक क्षण को मन में आया— 'पिता जी इस मकान में क्या करने गए हैं ?' फिर अपनी कल्पना पर स्वयं ही मुसकरा दिया। तारक के पिता को मरे तीन वर्ष हो रहे थे। वह अपने स्थान पर ठिठका हुआ खड़ा रहा। फिर उसके कदम जैसे आप से आप उस मकान की ओर बढ़ चले। अंदर जाकर तारक ने देखा— वही नदी वाले साधु बाबा आसन पर बैठे थे। कमरे में और कोई नहीं था।

तारक को देखकर साधु हंस पड़े। बोले— "मैं जानता था, तू एक दिन अवश्य आएगा। मेरे पास बैठ।"

तारक बैठ गया। फिर उसने कुछ देर पहले वाली घटना कह सुनाई। पूछने लगा— "क्या यहां कोई आया था ?"

—"नहीं, तेरे अतिरिक्त कोई नहीं आया। लेकिन तेरे पिता मेरे शिष्य थे। उनका शरीर इस दुनिया में भले ही न हो, पर आत्मा तो है। इस लोक और परलोक से हमारे सम्बंध बने रहते हैं। पर तू इस सब की चिंता छोड़। बस, इतना समझ ले कि तुझे यहां आना ही पड़ गया।"

साधु बाबा की बातों का तारक के मन पर गहरा असर पड़ा। वह काफी देर उनके सामने बैठा रहा। इसी बीच कई लोग उनके दर्शन के लिए आए। किसी ने उनके चरणों में रुपए चढ़ाए, तो कोई फल लेकर आया। साधु के पास एक बड़ा संदूक रखा था। वह हर वस्तु उसी में डाल देते।

यह देखकर तारक को आश्चर्य हुआ। समझ न पाया कि बाबा ऐसा क्यों करते हैं। आखिर चलने से पहले उसने पूछ ही लिया। बाबा बोले— "खोलकर देख ले संदूक।"

तारक कुछ पल हिचकिचाया। फिर उसने संदूक का ढक्कन उठाकर देखा। वह चौंक पड़ा। संदूक एकदम खाली था। तभी बाबा की आवाज सुनाई दी— "तारक, संदूक बंद कर दे। मैं अपने पास कुछ नहीं रखता। जिसे आवश्यकता होती है, उसे दे देता हूं।"

"लेकिन यहां तो कोई आया नहीं। तब आपने संदूक में रखे रुपए-पैसे तथा सामान किसे दिया ?"— तारक ने जानना चाहा। वह परेशान हो उठा था।

बाबा हंसने लगे। उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। तारक ने एकाएक पूछ लिया— "क्या आप मुझे भी कुछ दे सकते हैं ?"

—"हां, हां, जब लगेगा सचमुच तुझे जरूरत है, तो दे दूंगा।"

"अगर मैं आज आपसे मांगू तो ?"— तारक ने पूछा।

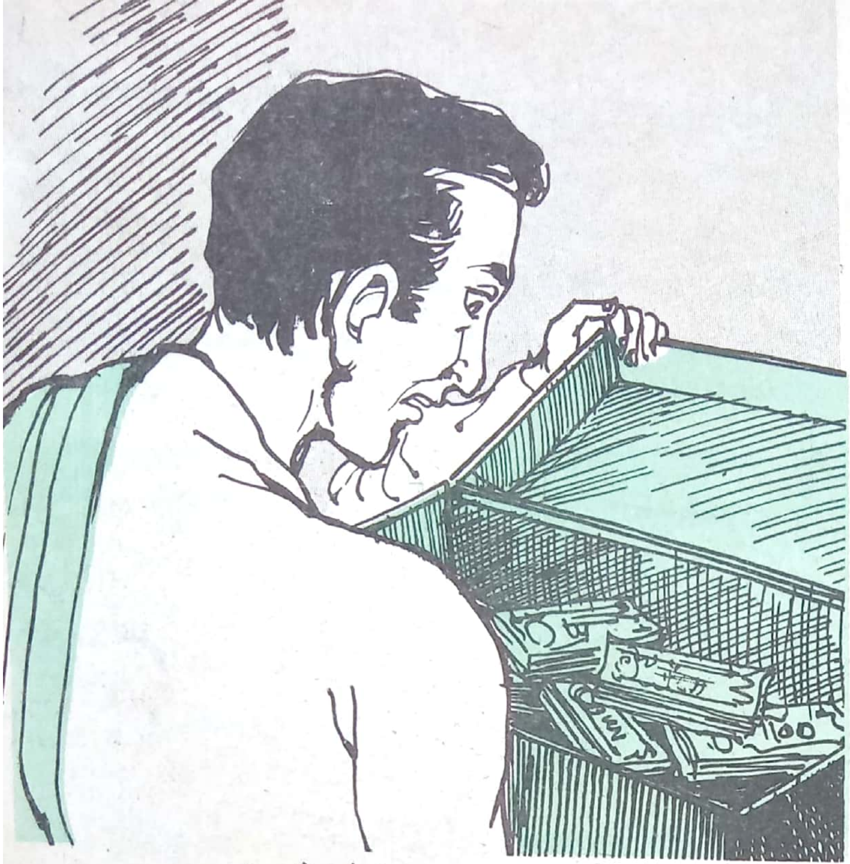
बाबा गंभीर हो गए। उन्होंने कहा— "क्या तू मेरी परीक्षा लेना चाहता है ? तुझे आज पैसे की आवश्यकता नहीं, यह मुझे मालूम है।"

"आप मुझे कुछ रुपए दीजिए।"— तारक ने जिद्दी स्वर में कहा।

"अच्छा, संदूक में से ले ले।"— बाबा ने कह दिया।

तारक ने संदूक का ढक्कन उठाया। वह फिर चौंक





पड़ा । उसमें सौ-सौ के कई नोट पड़े थे । उसे अच्छी तरह याद था कि कुछ देर पहले तक संदूक एकदम खाली था । और इस बीच कोई व्यक्ति कमरे में आया भी नहीं था । फिर ये नोट कहां से आए !

वह समझ न पाया, पर बाबा के कहने पर सारे नोट उठा लिए । ये बीस थे— यानी दो हजार रुपए ।

बाबा ने कहा— ''तुझे आवश्यकता नहीं है । इसलिए ये रुपए तेरे लिए नहीं हैं । पर तू जिद कर रहा है, इसलिए ले जा ।''

''मैं ये रुपए आपको लौटा दूंगा ।''— तारक ने कहा ।

''उसकी चिंता न कर । जा, ईश्वर तेरा कल्याण करें ।''— कहकर साधु बाबा ने आंखें मूंद लीं । कमरे में सन्नाटा छा गया । सोच-विचार में डूबा तारक उस मकान से बाहर आ गया । उसका मन कह रहा था— कहीं कुछ गड़बड़ है । साधु बाबा कोई तांत्रिक या जादूगर हैं । और शायद ये नोट असली न हों । उसने रास्ते में रुककर एक-एक नोट देखा, पर उनमें कुछ भी असामान्य नहीं था । नोट एकदम ठीक थे ।

चलते-चलते तारक के मन में आया । नोटों की जांच करनी चाहिए । वह साड़ियों की एक दुकान में घुस गया । दुकानदार को साधु बाबा से मिले दो हजार रुपए दे दिए और साड़ी का पैकेट लेकर चलने लगा । तभी दुकानदार ने पुकारा— ''रुकिए भाई साहब, साड़ी का भुगतान तो करते जाइए ।''

''क्या मतलब ! मैंने अभी-अभी आपको दो हजार रुपए दिए हैं । सौ-सौ के बीस नोट । और कैसा भुगतान मांग रहे हैं आप ?''— तारक ने गुस्से में कहा ।

दुकानदार ने कहा— ''अभी आपने दाम नहीं दिए । जेब में हाथ जरूर डाला था, पर रुपए नहीं निकाले । आप सुबह-सुबह पहले ग्राहक हैं । मैं क्या झूठ बोलूंगा ! आप मेरा गल्ला देख लीजिए । एकदम खाली है ।'' यह कहते हुए उसने रुपयों वाली पेटी उठाकर दिखा दी । उसमें पांच रुपए के दो नोट थे, बाकी एकदम खाली थी ।

तारक को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था । लेकिन अधिक बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं था । उसने साड़ी का पैकेट वापस कर दिया । बोला— ''हो सकता है, रुपए कहीं गिर गए हों । मैं थोड़ी देर में फिर आऊंगा । दाम देकर साड़ी ले जाऊंगा ।''

तारक तुरंत फिर साधु बाबा के पास जा पहुंचा । इस समय भी अपने कमरे में वह अकेले बैठे मिले । तारक ने झट कहा— ''महाराज, रुपए तो गायब हो गए ।'' और जो कुछ घटा था, कह सुनाया ।

सुनकर साधु बाबा जोर से ठठाकर हंसे । बोले— ''मैंने तो पहले ही कहा था कि तुझे आवश्यकता नहीं है । रुपए तेरे लिए नहीं थे, इसलिए तेरे पास नहीं रहे ।''

''लेकिन रुपए गए कहां ? मैंने अपने हाथ से दुकानदार को गिनकर दिए थे ।''— तारक बोला ।

साधु महाराज कुछ कहते, इससे पहले ही एक आदमी तेजी से अंदर घुसा और बाबा के चरण छू लिए ।

''कहो रामदेव ?''— बाबा ने पूछा ।

''यह तो चमत्कार हो गया महाराज । आपने बचा लिया मुझे ।''— कहकर वह चरण पकड़कर बैठ गया और अपनी जेब से सौ-सौ के कई नोट बाहर डाल दिए । बोला— ''बाबा, आप तो जानते ही हैं ।

मैं आजकल बहुत परेशान हूं। पत्नी बीमार है और घर में एक पैसा नहीं। मैं बाग में बैठा यही चिंता कर रहा था। उठने लगा, तो देखा पास में सौ-सौ के कई नोट पड़े हैं। मैंने गिने – बीस थे।"

"बीस !"— तारक के मुंह से निकला।

"एक बार मन ने कहा – पराई रकम नहीं उठानी चाहिए, पर ज्यादा देर न रोक सका अपने को। अब आप बताइए, इनका क्या करूं ? ये मेरे तो हैं नहीं।"— कहकर रामदेव बाबा की ओर देखने लगा।

साधु बाबा ने रुपए उठाकर रामदेव को थमा दिए। बोले— "रामदेव, ये तेरे ही हैं। इनसे अपनी पत्नी का इलाज कराना। जा, ईश्वर तेरा कल्याण करें।"

रामदेव ने बाबा के चरण छुए और रुपए लेकर चला गया।

तारक ने धीरे से कहा— "महाराज, ये सौ-सौ के बीस नोट थे – दो हजार रुपए।"

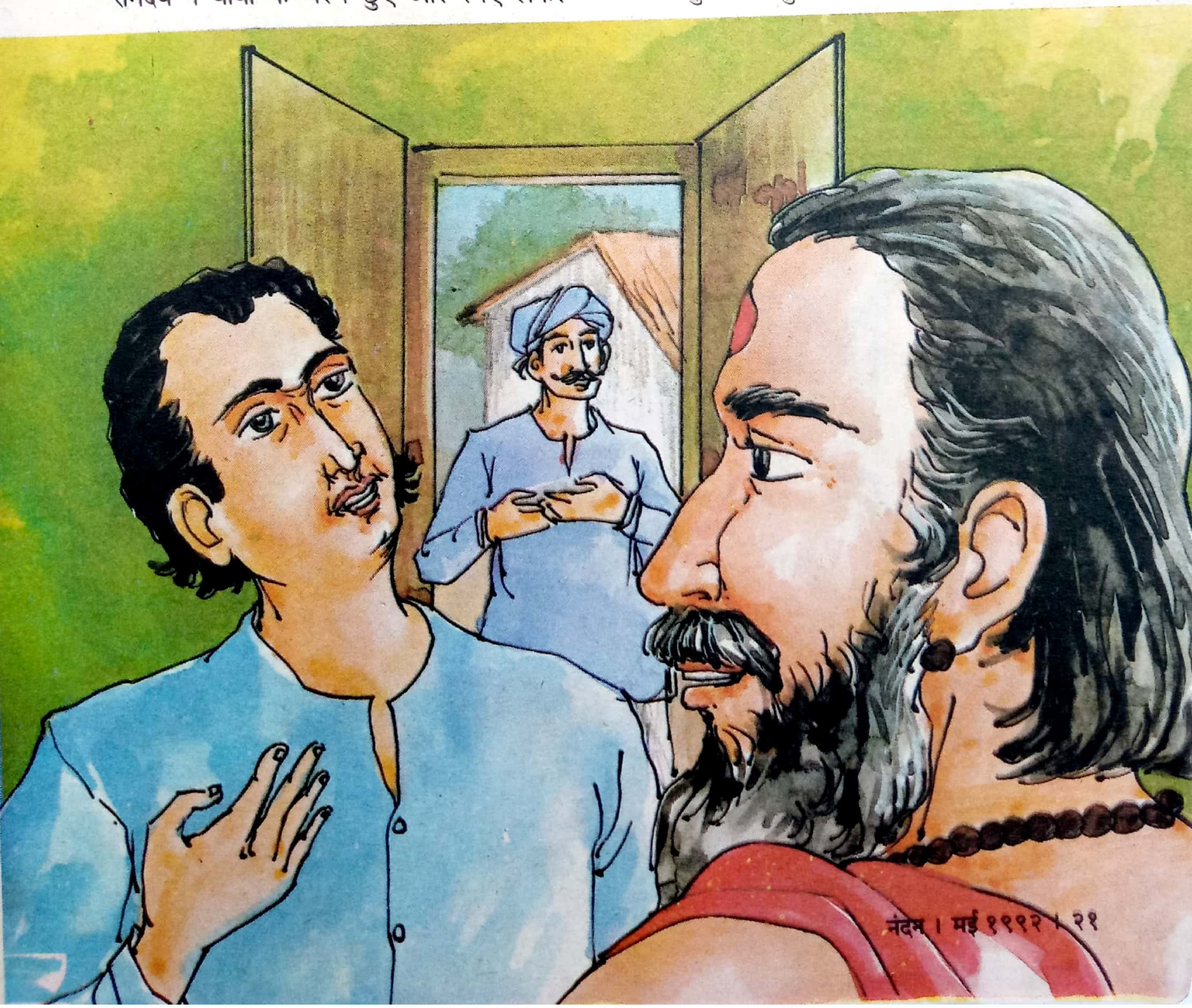
–"हां, ये वही थे, जो तुमने दुकानदार को दिए थे। मैंने कहा था न, ये रुपए तेरे लिए नहीं हैं। पर तू नहीं माना ! शायद तू एक बार और मेरी परीक्षा लेना चाहता है।"

"बाबा, क्षमा करें। मुझसे भूल हुई।"— कहकर तारक ने अपना मस्तक उनके चरणों पर टिका दिया।

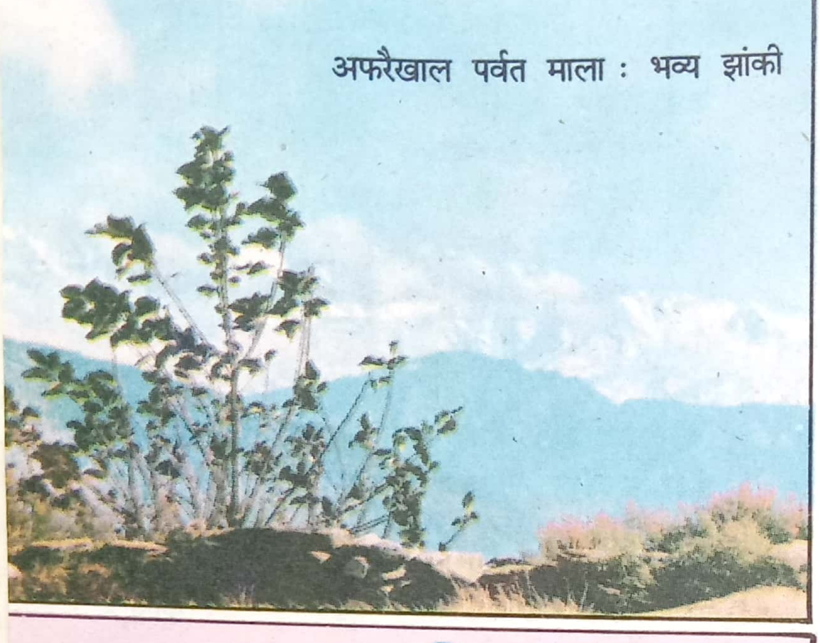
"तुझे कुछ चाहिए तो बता ?"— बाबा पूछ रहे थे।

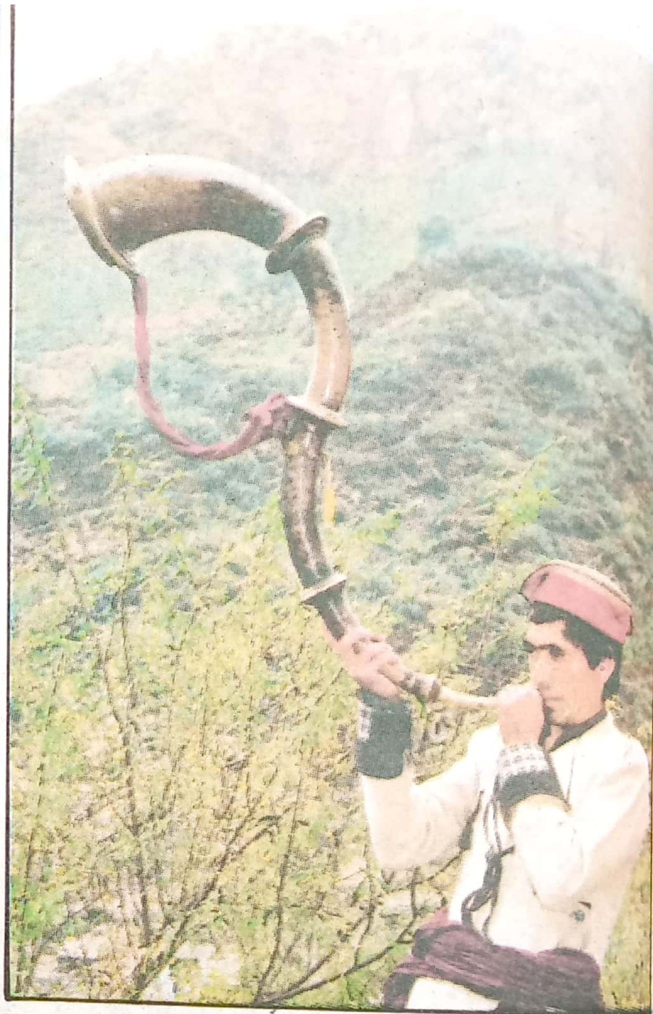
"बाबा, मुझे आशीर्वाद दीजिए।"— तारक बोला। उसकी आंखों में आंसू भर आए थे।

साधु बाबा मुसकरा रहे थे। ●



अफरैखाल पर्वत माला : भव्य झांकी





हरा-भरा हिमालय
कितना अनजाना

पर्वत की बेटी ▼

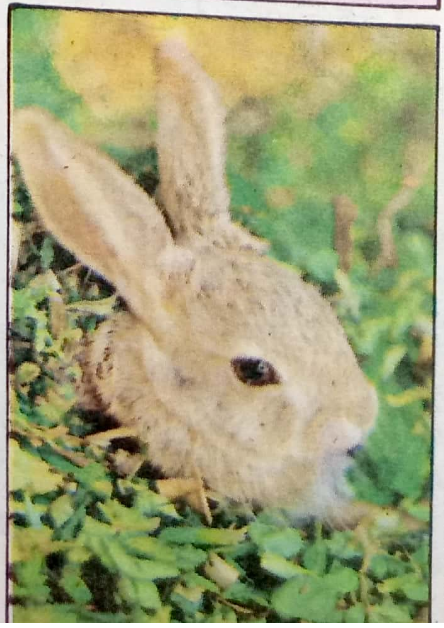


▲ लोकप्रिय वाद्य तुरही

रोहतांग के पार :
कोकसर का झरना ▶

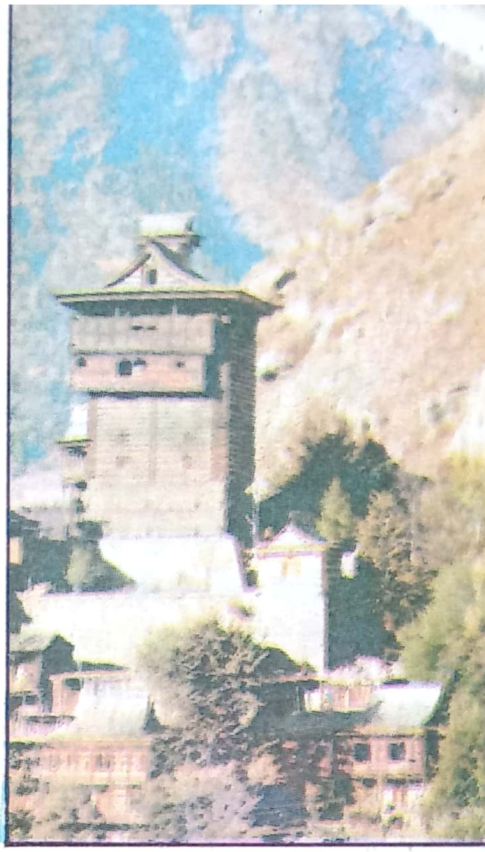


जंगली खरगोश : कितना प्यारा ▼



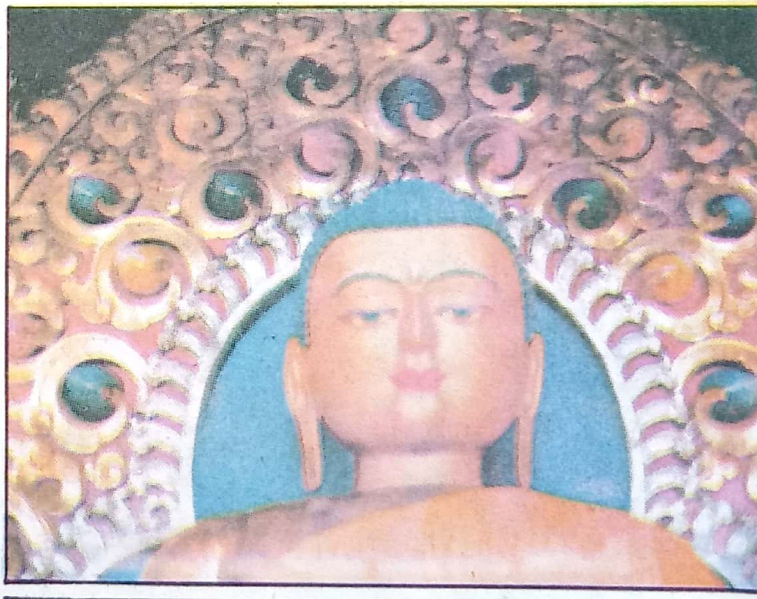


केदारनाथ मंदिर ▲



सांगला घाटी में कामरू का किला ▶

बौद्ध मंदिर, धर्मशाला में भगवान बुद्ध ▶



पीली लकड़ी भीनी गंध : देवदार ▼



चित्र : राजकिशन नैन, राजेन्द्रकुमार वधवा, देबब्रत बनर्जी

सौगात हिमालय की : सेब ▼



मछली और मोती

— स्काट ओ 'डैल

मांता डियाब्लो-एक दैत्याकार मछली। रात में अलाव के इर्द-गिर्द बैठे लोग बच्चों को उसकी कहानियां सुनाते हैं।

लापाज नगर में हमारा मोतियों का कारोबार था। मेरे पिता मोतियों के प्रसिद्ध व्यापारी थे। वह अपने समुद्री बेड़े के साथ मोती निकालने जाते रहते थे।

एक बार पिता यात्रा पर जा रहे थे, तो मैंने उनसे साथ चलने को कहा। उन्होंने मुझे समझाया—

"अगर हम दोनों तूफान की चपेट में आ गए, तो परिवार का क्या होगा? हमारा मोतियों का व्यापार समाप्त हो जाएगा।"

पर मेरे बार-बार जिद करने पर आखिर उन्होंने हां कह दी।

हमारे बेड़े में पांच बड़ी नावें थीं। मेरी नाव में मेरे पिता के अलावा एक और आदमी सेविलूनो था। उससे अच्छा दूसरा कोई गोताखोर नहीं था।

हम सागर में उस स्थान पर पहुंच गए, जहां सीपियां मिलती थीं। पिता जी ने बताया कि किस तरह टोकरी को ऊपर खींचना चाहिए तथा सीपियों को नाव में किस जगह पर रखना चाहिए।



इसी बीच उन्होंने पानी में गोता लगाया। पानी इतना साफ था कि नीचे चट्टानें दिखाई दे रही थीं। पिता जी सीपियों को चट्टानों से अलग कर रहे थे। जब सीपियों से टोकरी भर जाती, तो मैं रस्से की सहायता से उसे ऊपर नाव में खींच लेता। अंधेरा होने पर हम घर की ओर चल पड़े। मैं खुश था।

एक दिन सोतो नामक व्यक्ति मेरे पास आया। वह हर तीसरे महीने मोती बेचने आया करता था। उसने कपड़े में लिपटा एक मोती मुझे निकाल कर दिया। मैंने उससे कहा— "जहां से तुम ये मोती लाते हो, उस जगह पर मुझे ले चलो। मैं स्वयं गोता लगाऊंगा और मोती निकालूंगा।"

"पर तुम गोताखोर नहीं हो।"— उसने मुझसे कहा।

"तुम मुझे गोता लगाना सिखा सकते हो।" —मैंने आग्रह किया—"मेरे पिता मोती निकालने गए हैं। लौटने में कई दिन लग सकते हैं। इस बीच मैं वापस आ जाऊंगा। मुझे एक बड़ा मोती चाहिए।"

मेरे बार-बार कहने पर सोतो मुझे अपने साथ ले गया।

वह एक खारी झील थी, जिसमें समुद्र का पानी इकट्ठा था। हमारी नाव धीरे-धीरे झील को पार कर रही थी। सोतो ने मुझे बताया— "झील में बिल्कुल खामोश रहना चाहिए। आवाज सुनकर मांता डियाब्लो क्रोधित हो सकती है।"

"क्या वह इस झील में रहती है?"—मैंने पूछा।

— "हां, यह विशाल मछली चट्टानों के पास ही एक बड़ी गुफा में रहती है।"

सोतो ने मुझे गोता लगाने का तरीका सिखाया। शुरू में हमें साधारण मोतियों के अलावा कोई बड़ा मोती न मिला। रात को मैं सोतो की झोंपड़ी में रहता था। एक दिन मैं अकेला ही मोती निकालने गया। मुझे एक बड़े मोती की तलाश थी। लोग उसे 'स्वर्ग का मोती' कहते थे। सोतो ने बताया कि वह मोती बड़ी गुफा में मिल सकता है, जहां भयानक मांता मछली का घर है। मैंने अपनी नाव का रुख उधर ही कर दिया।

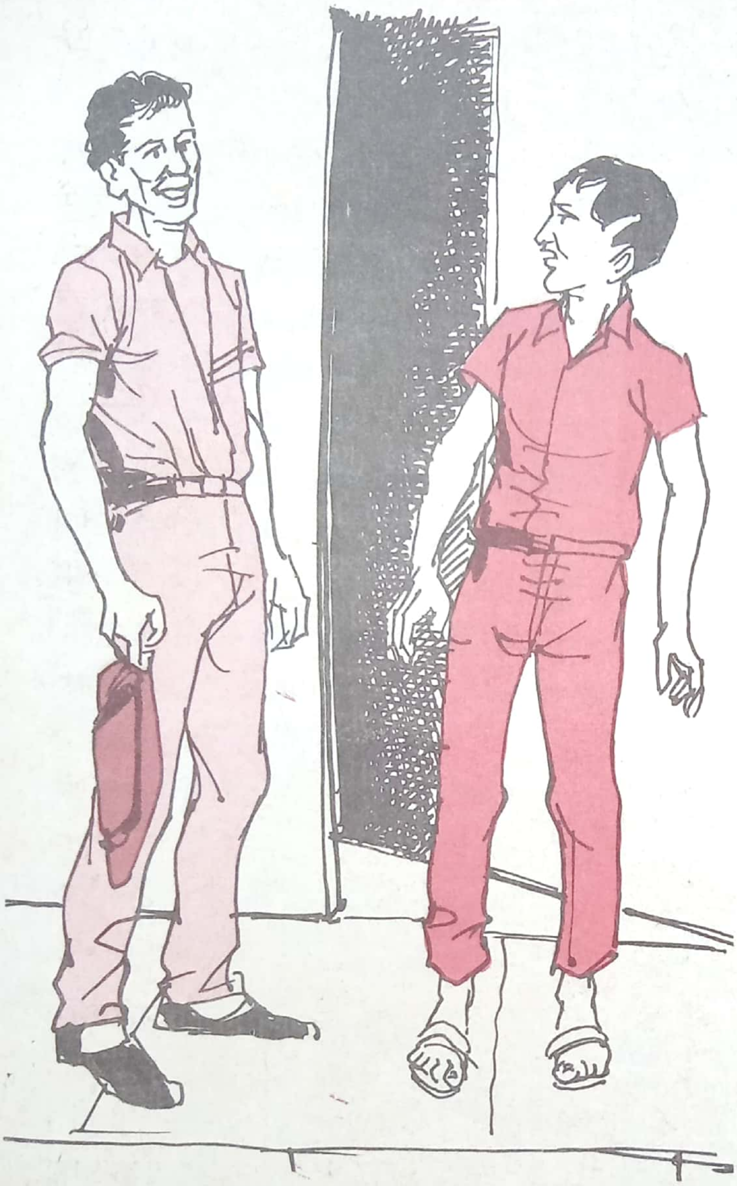
गुफा में जाने का रास्ता एक ऊंची चट्टान के नीचे छिपा हुआ था। सूरज निकलने पर मैं गुफा में दाखिल हुआ। तैरता हुआ आगे बढ़ा। नीचे बड़ी-बड़ी सीपियां दिखाई दे रही थीं। मैंने चाकू निकाला और सीपियों को चट्टानों से अलग करने लगा।

सांस लेने के लिए मुझे ऊपर आना पड़ा। एक बड़ी सीपी को चट्टान से अलग करने के लिए कई बार गोते लगाने पड़े। पर अंत में मैं सफल हो गया। मैं नाव लेकर किनारे की ओर बढ़ा। वहां सोतो खड़ा था। वह मांता डियाब्लो के डर से थर-थर कांप रहा था।

मैंने चाकू से सीपी को बड़ी कठिनाई से खोला। मुझे अंदर तीन छोटे-छोटे मोती मिले। तभी अचानक मेरे हाथ ने किसी सख्त चीज को छुआ। उसे मैंने बाहर निकाला। वह एक मोती था— बहुत बड़ा।



स्काट ओ'डेल (१९०३)—लास एंजलेस (अमरीका) में जन्म। प्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार। 'आईलैंड आफ द ब्लू डाल्फिंस', 'लैंड आफ द सन', 'हिल आफ द हॉक' प्रमुख पुस्तकें हैं। यहां उनके लोकप्रिय उपन्यास 'द ब्लैक पर्ल' की संक्षिप्त कथा दी जा रही है। —सं.



जब मैंने मोती को रोशनी में देखा, तो वह अद्भुत रूप से चमकने लगा। आखिर मुझे स्वर्ग का मोती मिल ही गया था।

अब हम नगर की ओर लौट चले। रास्ते में सोतो मुझसे कहता रहा— "वह मोती उस मछली का है, उसे लौटा दो।" पर मैंने उसकी बात पर ध्यान न दिया।

मुझे बड़ा मोती मिला है— यह खबर सारे नगर में फैल चुकी थी। बड़े और अनोखे मोती को देखने के लिए लोग शोर मचा रहे थे। इसी बीच मेरे पिता समुद्री यात्रा से लौट आए। वह समझ नहीं पा रहे थे कि इतना बड़ा मोती मेरे पास कहां से आया। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया।

कुछ दिन बाद मोतियों के कई व्यापारी हमारे घर में इकट्ठा हुए। वे इस मोती को खरीदना चाहते थे। मेरे पिता ने मोती की भारी कीमत मांगी। कोई भी व्यक्ति इतनी बड़ी कीमत नहीं दे सका। अंत में पिता ने कहा— "जाओ और फादर गालार्डो को जल्दी आने के लिए कहो।"

फादर गालार्डो हमारे घर पहुंचे, तो पिता जी ने उनसे कहा— "मोती को मैं और मेरा बेटा मैडोना को भेंट करते हैं। इसे स्वीकार कीजिए।" फादर ने हमें आशीर्वाद दिया। वह मोती को ले गए। अब वह मोती पूरे नगर का था। गिरजे में जाकर कोई भी उसे देख सकता था।

इसी बीच सेविल्नो मुझे मिल गया। वह मुझसे बार-बार जगह के बारे में पूछ रहा था, जहां मुझे मोती मिला था। अगली सुबह जहाजी बेड़ा यात्रा पर रवाना हुआ। दोपहर बाद आकाश में बादल घिरने लगे। मां को चिंता हुई। पिता भी यात्रा पर थे। हवा का शोर ऐसा था, जैसे सैकड़ों समुद्री पक्षी चिल्ला रहे हों। भयंकर तूफान आ गया था। उसमें पिता जी और उनके साथी डूब गए। हमारा परिवार बर्बाद हो गया।

एक दिन चर्च के बाहर मुझे सोतो मिला। वह बोला— "मैंने पहले भी कहा था कि यह मोती मांता डियाब्लो का है। उसे लौटा दो।"

मेरा मन उदास था। मैं घर जाने की बजाय चर्च में चला गया। मैडोना के सम्मुख घुटने टेककर बैठ गया और आंखें बंद कर लीं। मेरी आंखों के सामने चट्टानों पर टूटे जहाजों के टुकड़े पड़े थे और मृत पिता का शरीर। कानों में सोतो के शब्द गूंज रहे थे। जब मैंने आंखें खोलीं, तो मुझे लगा—मैडोना मोती मुझे देना चाहती हैं। मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई। वहां कोई नहीं था। मैंने मोती मैडोना के हाथ से लेकर अपनी कमीज में छिपा लिया। पर सेविल्नो ने मुझे मोती लेते

हुए देख लिया था ।

शाम को मैं मोती लेकर समुद्र की ओर बढ़ा । किनारे पर एक नाव खड़ी थी । मैंने नाव से झील पर जाने का निर्णय किया । मैं मांता डियाब्लो को यह मोती वापस करना चाहता था ।

जब मैं झील पर पहुंचा, तो पीछे से एक आवाज सुनी । मुड़कर देखा, तो वह सेविल्नो था । वह मेरे काफी पास आ चुका था । उसके हाथ में चाकू था । वह बार-बार मुझसे मोती मांग रहा था । गुफा के पास पहुंचकर मैंने कमीज से मोती निकाला और हवा में उछाल दिया । इसी के साथ उसने भी पानी में छलांग लगा दी । वह मोती को पानी से निकाल लाया । उसने मुझे चाकू दिखाकर नाव में बैठने के लिए कहा । विवश हो, मुझे उसके साथ बैठना पड़ा । उसने नाव को ग्याना नगर की ओर खेने के लिए मुझ से कहा । वहां मेरे साथ जाने पर उसे मोती की अच्छी कीमत मिल सकती थी ।

रात हो गई । मैंने दूर समुद्र में हलचल देखी । ये लहरें नहीं हो सकती थीं, क्योंकि जल शांत था । तभी वह हलचल निकट आती दिखाई दी । अब चांदनी मांता के डैनों पर पड़ रही थी । वह छोटी मछलियों का शिकार कर रही थी । फिर वह हमारी ओर आने लगी । उसकी गति के कारण लहरों ने नाव को हवा में उछाल दिया । नाव में पानी भर गया था, जिसे हम जल्दी-जल्दी उलीचने लगे ।

आधा मील दूर एक टापू था । मांता से बचने के लिए हम उस टापू पर उतर गए । वहां के कबीले के लोग हर आने वाले को जान से मार डालते थे । उन्होंने हमें देख लिया और हमें मारने के लिए भागे । हमने जल्दी से अपनी नाव फिर से समुद्र में उतार दी और दूर निकल गए ।

थोड़ी देर बाद हमसे कुछ दूर पर पानी का एक उछाल आया । मांता हवा में उछली । मैं डर गया । पर तभी मांता ने डुबकी लगाई । वह दोपहर तक दिखाई नहीं पड़ी ।

अचानक मांता नाव के पास से गुजरी । उसकी पीली आंखें जैसे मुझसे कह रही थीं— 'यह मोती मेरा है, केवल मेरा । इसे समुद्र में फेंक दो ।'

सेविल्नो हाथ में भारी बरछा लेकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था । उसने बरछे को रस्से के एक सिरे से अच्छी तरह बांध दिया । बाकी रस्से को गोल करके अपने पैरों के पास डाल दिया । मांता तैरती हुई धीरे-धीरे निकट आ रही थी । जब वह नाव के काफी पास आ गई, तो सेविल्नो पूरी ताकत से चिल्लाया । बरछा उसके हाथ से छूटकर मांता के शरीर में जा लगा । उसने रस्से को इतना तेज झटका दिया कि नाव हवा में उछल गई । रस्से के साथ नाव पूरब की ओर तेजी से तैरने लगी ।

सेविल्नो का धैर्य टूट रहा था । उसने चाकू निकाला । मैं समझा, शायद वह मांता से छुटकारा पाने के लिए रस्सा काटना चाहता है, पर वह तो रस्से को खींचने लगा । नाव मांता के पास आती गई । हम मछली की पूंछ के पास पहुंच गए थे । अचानक सेविल्नो ने छलांग लगाई । वह मांता की चौड़ी पीठ पर जा कूदा । मछली पानी में अधडूबी तैर रही थी । मांता के सिर पर उसने चाकू से भरपूर वार किया । मांता अपनी पूंछ को समुद्र में बार-बार पटक रही थी । मांता ने अपने डैनों से सेविल्नो को परे फेंकने का प्रयत्न किया । नाव में तेज झटका लगा । रस्सा टूटकर सेविल्नो के शरीर से उलझ गया । तभी घायल मांता ने पानी में डुबकी लगाई । रस्से में उलझा सेविल्नो भी मांता के साथ ही समुद्र के जल में समा गया ।

मैंने नाव से पानी बाहर निकाला । समुद्र में गिरी पतवारों को संभाला । जहां सेविल्नो डूबा था, वहां काफी देर तक नाव चलाता रहा ।

अंधेरा घिर आया था । मैं खामोशी से चर्च की ओर चल पड़ा । वहां कोई नहीं था । मैं मैडोना के पास गया । मैंने उसके हाथ में मोती रख दिया, फिर मैंने चर्च के घंटे बजाने शुरू किए । लोग कारण जानने के लिए दौड़े चले आए । लोग इकट्ठा हो गए । मैं उनकी नजरों से बचता हुआ, चुपके से घर की ओर चल दिया ।

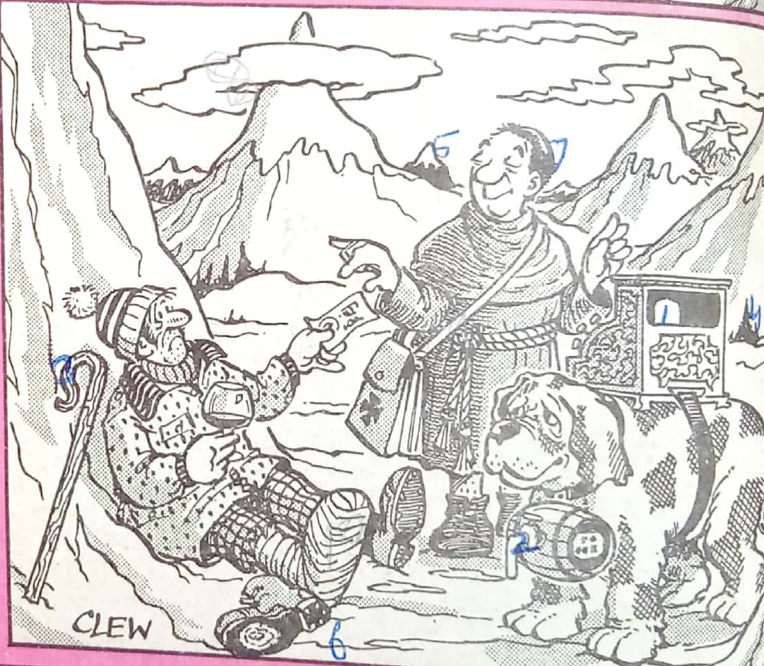
प्रस्तुति : अमरजीत सिंह

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।







कहानी लिखो-१०२

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० मई '९२ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद आने पर कहानी छपेगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : जुलाई '९२ अंक

चित्र पहेली-१०२

'कवि सम्मेलन' विषय पर एक रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० मई '९२ तक **चित्र पहेली-१०२, नंदन मासिक १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता अवश्य लिखिए।** चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अगस्त '९२ अंक



छोटी बहू

—सुरेश के. अंजुम

चंदनगढ़ पर राजा सूरजसिंह राज्य करता था । उसके चार पुत्र थे । चारों समझदार होने के साथ-साथ पराक्रमी भी थे । उनकी बदौलत ही राजा सूरजसिंह ने आस-पास के कई राज्यों को जीत लिया था । राजा वीरों का सम्मान करता था । उसकी रानी थी वीरमति । वीरमति गुणी और बुद्धिमान थी । राजा राजकाज में उससे सलाह मशविरा लेता था ।

एक बार रानी वीरमति बीमार पड़ गई । कई वैद्यों ने आकर रानी की चिकित्सा की, किंतु रानी की हालत में सुधार नहीं हुआ । आखिर वीरमति का देहांत हो गया ।

राजमहल की सारी जिम्मेदारी वीरमति पर थी । राजा उससे सलाह भी लिया करता था । रानी की मृत्यु के बाद राजा चिंता में डूब गया कि राजमहल की जिम्मेदारी कौन संभालेगा !

राजा के चारों पुत्रों का विवाह हो चुका था । वे महल के अलग-अलग भागों में, अपनी पत्नियों के साथ रहते थे ।

एक दिन राजा सूरजसिंह ने अपनी चिंता प्रधान मंत्री चतुरसिंह के सामने प्रकट की । बोला—"आप ही बताइए, महल की देखरेख के लिए मैं किस बहू को सलाहकार बनाऊं ।"

प्रधान मंत्री चतुरसिंह ने कहा—"महाराज, यह कार्य तो बहुत कठिन है । आपकी सभी बहुएं आपकी पुत्री के समान हैं । किसी एक को सलाहकार बनाने पर दूसरी बहुओं को दुःख होगा । वे उससे द्वेष करेंगी । इसलिए मेरा एक सुझाव है । यदि आप आज्ञा दें, तो कहूं ?"

"हां-हां, आप जरूर कहिए प्रधान मंत्री जी । आपके सुझाव का स्वागत होगा ।"—राजा ने प्रसन्न होकर कहा ।

"महाराज, आप एक प्रतियोगिता का आयोजन करें । प्रतियोगिता में आप उनसे प्रश्न पूछें । आपकी जो बहू उस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर दे, उसे आप यह भार सौंप दें ।"—प्रधान मंत्री चतुरसिंह ने सुझाव दिया ।

"आप ठीक कहते हैं प्रधान मंत्री जी । मैं ऐसा ही करूंगा । किंतु आप यह तो बतलाइए कि मैं उनसे कौन-सा प्रश्न पूछूं ?"—राजा ने कहा ।

"महाराज, आप उनसे पूछें कि ऐसा कौन-सा कार्य है, जिससे राजा और राजमहल की प्रतिष्ठा बनी रहे ।"—प्रधान मंत्री ने प्रश्न बताया ।

"ठीक है । मैं कल ही प्रतियोगिता की व्यवस्था करता हूं ।"—राजा ने कहा ।

दूसरे दिन राजा ने घोषणा की कि जो पुत्रवधू उसके प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर देगी, उसे वह अपना सलाहकार बनाएंगे ।

घोषणा के अनुसार राजा ने सभी पुत्रवधुओं से प्रश्न पूछा—"हम वह कौन-सा कार्य करें, जिससे

हमारी और हमारे राजमहल की प्रतिष्ठा बनी रहे ?"

बड़ी बहू ने उत्तर दिया—"पिता जी, हम साधु-संन्यासियों की देखभाल करें। उन्हें अधिक दान दें।"

दूसरी बहू बोली—"हम तीर्थ यात्रियों के लिए एक धर्मशाला बनवा दें।"

तीसरी बहू ने कहा—"नदी के तट पर दोनों ओर अच्छे और मजबूत घाट बनवा दें, जिससे आने-जाने वाले तीर्थ यात्रियों को स्नान करने में कठिनाई न हो।"

सबसे छोटी पुत्रवधू ने उत्तर दिया—"पिता जी, राजा और राजमहल में प्रतिदिन असंख्य लोग आते और जाते रहते हैं। हमें वह कार्य करना चाहिए, जिससे प्रत्येक व्यक्ति राजा के पास से या राजमहल से जाए, तो प्रसन्न हो। उसके मन में संतोष हो।"

राजा सबसे छोटी पुत्रवधू का उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"मैं सबसे छोटी बहू के उत्तर से बहुत खुश हूं। आज से राजमहल की व्यवस्था का जिम्मा इसी पर होगा।"

राजा के इस न्याय से सभी लोग बहुत खुश हुए।



झील में दरवाजा

—सविता पंत

पहाड़ी की गोद में बसा था वह गांव। एक ओर झील थी। तीन ओर हरे-भरे खेत थे। गांव के लोग बड़े प्रेम से हिल-मिलकर रहते थे। प्रतिदिन सवेरे गांव के युवक झील के किनारे एकत्र होते, स्नान करते और तैरते थे। कुछ युवक टीले से झील में छलांग लगाते थे। छलांग लगाने वाले युवकों में गांव के प्रधान का पुत्र मनोहर हमेशा होता था।

मनोहर जब भी झील में कूदता, उसे लगता कि वह लगभग तल पर पहुंच गया है। उसे वहां एक दरवाजा सदा दिखाई देता। वह दरवाज़े को खोलकर अंदर जाने का प्रयास करता, तो उसका दम घुटने लगता था। मजबूर होकर उसे सांस लेने के लिए पानी के ऊपर आना पड़ता। मनोहर ने पचासों बार उस दरवाजे के रहस्य का पता लगाने के लिए झील में छलांग लगाई, लेकिन सदा ही विफल रहता। पानी से बाहर रहकर भी मनोहर को हर समय दरवाजे का ही ख्याल रहता था।

उसका पक्का विश्वास था कि झील के भीतर दरवाजा है और दरवाजे के भीतर ऐसा कुछ है, जो उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। जब भी अवसर मिलता, मनोहर अपने मित्रों, रिश्तेदारों, साधु-संतों—सभी से झील के दरवाजे का रहस्य पूछता। सभी उसे पागल और दीवाना कहते थे।

मनोहर अपने पिता की खेती-बाड़ी की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। इसलिए उसकी इन कारगुजारियों से उसके पिता नाराज रहते थे। उनका कहना था कि मनोहर इन फालतू बातों में पड़कर अपना अमूल्य समय नष्ट कर रहा है। वह मनोहर से इन बेमतलब की बातों को छोड़, खेती-बाड़ी में ध्यान लगाने को कहते। मगर मनोहर पर पिता की बातों का कोई असर नहीं होता था।

एक बार गांव में भयंकर सूखा पड़ा। फसलें एकदम सूख गईं। सभी परेशान थे कि क्या करें! और कुछ न सूझा, तो गांव वालों ने किसी दूसरी जगह

जाने का निश्चय कर लिया । मनोहर के पिता ने भी गांव छोड़ने की सोची । उन्होंने मनोहर से कहा—"अब हम यह गांव छोड़कर ऐसे गांव में जाएंगे, जहां कुछ खाने को मिले ।" मनोहर वहीं रहना चाहता था । मगर पिता उसे वहां छोड़ने को तैयार नहीं थे । बाप-बेटे में काफी कशमकश रही । अंततः मनोहर पिता का आदेश टाल नहीं सका । उसे मन मारकर गांव छोड़ना पड़ा ।

मनोहर चल तो परिवार के साथ रहा था, लेकिन उसका मन झील की तलहटी में बने दरवाजे पर ही टिका था । उसे लगता, वह एक न एक दिन उस दरवाजे के रहस्य का पता अवश्य लगा लेगा ।

वे लोग गांव से कुछ ही दूर आए थे कि तेज अंधड़ चलने लगा ।

अचानक हवा का एक इतना तेज झोंका आया कि मनोहर संभल न सका । उसके पैर उखड़ गए । और उसे हवा उड़ाकर ले गई । मनोहर को लगा,जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसे अपनी ओर खींच रही है । उसे हवा पर तैरते हुए जाता देख, सभी घबरा गए । मनोहर के पिता तो बहुत परेशान हो गए। बेटे की काफी खोज की, मगर कहीं पता न चला ।

हवा मनोहर को उड़ाकर पहाड़ के बीच ले गई । वहां एक मंदिर था । मंदिर का दरवाजा बिल्कुल वैसा ही था, जैसा मनोहर झील की तली में देखता था । वह आश्चर्य में पड़ गया । साहस जुटाकर दरवाजा खोल, भीतर गया तो देखा, सिंहासन पर एक देवता बैठे थे ।

देवता ने मनोहर से कहा—"तुम मेरे पास आना चाहते थे, अतः मैंने तुम्हें यहां बुलवा लिया ।"

मनोहर ने देवता की वंदना की। फिर पूछा—"मगर झील का दरवाजा पहाड़ के बीच कैसे आ गया ?"

देवता मुसकरा पड़े । बोले—"झील में कोई दरवाजा नहीं, इसी का बिम्ब है । हर एक को दिखाई भी नहीं देता ।" फिर मनोहर को कुछ बीज दिए । कहा—"इन्हें मिल-बांटकर खेतों में बो देना, कल्याण होगा ।" कुछ देर बाद हवा मनोहर को उसी तरह फिर उड़ा ले गई, जैसे लाई थी । कुछ ही देर में मनोहर वहीं



पहुंच गया, जहां उसके गांव के लोग थे । मुखिया के लड़के की वापसी से सारे गांववासी खुश हो गए । मनोहर ने अपने पिता को बीज दिए । सारी बात कह सुनाई । पिता ने सभी को थोड़े-थोड़े बीज दे दिए । बीज लेकर सभी लोग अपने गांव लौट गए । अपने-अपने खेत में बीज बो दिए ।

कुछ समय बाद, सूखे में भी फसल लहलहा उठी । लोगों ने फसल काटी, तो सभी की फसल पहले से दुगनी थी । वे खुशी से उछल पड़े । अपनी-अपनी फसल घर ले जाने लगे, तो मनोहर ने कहा—"फसल घर ले जाने से पहले फसल के दस हिस्से करो । आठ हिस्से ले जाओ । दो हिस्से फसल यहीं छोड़ जाओ ।"

लोगों ने कहा—"जब तक तुम हमें यह नहीं बताओगे कि ये दो हिस्से किसके लिए हैं, हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे ।"

मनोहर बोला—"इन दो हिस्सों में से पहला हिस्सा वनस्पति और जीव-जंतुओं के लिए है, जिनकी धरती को काटकर हमने खेत बनाए हैं । दूसरा हिस्सा गांव से होकर गुजरने वाले भूखे यात्रियों के लिए है ।"

लोगों ने मनोहर की बात ध्यान से सुनी । उन्हें बात सही लगी । सब लोगों ने खुशी-खुशी मनोहर की बात मान ली । इसके बाद गांव समृद्ध होता गया । ●

महल में गायक

— डा. जगमल सिंह

मणिपुर के महाराजा गरीबनिवाज की पोती और गौरश्याम की बेटी कुरंगनयनी रूपवती, गुणवती और शीलवती थी। राजकुमारी कुरंगनयनी के जन्म के कुछ ही समय बाद पिता की मृत्यु हो गई। काका भाग्यचंद्र महाराज ने उसको पिता का स्नेह दिया। काका के स्नेह की छाया में राजकुमारी का शैशव आनंद से बीतने लगा।

लेकिन यह सुख भी ज्यादा दिन नहीं रहा। एक दिन बर्मा के राजा ने मणिपुर को जीत लिया। महाराजा भाग्यचंद्र को अपने परिवार के साथ मणिपुर छोड़कर, असम के राजा स्वर्गदेव की शरण में जाना पड़ा। आठ वर्षों तक उन्हें सपरिवार वहीं रहना पड़ा। कुरंगनयनी भी उन्हीं के साथ रही। महाराजा भाग्यचंद्र ने इन आठ वर्षों में सैनिक शक्ति जुटाई। मणिपुर पर आक्रमण कर, बर्मी सेना को खदेड़कर बाहर किया।

कुछ समय बाद महाराजा भाग्यचंद्र ने अपनी भतीजी कुरंगनयनी का विवाह स्वर्गदेव से कर दिया। कुरंगनयनी के साथ उन्होंने मणिपुर से बहुत-से नर-नारी भी भेजे, जिससे कुरंगनयनी को वहां अकेलापन न महसूस हो। इससे स्वर्गदेव व भाग्यचंद्र की मित्रता और गहरी हो गई।

असम को जब भी सैनिक सहायता की आवश्यकता होती, महाराजा भाग्यचंद्र अपनी सेना भेजकर सहायता करते। इस प्रकार मणिपुर के महाराजा ने उन्हें मुसीबत में दी गई सहायता का बदला चुकाया।

असम के महाराजा स्वर्गदेव राजेश्वरसिंह की मृत्यु हुई, तो कुरंगनयनी पर फिर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। स्वर्गदेव का छोटा भाई लक्ष्मीनाथसिंह राज सिंहासन पर आसीन हुआ। राजा के मरने के बाद राज्य में मोवामरिया जाति के लोगों ने राधा मारान के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। लक्ष्मीनाथसिंह अपनी राजधानी की रक्षा करने में असमर्थ रहा। रंगपुर पर मोवामरिया लोगों का आधिपत्य स्थापित हो गया। लक्ष्मीनाथ बंदी बना लिया गया।

इस संकट की घड़ी में महारानी कुरंगनयनी ने साहस नहीं खोया। उसने राज परिवार के विश्वासपात्र असमी सैनिकों व वहां बसे मणिपुरी सैनिकों को गुप्त रूप से संगठित किया। राधा मारान से राज्य वापस लेने और लक्ष्मीनाथ को बंदी गृह से छुड़ाने की एक गुप्त योजना बनाई।

असम में 'बिहु' त्योहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। 'बिहु' के अवसर पर 'हुसारी गायकों' के दल घर-घर जाकर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। परम्परानुसार ये दल राजा के यहां भी जाते हैं। महारानी ने अपने सशस्त्र सैनिकों को हुसारी गायकों के वेश में राजमहल में भेज दिया। गायक दल ने राजा के सामने नृत्य गान प्रस्तुत किया। परम्परा का पालन करते हुए राधा मारान ने गायक मंडली का स्वागत-सत्कार किया।

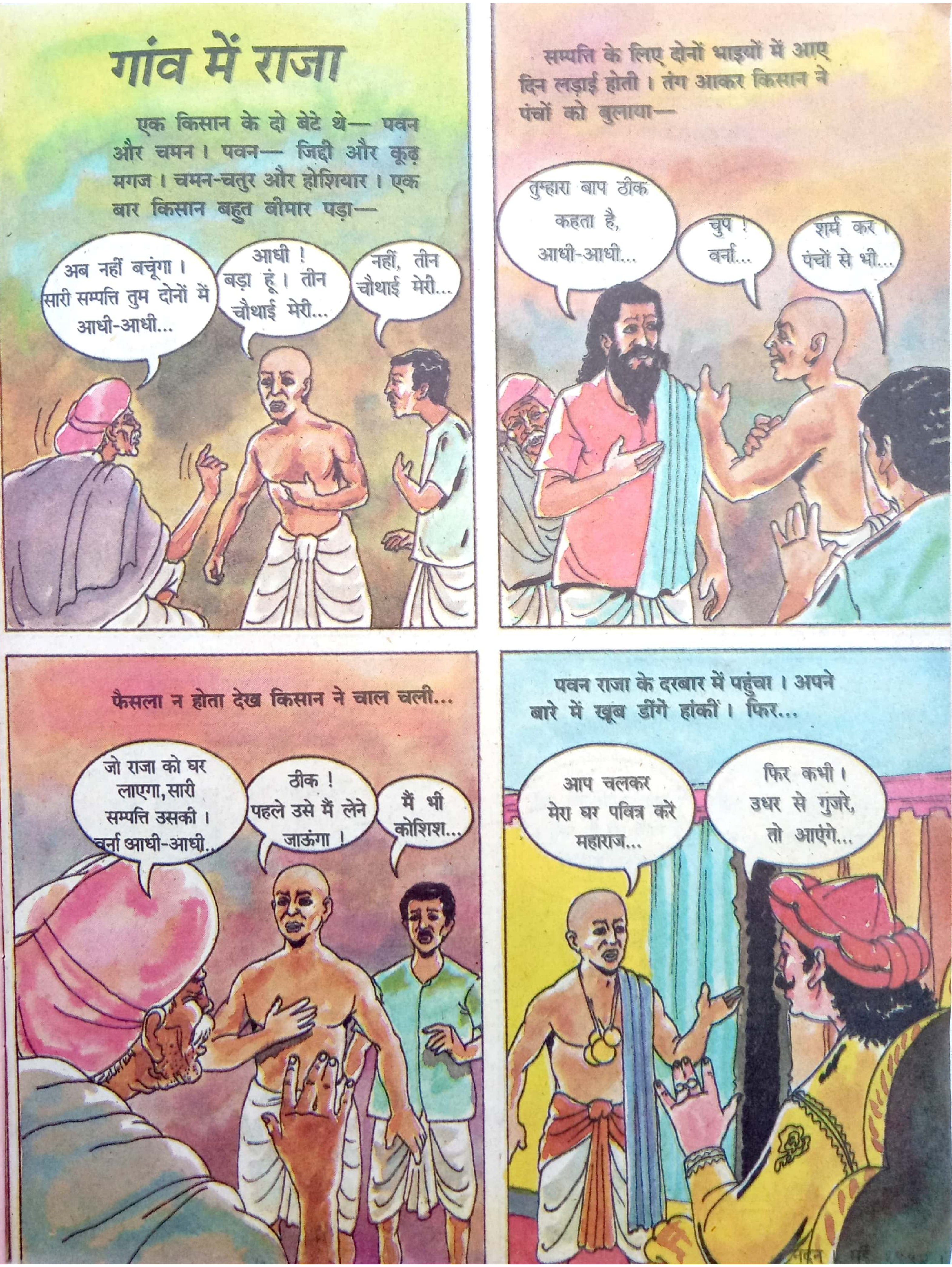
कुरंगनयनी स्वयं वहां वीर वेश में उपस्थित थी। उसने देखा कि राधा मारान व उसके सैनिक स्वागत-सत्कार में बेखबर हैं। झट उसने राधा मारान को ललकारा। कुरंगनयनी जैसी स्त्री से कौन यह आशा कर सकता था कि वह विद्रोही राधा मारान से युद्ध कर सकती है।

उन दिनों मणिपुरी नर-नारियों को बचपन से ही अस्त्र-शस्त्र चलाने व घुड़सवारी की शिक्षा दी जाती थी। कुरंगनयनी विद्रोही नायक पर शेरनी की तरह टूट पड़ी। राधा मारान महारानी के प्रहार को झेल नहीं सका। पहले वार में ही रानी ने उसको ढेर कर दिया।

यह देखकर उसके सैनिक भी मोवामरिया सैनिकों पर टूट पड़े। घमासान युद्ध के बाद विद्रोहियों को बंदी बना लिया गया। बहुत-से विद्रोही मारे गए, कुछ जान बचाकर भाग गए। महारानी कुरंगनयनी का जय-जयकार होने लगा। स्वामिभक्त सैनिकों ने महाराज लक्ष्मीनाथ को बंदी गृह से मुक्त करवाया। उन्हें पुनः राज सिंहासन पर बैठाया गया।

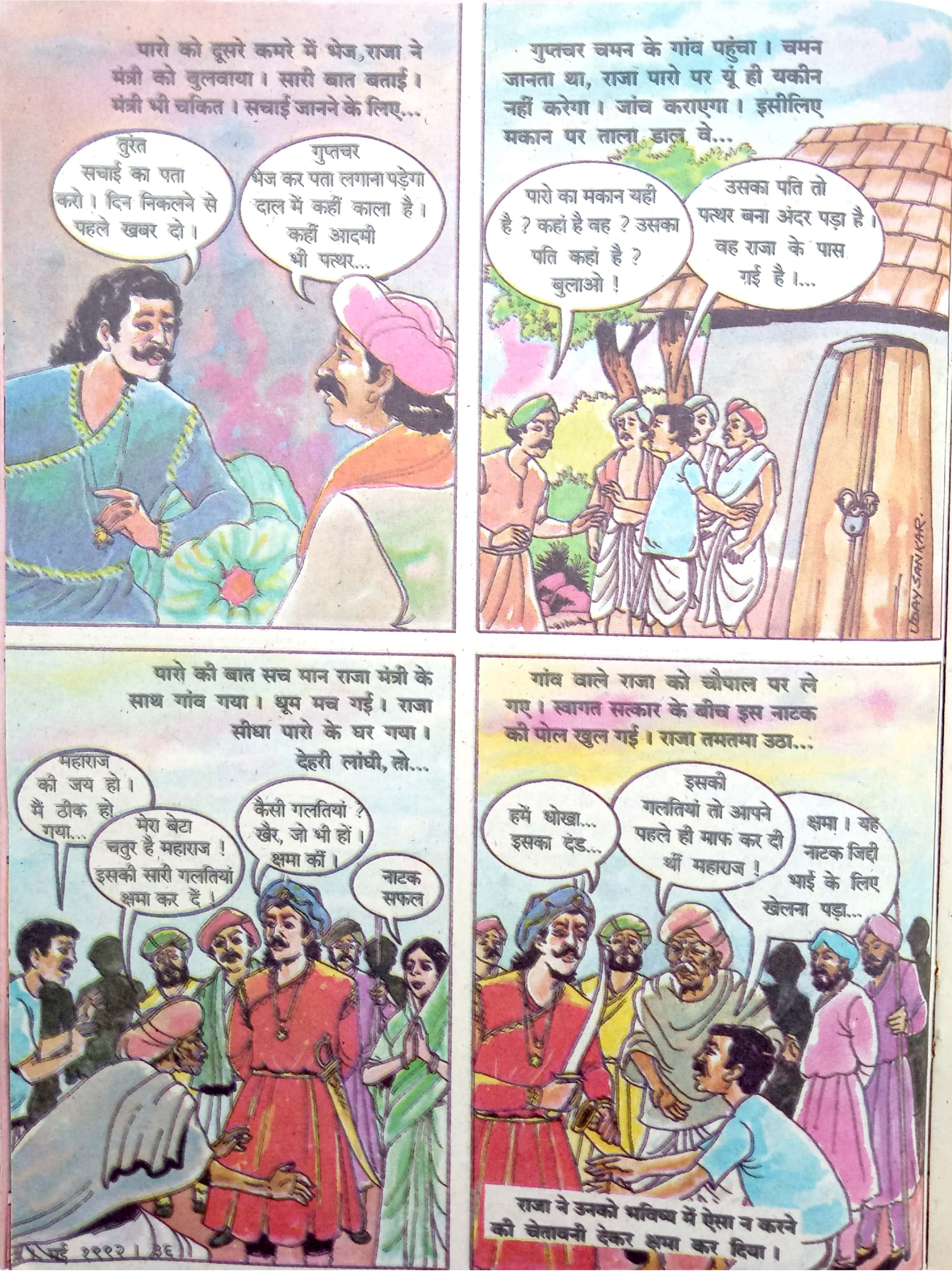
कुरंगनयनी की वीरता की यह कहानी आज भी असम व मणिपुर के घर-घर में सम्मान के साथ कही-सुनी जाती है। ●

गांव में राजा


एक किसान के दो बेटे थे— पवन और चमन। पवन— जिद्दी और कूढ़ मगज। चमन-चतुर और होशियार। एक बार किसान बहुत बीमार पड़ा—
अब नहीं बचूंगा। सारी सम्पत्ति तुम दोनों में आधी-आधी...
आधी! बड़ा हूं। तीन चौथाई मेरी...
नहीं, तीन चौथाई मेरी...
सम्पत्ति के लिए दोनों भाइयों में आए दिन लड़ाई होती। तंग आकर किसान ने पंचों को बुलाया—
तुम्हारा बाप ठीक कहता है, आधी-आधी...
चुप! वर्ना...
शर्म कर! पंचों से भी...
फैसला न होता देख किसान ने चाल चली...
जो राजा को घर लाएगा, सारी सम्पत्ति उसकी। वर्ना आधी-आधी..
ठीक! पहले उसे मैं लेने जाऊंगा!
मैं भी कोशिश...
पवन राजा के दरबार में पहुंचा। अपने बारे में खूब डींगें हांकीं। फिर...
आप चलकर मेरा घर पवित्र करें महाराज...
फिर कभी। उधर से गुजरे, तो आएंगे...


पवन जिद्दी तो था ही। बस, अड़ गया— फिर कभी नहीं, अभी। राजा को गुस्सा आ गया। पचास कोड़ों की सजा दे दी। ...
तब तक लगाओ, जब तक यह अभी-अभी करना न छोड़ दे!
छोड़ दी... छोड़ दी...
गिरता-पड़ता, कराहता पवन गांव पहुंचा...
क्या हुआ?
तुम तो राजा को लाने गए थे!
हां, अब चमन लाएगा राजा को... आह
पवन की पिटाई की बात सारे गांव में फैल गई। उसी रात...
मेरी मानो। हठ छोड़ो। देखी नहीं पवन की हालत। भाड़ में गई सम्पत्ति...
बात सम्पत्ति की नहीं, न्याय की है, पारो। मैं जरूर जाऊंगा।
चमन ने एक योजना बनाई। अपने पिता और पत्नी पारो को उसमें शामिल किया। फिर पारो को ले...
यह खिड़की राजा के शयनागार की है। मैं चला। जैसा तय हुआ तुम वैसा करो।
ठीक है।


चमन चला गया तो...
मैं लुट गई ! हाय, मैं मर गई !
राजा गुस्से में भर उठा । सिपाही भेज पारो को पकड़ बुलवाया...
क्यों चीख रही थी ?
क्या करूं महाराज, मेरे पति को एक साधु ने शाप दे दिया । वह पत्थर बन गए । अब मैं जीवित रहकर क्या करूंगी ?
राजा चकित— ऐसा कैसे हो सकता है ? ...
झूठ मत बोल । फांसी पर चढ़ा दूंगा !
सच कहती हूं । रोई-गिड़गिड़ाई, तो साधु ने कहा— राजा तेरे घर की देहरी लांघे, तो तेरा पति जीवित हो । चल के देख लें । झूठी हूं, तो जो मरजी दंड...
राजा ने सोचा...
देखने में क्या हर्ज है ? देहरी लांघने से यदि इसका पति जीवित हो गया, तो मेरा यश हर तरफ फैल जाएगा । झूठ हुआ तो— दोनों को दंड...
पारो सोचती थी...
बड़ा शक्की और क्रोधी राजा है । कैसे पार लगेगी नैया? नाटक का भंडाफोड़ हो गया, तो...


पारो को दूसरे कमरे में भेज, राजा ने मंत्री को बुलवाया। सारी बात बताई। मंत्री भी चकित। सचाई जानने के लिए...
तुरंत सचाई का पता करो। दिन निकलने से पहले खबर दो।
गुप्तचर भेज कर पता लगाना पड़ेगा दाल में कहीं काला है। कहीं आदमी भी पत्थर...
गुप्तचर चमन के गांव पहुंचा। चमन जानता था, राजा पारो पर यूं ही यकीन नहीं करेगा। जांच कराएगा। इसीलिए मकान पर ताला डाल वे...
पारो का मकान यही है? कहां है वह? उसका पति कहां है? बुलाओ!
उसका पति तो पत्थर बना अंदर पड़ा है। वह राजा के पास गई है।...
UDAY SANKAR
पारो की बात सच मान राजा मंत्री के साथ गांव गया। धूम मच गई। राजा सीधा पारो के घर गया। देहरी लांघी, तो...
महाराज की जय हो। मैं ठीक हो गया...
मेरा बेटा चतुर है महाराज! इसकी सारी गलतियां क्षमा कर दें!
कैसी गलतियां? खैर, जो भी हों। क्षमा कीं।
नाटक सफल
गांव वाले राजा को चौपाल पर ले गए। स्वागत सत्कार के बीच इस नाटक की पोल खुल गई। राजा तमतमा उठा...
हमें धोखा... इसका दंड...
इसकी गलतियां तो आपने पहले ही माफ कर दी थीं महाराज!
क्षमा! यह नाटक जिद्दी भाई के लिए खेलना पड़ा...
राजा ने उनको भविष्य में ऐसा न करने की चेतावनी देकर क्षमा कर दिया।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष २८ अंक : ७, नई दिल्ली; मई '९२, वैशाख—ज्येष्ठ, शक सं. १९१४



चित्र में बाएं से दाएं—अध्यक्ष श्री कृष्णकुमार बिड़ला, उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा, श्रीमती तेजी बच्चन, श्री अमिताभ बच्चन और श्रीमती शोभना भरतिया

देश का सबसे बड़ा साहित्य पुरस्कार

सरस्वती सम्मान बच्चन को

नई दिल्ली। देश में सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार सरस्वती सम्मान है। जाने-माने कवि श्री हरिवंश राय बच्चन को उनकी आत्मकथा पर प्रथम सरस्वती सम्मान दिया गया। सम्मान उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने दिया। इसमें तीन लाख रु., प्रतीक चिन्ह, शाल और प्रशस्ति-पत्र दिया गया। बच्चन जी अस्वस्थ होने के कारण न आ सके। उनकी ओर से उनकी पत्नी श्रीमती तेजी बच्चन ने सम्मान ग्रहण किया। उपराष्ट्रपति ने बच्चन जी की कविताओं की बहुत प्रशंसा की।

के.के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से यह सम्मान शुरू किया गया है। फाउंडेशन के उद्देश्यों के बारे में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कृष्णकुमार बिड़ला ने बताया। उन्होंने कहा—"साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, शिक्षा आदि के प्रसार के लिए, सामाजिक एवं जनहित के कार्यों में सक्रिय योगदान देना फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य है।" बच्चन जी के बारे में श्री बिड़ला ने कहा—"जितनी संवेदनशील और मर्मस्पर्शी बच्चन जी की कविता है, उतना ही जीवंत और सशक्त उनका गद्य।" इस अवसर पर बच्चन जी के पुत्र श्री अमिताभ बच्चन ने उनका संदेश और कविता पढ़ी।

फाउंडेशन की ओर से श्रीमती शोभना भरतिया ने सभी को धन्यवाद दिया।

पीठ पर शेर

अहमदाबाद। उनकी पीठ पर लदे हुए नकली शेर को देखकर लोग चकित रह जाते हैं। हिमांशु प्रेम और निगम पंड्या शेर बचाओ अभियान पर निकले हैं। उनका कहना है कि गुजरात के गिर जंगल में ही अब एशियाई सिंह बचे हैं। वनों की कटाई के कारण इनकी जाति के लिए खतरा पैदा हो गया है। नए वनों की तलाश की जानी चाहिए।

हरी-बैंगनी गोभी

पालमपुर। ब्रावली यानी अंग्रेजी फूल गोभी। यह गोभी सफेद नहीं, हरी या बैंगनी रंग की होती है। यूरोप तथा अमरीका में काफी पसंद की जाती है। भारत में भी अब यह लोकप्रिय होती जा रही है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

आजाद वही है,जो अपना काम आप करता है। — विनोबा भावे

अभिनंदन नए वर्ष का

हमें आजाद हुए पैंतालीस बरस हो रहे हैं। विदेशी शासन गया,पर हम विदेशीपन का मोह पाले हैं। इनमें विदेशी पहनावा और खान-पान तो है ही। अपने पेड़-पौधों और फूलों के नाम भी अक्सर अपनी भाषा में नहीं जानते। नया वर्ष (ईस्वी सन्) शुरू होता है,तो ढेर सारे शुभकामना-पत्र आ जाते हैं। पर भारतीय नव वर्ष विक्रमी संवत् या सरकारी शक संवत् शुरू होते हैं,तो ठीक से पता भी नहीं चलता।

विक्रमी संवत् हमें याद दिलाता है कि कभी महाराजा विक्रमादित्य जैसे गुणी शासक इस देश में हुए।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद ने राजधानी में नव वर्ष अभिनंदन का बड़ा समारोह किया। इससे पता चला कि भारतीय नया संवत् शुरू हुआ है—चैत्र शुक्ल एक याने चार अप्रैल से। नए वर्ष में कोमल-कोमल हरे पत्ते फूट रहे हैं। कलियां चटककर फूल बन रही हैं। खेतों में फसल तैयार हो गई है। हर ओर खुशियां हैं, इसीलिए नए वर्ष की शुरूआत शुभ है।

'४२ बाल कथाएं'

नई दिल्ली। एक समारोह में 'बयालीस बाल कथाएं' पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृह उपमंत्री श्री रामलाल राही ने किया।

पुस्तक में अलग-अलग लेखकों की बयालीस कहानियां हैं। पुस्तक की साज-सज्जा और मुद्रण श्रेष्ठ है। पुस्तक के प्रकाशक हैं—मिनहाज प्रकाशन, आर-२/११४, नया राजनगर, गाजियाबाद। इसके सम्पादक शमशेर अ. खान हैं।

मलबे में नर्स

अकरा। तुर्की में हाल ही में भूकम्प आया था। एक नर्स मरीजों की सेवा में लगी थी कि अस्पताल ढह गया। आठ दिन तक वह बिना पानी और भोजन के,मलबे के नीचे दबी रही। नूरकन एरार सलान नाम की इस नर्स को राहत दस्ते ने बाहर निकाला।

कैसा है सूरज

उदयपुर। विश्व की छह सौ वेधशालाओं में उदयपुर की वेधशाला को भी शामिल किया गया है। ये सभी वेधशालाएं मिलकर, सूरज के अंदरूनी हिस्सों का अध्ययन करेंगी।

अभिषेक पुरस्कृत

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम शिक्षा विभाग ने विज्ञान मेला लगाया। भाषण प्रतियोगिता भी हुई। इसमें अभिषेक श्रीवास्तव को प्रथम पुरस्कार मिला। प्रतियोगिया का विषय था—अध्यापक द्वारा सही शिक्षण या दूरदर्शन द्वारा।

सबसे बड़ा सैंडविच

अटलांटा। दुनिया का सबसे बड़ा सैंडविच बनाया गया। इसका वजन था— २२५ कि. ग्रा.। इसे तैयार करने में दो हफ्ते लगे।

बार्था का सम्मान

केनमेयर। आयरलैंड के इस गांव में रहती है बार्था। उसका सम्मान किया जा रहा है। बार्था एक गाय है। वह सबसे बूढ़ी भी है। उसे नहला-धुलाकर मक्खन से मालिश की जाती है। मेला लगा है। बच्चों और बड़ों के लिए रंगारंग कार्यक्रम हो रहे हैं। बार्था को देखने वालों की भीड़ लगी है। उसे देखने के लिए टिकट लेना पड़ता है। अब तक नौ लाख से अधिक रुपए इकट्ठे हो चुके हैं। बार्था के मालिक का कहना है कि यह सारी रकम एक कैंसर संस्थान को दी जाएगी।

अपने को जानें

नई दिल्ली। युनेस्को के महानिदेशक डा. फ्रेडिको मेयर ने भारत की प्रशंसा की है। वह भारत यात्रा पर आए थे। उनका कहना है कि भारत ने अपनी प्राचीन धरोहरों को खूब संभाल कर रखा है। आने वाली पीढ़ी को अपनी संस्कृति के बारे में जरूर जानना चाहिए।

गेहूं दो अखबार लो

चंडीगढ़। हरियाणा का एक अखबार किसानों के लिए अनोखी योजना लेकर आया है। अखबार का कहना है कि एक किसान यदि एक क्विंटल गेहूं देगा,तो उसे साल भर तक अखबार मुफ्त दिया जाएगा।

बाघ और गैंडे

गुवाहाटी। काजीरंगा उद्यान में अधिकारी परेशान हैं। बाघ गैंडों का शिकार नहीं करते थे। लेकिन अब उनका व्यवहार बदल गया है। वे गैंडों पर टूट पड़ते हैं।

एक सैकिंड

न्यूयार्क। दुनिया भर की घड़ियों में इस साल ३० जून को एक सैकिंड और जोड़ा जाएगा। लीप वर्ष के कारण ऐसा होगा।

बंद नहीं होगा

लंदन। रीजेंट पार्क के चिड़ियाघर को पैसे की कमी के कारण बंद किया जा रहा था। लोगों को जब पता चला, तो वे नाराज हुए। अब अधिकारियों ने कहा है कि चिड़ियाघर बंद नहीं होगा। हां, जानवरों की संख्या कुछ कम कर दी जाएगी।

उलटा बहा

वाशिंगटन। एक बर्फीले द्वीप पर विज्ञान शोध संस्थान बनाया गया था। सोचा गया था कि यह उत्तरी ध्रुव की तरफ तैर जाएगा। लेकिन दिशा बदल गई और यह गर्म धाराओं की तरफ बह चला। अब इस विज्ञान केंद्र को उखाड़ा जा रहा है। यहां तेज हवाएं बहती हैं। इतनी ठंड है कि तीस सैकिंड में आदमी जम सकता है। इस केंद्र को १९८४ में स्थापित किया गया था।

कीड़े पकड़े

किन्नौर। ईख की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ों की पहचान बच्चों को कराई गई। स्कूल आते-जाते वक्त ये बच्चे ईख की पत्तियों पर चिपके इन कीड़ों को पकड़ लेते हैं। बदले में चीनी मिलों द्वारा इन्हें पैसे दिए जाते हैं।

कड़वा-मीठा नीम

न्यूयार्क। नीम की कड़वाहट में अमृत छिपा है। भारत में तो इस वृक्ष का बहुत महत्व है। अब पश्चिमी वैज्ञानिक भी इस वृक्ष की उपयोगिता देखकर चकित हैं। वहां नीम पर शोध कार्य किए जा रहे हैं।

अनोखा भोजन

सुपौल। यहां के विथनपुर गांव में रहती है जसिया देवी। वह हर रोज एक मुट्ठी बालू खाती है। उसका कहना है कि जिस दिन वह बालू नहीं खाती, उसकी तबियत खराब हो जाती है। पूरा गांव उसे हर रोज ऐसा करते देखता है।

अमेजन की मुसीबत

ब्रासीलिया। १९७९ से अब तक अमेजन नदी से टनों सोना निकाला जा चुका है। लेकिन एक पौंड सोना निकालने के लिए इतना ही पारा पानी में डालना पड़ता है। इस कारण से अमेजन में पारे की मात्रा बहुत अधिक बढ़ गई है। आसपास रहने वालों और जीव-जंतुओं के लिए इसका पानी बहुत प्रदूषित हो चुका है।

गैस से चलेगी कार

उज्जैन। एक युवक ने खाना पकाने की गैस से चलने वाली कार बनाई है। यह कार शोर नहीं करती, न ही प्रदूषण फैलाती है। संतोष सोनी नाम के इस युवक का कहना है कि इस पर खर्च भी बहुत कम आता है।

पैदल पूरी दुनिया

मुम्बई। दिलीप कुमार विग १९८२ से लगातार चल रहे हैं। पूरा हिन्दुस्तान उन्होंने पैदल पार किया है। अब वह पैदल ही पूरी दुनिया का चक्कर लगाना चाहते हैं।

शर्म से झुका

भरतपुर। यहां के बस स्टैंड पर यात्री बस का इंतजार कर रहे थे। एक विदेशी महिला भी इनमें थी। उसने आसपास देखा, खूब कूड़ा-करकट पड़ा था। उसने फौरन पास की दूकान से झाड़ू उठाया और लगी सफाई करने। कुछ ही देर में वह जगह चमचम कर उठी। यह देख अन्य यात्रियों के सिर शर्म से झुक गए।

मत मारो

टोक्यो। यहां दो लोगों ने जानवरों के फर तथा चमड़े से बनने वाले जूतों और कपड़ों के खिलाफ प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा—"इनके लिए जानवरों को मारना घोर अन्याय है।"

नन्हे समाचार

☐ 'सीखने की इच्छा हो, तो उम्र मायने नहीं रखती'— यह कहना है उजबेकिस्तान के एक गांव की बूढ़ी अम्मां का। वह ९८ वर्ष की है और फोटोग्राफी सीख रही हैं।

☐ ताइवान के वैज्ञानिकों ने एक छाता बनाया है। आग लगने पर यह सिर की सुरक्षा कर सकता है। और यदि कभी ऊंची मंजिल से कूदना पड़े, तो यह पैराशूट का काम भी करता है।

☐ उडुपी में डाक्टरों ने एक बछड़े को नकली पैर लगाया है।

☐ इस्रायल में 'आस्ट्रेलिया सफारी' पार्क बनाया जा रहा है। इसमें आस्ट्रेलिया में पाए जाने वाले कंगारू, शुतुरमुर्ग, भेड़ें तथा अन्य जानवर रखे जाएंगे।

☐ नई दिल्ली के चिड़ियाघर में रेंगने वाले जीवों के लिए अलग घर बनाया गया है।

☐ हिबिसकस का नरम चमकीले रंगों वाला फूल, दक्षिण कोरिया का राष्ट्रीय फूल है। १९१० से १९४५ तक जापानियों ने इस फूल को उगाने पर रोक लगा दी थी।

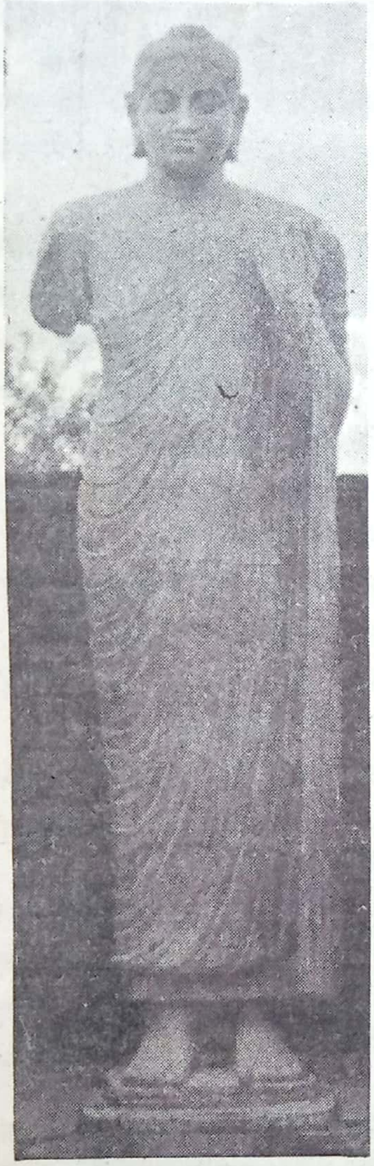
☐ अमरीका की मेरी ब्रिज नामक महिला को १९६३ में स्नातक डिग्री मिली, तो उसे दो लोगों ने बधाई पत्र भेजा। यह पत्र उसे अब २९ वर्ष बाद मिला। लिफाफे का कागज पीला पड़ गया है और बधाई-कार्ड टुकड़े-टुकड़े हो चुका है।

☐ बंगलूर में किसानों ने सरकार का ध्यान अपनी समस्याओं की ओर खींचने के लिए नया तरीका निकाला। उन्होंने दो घंटे तक जोरदार ठहाके लगाए और ढोल बजाए।

☐ १८५० में गुरु गोविंदसिंह की तलवारें इंग्लैंड भेजी गई थीं। अब उनका पता चल गया है।

☐ गंगोत्री ग्लेशियर लगातार सिकुड़ रहा है।

सचित्र समाचार



← आंध्र प्रदेश के हुसेन सागर में बुद्ध की अट्ठाईस मीटर ऊंची यह प्रतिमा लगने वाली थी। लेकिन मूर्ति पानी में गिर पड़ी। कई वर्ष बाद अब सरकार इस प्रतिमा को निकलवाएगी।

जिनिशा जैन (११ वर्ष) के बनाए चित्रों की प्रदर्शनी राजधानी में हुई। उसका बनाया चित्र—'बसेरा।' उसने सैकड़ों चित्र बनाए हैं। →



बिहार का नन्हा कार्टूनिस्ट पवन : उसे कलाश्री पुरस्कार मिला। अब तक बहुत-से इनाम मिल चुके हैं। ↓

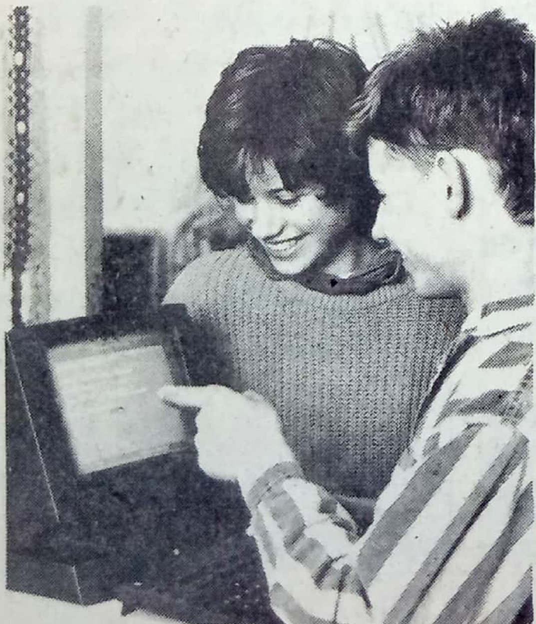




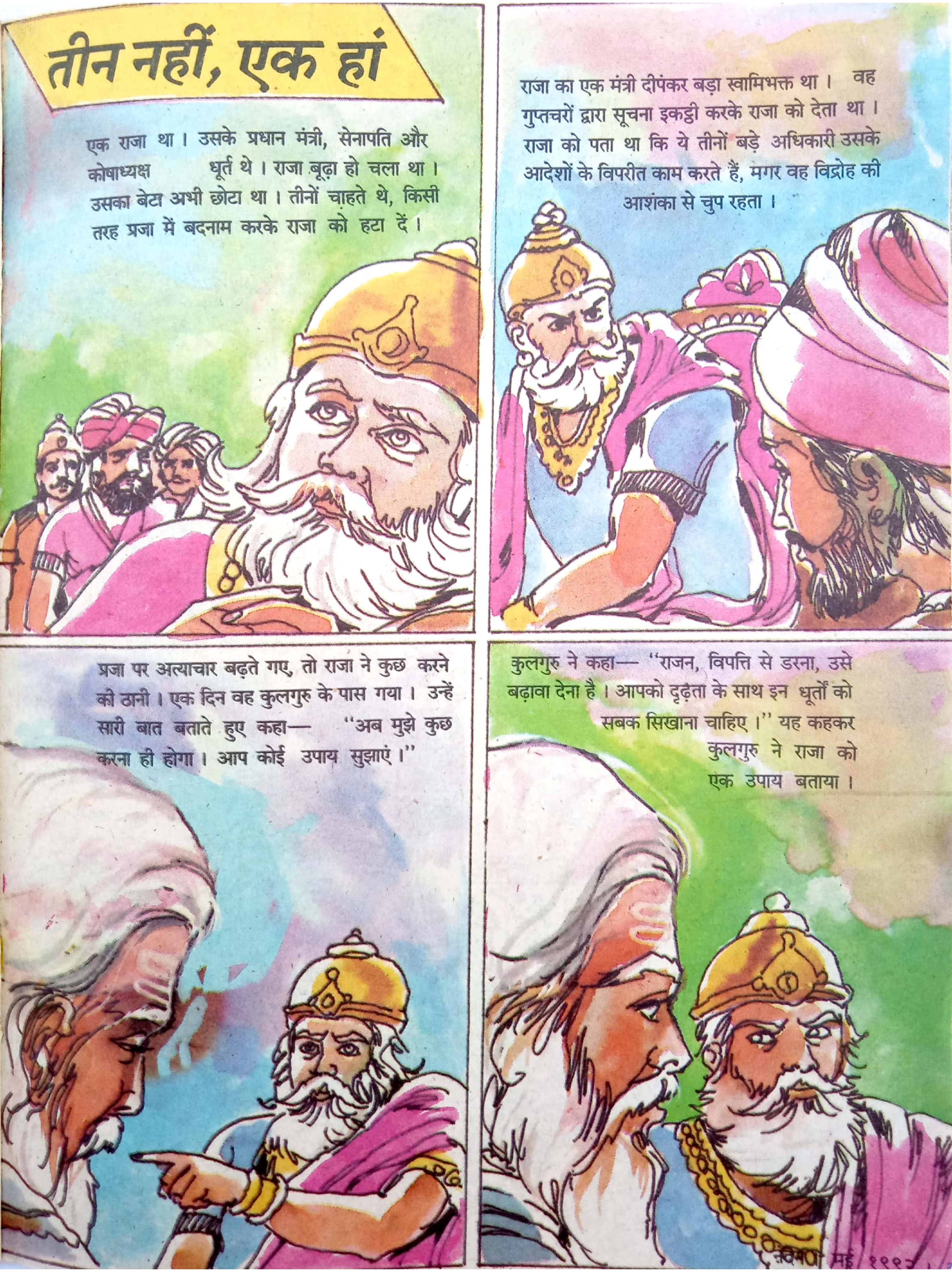
→ अलीगढ़ में विश्व विकलांग दिवस : श्रीमती सुचिस्मिता मिश्रा ने मूक-बधिर बच्चों को श्रवण यंत्र और छात्रवृत्तियां दीं।

ताइवान में लालटेन उत्सव : वहां के प्राचीन राजा सुन-वू-कुंग जैसी तेरह मीटर ऊंची लालटेन बनाई गई। →

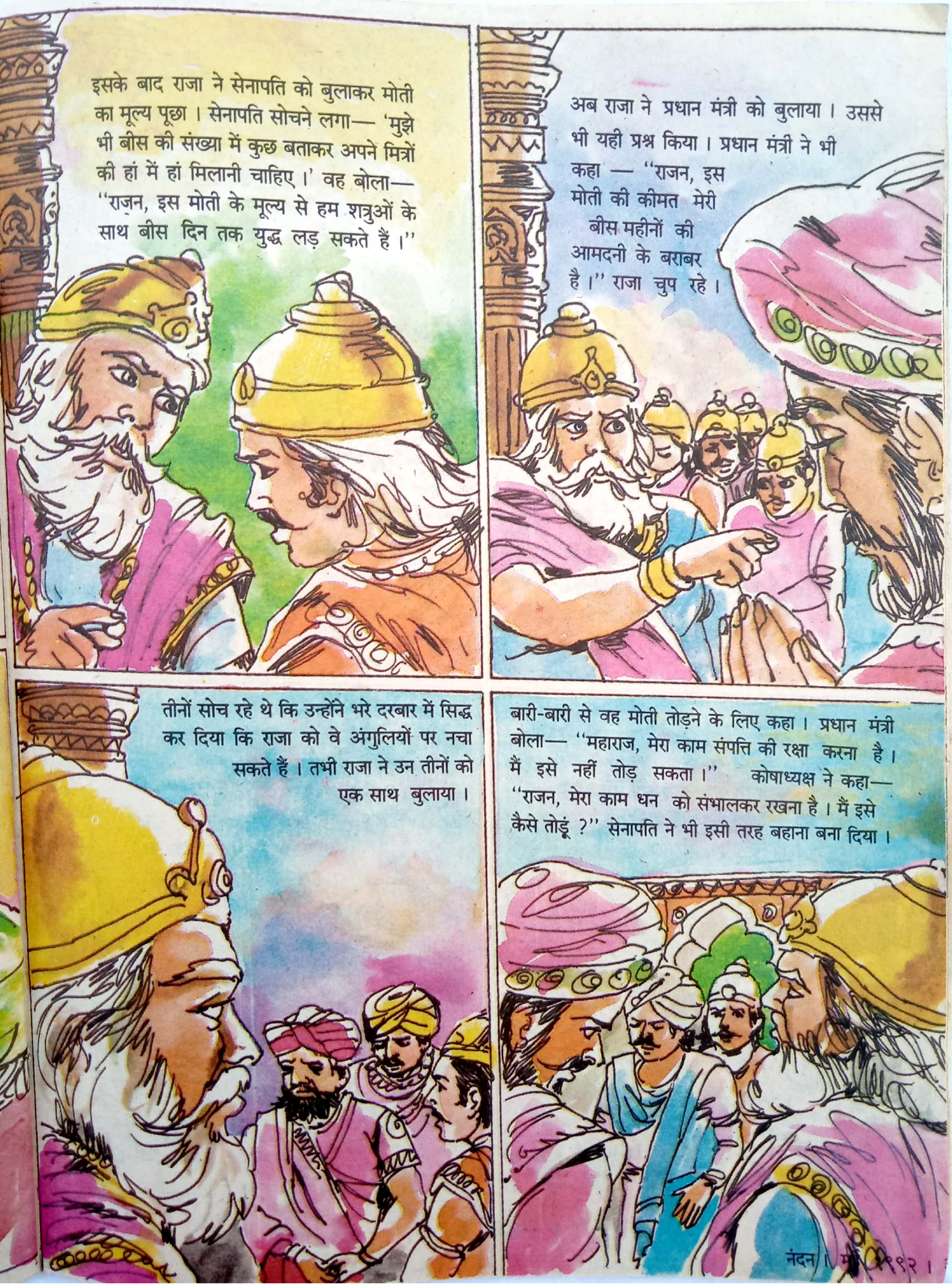




← बहरे लोगों का अनोखा टेलीफोन : इस पर संदेश दिया ओर पढ़ा जा सकता है।


तीन नहीं, एक हां
एक राजा था। उसके प्रधान मंत्री, सेनापति और कोषाध्यक्ष धूर्त थे। राजा बूढ़ा हो चला था। उसका बेटा अभी छोटा था। तीनों चाहते थे, किसी तरह प्रजा में बदनाम करके राजा को हटा दें।
राजा का एक मंत्री दीपंकर बड़ा स्वामिभक्त था। वह गुप्तचरों द्वारा सूचना इकट्ठी करके राजा को देता था। राजा को पता था कि ये तीनों बड़े अधिकारी उसके आदेशों के विपरीत काम करते हैं, मगर वह विद्रोह की आशंका से चुप रहता।
प्रजा पर अत्याचार बढ़ते गए, तो राजा ने कुछ करने की ठानी। एक दिन वह कुलगुरु के पास गया। उन्हें सारी बात बताते हुए कहा— "अब मुझे कुछ करना ही होगा। आप कोई उपाय सुझाएं।"
कुलगुरु ने कहा— "राजन, विपत्ति से डरना, उसे बढ़ावा देना है। आपको दृढ़ता के साथ इन धूर्तों को सबक सिखाना चाहिए।" यह कहकर कुलगुरु ने राजा को एक उपाय बताया।


एक दिन दरबार लगा था। सभी सभासद और अधिकारी उपस्थित थे। दोपहर हो गई, मगर राजा नहीं आए। सभी चिंतित थे। प्रसन्न थे वे तीनों दुष्ट अधिकारी। कह रहे थे— ''राजा अग़र इसी तरह दरबार में आना छोड़ दें, तो हम राज्य को अपने ढंग से चलाएं।''
तभी राजा का रथ दरबार के बाहर आकर रुका। सभी राजा की अगवानी के लिए खड़े हो गए। राजा दरबार में आकर सिंहासन के पास खड़े हो गए।
दरबारी सोच रहे थे— 'आज राजा सिंहासन पर बैठे क्यों नहीं?' तभी राजा ने अपनी जेब से एक बड़ा-सा मोती निकाला। सब हैरान थे।
राजा ने कोषाध्यक्ष को बुलाकर पूछा— ''इस मोती की क्या कीमत है?'' कोषाध्यक्ष ने बिना परखे ही कहा— ''राजन, खजाने में जितने मोती हैं, उनसे बीस गुनी कीमत है इस मोती की।'' वह सोचता था— 'राजा मोती का मूल्य क्या जाने। मैं जो कहूंगा, मान जाएगा।'


इसके बाद राजा ने सेनापति को बुलाकर मोती का मूल्य पूछा । सेनापति सोचने लगा— 'मुझे भी बीस की संख्या में कुछ बताकर अपने मित्रों की हां में हां मिलानी चाहिए ।' वह बोला— ''राज़न, इस मोती के मूल्य से हम शत्रुओं के साथ बीस दिन तक युद्ध लड़ सकते हैं ।''
अब राजा ने प्रधान मंत्री को बुलाया । उससे भी यही प्रश्न किया । प्रधान मंत्री ने भी कहा — ''राजन, इस मोती की कीमत मेरी बीस महीनों की आमदनी के बराबर है ।'' राजा चुप रहे ।
तीनों सोच रहे थे कि उन्होंने भरे दरबार में सिद्ध कर दिया कि राजा को वे अंगुलियों पर नचा सकते हैं । तभी राजा ने उन तीनों को एक साथ बुलाया ।
बारी-बारी से वह मोती तोड़ने के लिए कहा । प्रधान मंत्री बोला— ''महाराज, मेरा काम संपत्ति की रक्षा करना है । मैं इसे नहीं तोड़ सकता ।'' कोषाध्यक्ष ने कहा— ''राजन, मेरा काम धन को संभालकर रखना है । मैं इसे कैसे तोड़ूं ?'' सेनापति ने भी इसी तरह बहाना बना दिया ।


अब राजा ने दरबान को बुलाकर मोती का मूल्य पूछा । दरबान बोला— ''महाराज, मैं मूढ़ मोती का मूल्य क्या बता सकता हूं !'' राजा ने कहा— ''ठीक है, तुम इसके टुकड़े तो कर सकते हो ।'' दरबान बोला— ''हां, आप आज्ञा दें, तो मोती के टुकड़े कर सकता हूं ।''
राजा की आज्ञा पर, दरबान ने अपने लोहे के डंडे से मोती के टुकड़े-टुकड़े कर दिए । राजा ने फिर कहा— ''इसे कीमती मोती बताकर हमारे प्रधान मंत्री, सेनापति और कोषाध्यक्ष ने इसे तोड़ने से इंकार किया । फिर तुमने हमारे कहने पर यह कीमती मोती क्यों तोड़ दिया ?''
दरबान सिर झुकाकर बोला— ''महाराज, मेरे लिए आपकी आज्ञा का मूल्य, ऐसे सैकड़ों मोतियों से भी ज्यादा है ।'' राजा ने उसकी पीठ थपथपाते हुए दरबारियों से पूछा— ''क्या यह ठीक कहता है ?'' सभी ने एक स्वर से कहा— ''हां, महाराज ।''
''तब ये तीनों गलत थे ।''— कहते हुए राजा ने उन तीनों को तुरंत बंदी बनवाकर जेल भेज दिया । उनके स्थान पर दूसरी नियुक्तियां हुईं । इसके बाद सभी राजदंड का महत्व समझ, अपने-अपने कर्तव्यों का सही ढंग से पालन करने लगे ।

नहीं लड़ेंगे

—डा. भैरूंलाल गर्ग



मेवाड़ के ऊपरमाल के पठार पर किसी समय आलूहाड़ा नामक राजा का शासन था। उसकी राजधानी थी बमौदा।

एक दिन आलूहाड़ा शिकार खेलकर महल की ओर लौट रहा था। तभी मार्ग में एक चारण से उसकी भेंट हुई। चारण ने आलूहाड़ा की विरुदावली का बखान किया और जुहार की।

आलूहाड़ा ने कहा—"अभी तो मैं शिकार से लौट रहा हूं। आपको कुछ दे नहीं सकता। महल में आकर अपनी भेंट ले लेना।"

चारण बोला—"महाराज, मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता। आप मुझे अगर कुछ देना चाहते हैं, तो अपने सिर की पगड़ी दे दीजिए।"

यह अनोखी मांग सुनकर आलूहाड़ा असमंजस में पड़ गया। उसने सोचा-'चारण को अप्रसन्न करना ठीक नहीं। अगर कुछ नहीं दिया, तो भी ठीक नहीं।' उसने पुनः चारण से कहा—"आप इसके बदले में कीमती से कीमती चीज भी मांगेंगे, तो मैं देने को तैयार हूं, लेकिन पगड़ी ...।"

यह सुन, चारण चलने को हुआ। तभी आलूहाड़ा ने अपनी पगड़ी उतारकर चारण को दे दी और नंगे सिर ही महल की ओर चल पड़ा।

चारण पगड़ी लेकर जिधर से आया था, उसी ओर चल पड़ा। कुछ ही दिनों में वह घूमता हुआ मंडोर पहुंचा। वहां पहुंचकर, उसने मंडोर के राजा रामसिंह की विरुदावली का बखान किया। जुहार कर, उसे आशीर्वाद दिया। उस समय चारण के एक हाथ में आलूहाड़ा की पगड़ी थी। उसे देखकर मंडोर के राजा ने पूछा—"यह किसकी पगड़ी है और इसे तुमने हाथ में क्यों ले रखा है?"

चारण बोला—"यह आलूहाड़ा की पगड़ी है, जो संसार में किसी के सामने झुक नहीं सकती।"

चारण की यह बात रामसिंह को अच्छी नहीं लगी। उसने चारण के हाथ से पगड़ी छीनकर बाहर फेंक दी। चारण ने दरबार से बाहर आकर पगड़ी उठाई और तुरंत बिना कुछ कहे वहां से चल दिया।

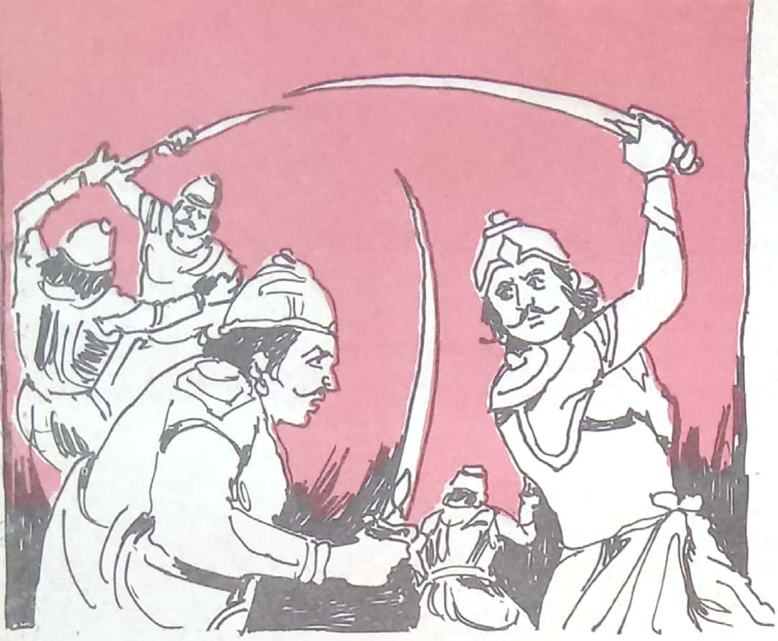
चारण मंडोर से सीधा बमौदा आया। उसने पगड़ी के अपमान की बात आलूहाड़ा को सुनाई। कहा—"मंडोर के राजा से इस अपमान का बदला आपको लेना ही होगा।"

यह घटना सुन, आलूहाड़ा कुछ क्षण के लिए मौन हो गया। फिर बोला—"मैंने कहा था, आप और कोई चीज मांगिए, लेकिन आपने किसी भी दूसरी चीज को मांगने और लेने से इंकार कर दिया। पगड़ी देने के बाद अब सिर देने की नौबत आ गई।"

चारण तो मंडोर के राजा से अपमान का बदला लेना चाहता था। एक समय चारण ने जब हाड़ा राजाओं की वीरता का बखान उसके सामने कर दिया, तो रामसिंह जल-भुन गया था। उसने फटकार कर, बिना कुछ दिए चारण को भरी सभा से निकाल दिया था। तभी से चारण ने संकल्प लिया था कि वह इसे हाड़ाओं की वीरता दिखाकर, अपने अपमान का बदला अवश्य लेगा।

अब आलूहाड़ा के सामने दो ही रास्ते थे। या तो वह मंडोर के राजा से युद्ध करे अथवा अपनी पगड़ी के अपमान का कड़वा घूंट पीकर चुप रह जाए। पर हाड़ा राजाओं को अपना स्वाभिमान अत्यंत प्रिय था।

आलूहाड़ा ने अपने वंश के सभी वीरों को आने के लिए संदेश भेजे। संदेश पाकर निश्चित तिथि को



पांच सौ शूरवीर बमौदा के दुर्ग में आकर एकत्र हुए। आलूहाड़ा ने उनकी सभा में वह सारी घटना कह सुनाई। यद्यपि मंडोर के राजा से युद्ध करना आसान नहीं था, लेकिन प्रश्न वंश मर्यादा और स्वाभिमान का था। सभी इस बात पर एकमत हो गए कि मंडोर के राजा को अपनी भूल का अहसास कराने के लिए युद्ध ही एकमात्र उपाय है। इसलिए युद्ध की तैयारी शुरू कर दी गई।

आलूहाड़ा के कोई लड़का न था। इसलिए उसने अपने भतीजे को गोद लिया था। इस समय उसको अपने प्राणों की चिंता न थी। चिंता थी उस भतीजे की, जिसको उसने अपना उत्तराधिकारी बनाया था। बमौदा के दुर्ग के भीतर एक सुदृढ़ महल था। दुर्ग के सात मजबूत दरवाजों को पार करने के बाद वह महल आता था। इसलिए यह महल पूर्ण रूप से सुरक्षित समझा जाता था।

आलूहाड़ा ने अपने उत्तराधिकारी युवक भतीजे को उस महल में बंद कर दिया। कुछ दिनों के लिए भोजन सामग्री की पूरी व्यवस्था कर दी। अन्य किसी भी आवश्यकता के लिए अपने विश्वासी सेवकों को वहां रख, दुर्ग के दरवाजों में ताले डलवा दिए। इस प्रकार अपने उत्तराधिकारी को पूर्ण रूप से सुरक्षित महल में छोड़, आलूहाड़ा उसकी ओर से निश्चिंत हो गया।

उधर पगड़ी का अपमान करने वाला, मंडोर का राजा भी असावधान नहीं था। उसे यह मालूम हो गया था कि चारण लौटकर आलूहाड़ा के पास गया है, इसलिए अब कुछ न कुछ होकर रहेगा। यह सोच, उसने भी अपने यहां सम्भावित युद्ध के लिए तैयारी शुरू कर दी।

राठौड़ राजा आलूहाड़ा से परिचित न था और न इस समय उसे आलूहाड़ा की कोई बात मालूम हो सकी।

आलूहाड़ा बड़ा विवेक सम्पन्न और दूरदर्शी था। मंडोर की अपेक्षा उसकी सैन्य शक्ति बहुत कम थी। इसलिए उसने बुद्धिमानी से काम लिया। वह अपनी सेना ले, मंडोर के राजा से युद्ध करने चल पड़ा। उसने सेना को मंडोर से पहले ही रोक लिया और सैनिकों को आवश्यक निर्देश दे दिए। अपने घोड़े पर सवार हो, घोड़े बेचने वाले के रूप में आलूहाड़ा ने रात के समय मंडोर में प्रवेश किया। उसने उसी रात मंडोर में विश्राम कर पता लगा लिया कि उसे आक्रमण किधर से करना चाहिए? मंडोर के सुरक्षा प्रबंध की भी जानकारी प्राप्त कर ली। प्रातःकाल होने से पहले ही वहां से चल दिया। अपनी सेना के पास जाकर सेनापति को सारी बात बता दी। मुंह अंधेरे ही आलूहाड़ा ने नगाड़े बजवा दिए। नगाड़ों की आवाज सुनकर राठौड़ राजा की नींद खुल गई। तभी उसके सेनापति ने आकर सूचना दी कि आलूहाड़ा अपने पांच सौ सैनिकों के साथ मंडोर पर आक्रमण करने आ पहुंचा है।

यह जानकर मंडोर के राजा ने भी निश्चय किया—'मैं भी अधिक सेना लेकर युद्ध नहीं करूंगा।' इसलिए वह पांच सौ राठौड़ सैनिकों की सेना लेकर आलूहाड़ा से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। दोनों ओर सैनिकों की संख्या बराबर थी। सेनाओं का आमना-सामना होते ही युद्ध आरम्भ हुआ। तभी एक युवक घोड़े पर बैठकर वहां आया। उसे देखकर, तुरंत आलूहाड़ा ने उससे कहा—"क्या तुम यहां पर हमारे वंश का अंत करने के लिए आए हो?"

उस युवक ने घोड़े पर बैठे हुए ही उत्तर दिया—"काका, इस युद्ध के समय, मैं महल में कैसे बैठा रह सकता था? क्या मेरी रगों में राजपूती खून

नहीं है ?''

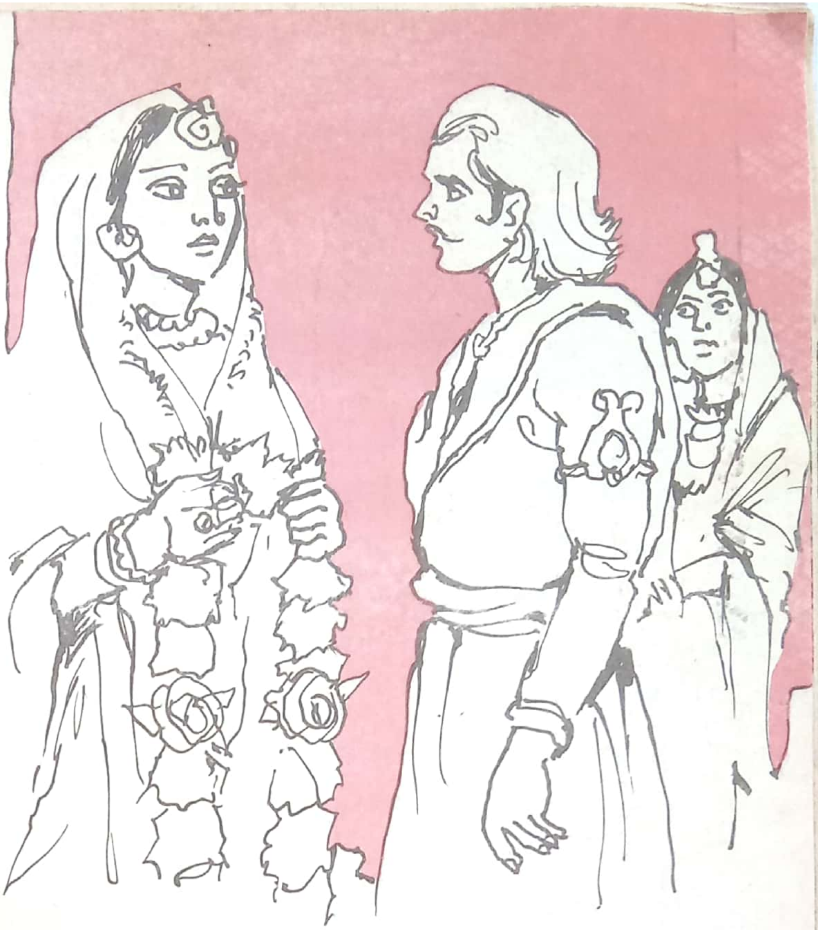
यह युवक आलूहाड़ा का वही भतीजा था, जिसके प्राणों को सुरक्षित रखने के लिए आलूहाड़ा ने बमौदा दुर्ग के साथ सुदृढ़ द्वारों में ताले लगवाए, फिर भी वह युद्ध करने आया था। आलूहाड़ा उसकी बात सुनकर चुप हो गया।

युद्ध आरम्भ हो चुका था। दोनों ओर के सैनिक अपने-अपने शत्रु सैनिकों का संहार कर रहे थे। थोड़ी ही देर में आलूहाड़ा के भतीजे हाड़ा युवक की तलवार के वार से राठौड़ सेनापति घायल होकर गिर पड़ा। उसके गिरते ही मंडोर के एक दूसरे राठौड़ सेनापति ने आकर युद्ध करना आरम्भ कर दिया।

यह दूसरा सेनापति भी हाड़ा युवक के हाथों मारा गया। तभी तीसरा राठौड़ सेनापति युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। युवक हाड़ा ने उसको भी मारकर गिरा दिया। इस प्रकार उस युवक के द्वारा पचीस राठौड़ सेनापति युद्ध में मारे गए। इसके बाद भी राठौड़ सेना का मनोबल नहीं टूटा। तभी एक नए सेनापति ने आकर राठौड़ सेना की बागडोर संभाली। उसने आते ही हाड़ा युवक पर तलवार का ऐसा वार किया कि उसके मस्तक के दो टुकड़े हो गए और उसका धड़ जमीन पर गिर पड़ा।

युवक के मारे जाने पर, हाड़ा सैनिक उत्तेजित हो उठे। वे दुगने जोश से युद्ध करने लगे। यह दृश्य मंडोर की राजमाता अपने महल में बैठी देख रही थी। उसे समझते देर न लगी कि हाड़ा युवक के मारे जाने के बाद युद्ध की परिस्थिति एकदम भयानक हो उठी है। उसे आशंका हुई कि विनाश निकट है। उसने तुरंत अपने पुत्र मंडोर के राजा रामसिंह को बुलवा भेजा। उसके आते ही राजमाता ने आदेश दिया—''बेटे, हाड़ा राजपूतों का साहस बेजोड़ है। ऐसे तो हमारे अपार जन-धन की हानि हो जाएगी। फिर युद्ध का कोई विशेष कारण भी तो नहीं है। अतः युद्ध बंद कर दिया जाए।''

तभी राजा रामसिंह को अपनी ग़लती का भी अहसास हुआ कि इस युद्ध का कारण तो वह स्वयं है। अगर वह हाड़ा राजा की पगड़ी का अपमान न



करता, तो आज उसे यह दिन न देखना पड़ता। उसके पचीस सेनापति और कई सैनिक बेकार ही मौत के मुंह में चले गए हैं।

उसने तुरंत अपनी मां के आदेश को शिरोधार्य कर, अपने सेनापति को युद्ध बंद करने का आदेश दिया। थोड़ी ही देर में राठौड़ राजा ने आलूहाड़ा के पास अपना संदेश भिजवा दिया। युद्ध बंद हो गया। सारा वातावरण शांत हो गया, तो मंडोर के राजा को मां ने समझाते हुए कहा—''बेटे, तुझे इस कलंक को हमेशा-हमेशा के लिए धो डालना चाहिए। अब मेरा आदेश है कि तू अपनी बहन का विवाह आलूहाड़ा के साथ करके, हाड़ा राजा से अपना पीढ़ियों का सम्बंध स्थापित कर। इसी में तेरा बड़प्पन है।''

मंडोर के राजा ने आलूहाड़ा को अपनी मां की इच्छा बताई। वह इस बात के लिए राजी हो गया। विवाह की तैयारियां शुरू हो गईं। शीघ्र ही शुभ मुहूर्त में मंडोर की राजकुमारी का विवाह आलूहाड़ा के साथ सम्पन्न हो गया।

आलूहाड़ा और उसके सैनिकों की बड़े सम्मान के साथ आवभगत हुई। जब आलूहाड़ा अपनी नई रानी के साथ बमौदा लौटा, तो बमौदा वासियों की खुशी का ठिकाना न रहा। ●

जंगल में नगर

— शान्ता ग्रोवर

एक बार पार्वती और शिवजी कैलाश पर्वत पर बैठे थे। तभी वहां नारद आ गए। बातों-बातों में नारद शिव से बोले— "प्रभो, बहुत दिन हो गए, आपने भूलोक का चक्कर नहीं लगाया। चलिए, भूलोक का हाल-चाल पता कर आएं।"

शिव बोले— "नारदजी, आपने अच्छी याद दिलाई। मैं खुद कई दिनों से ऐसा सोच रहा था। चलिए, अभी चलते हैं।" पार्वती बोलीं— "भगवन, मैं भी आपके साथ भूलोक घूमने चलूं?"

शिव बोले— "ना बाबा ना, मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जाऊंगा। तुम मुझे हमेशा किसी न किसी उलझन में डाल देती हो।"

नारदजी बोले— "प्रभो, जब यह कह रही हैं, तो इन्हें भी चलने दें।"

शिव ने कहा— "नारदजी, आपके कहने पर मैं इन्हें ले चलता हूं। यदि कोई बात हो गई, तो फिर आप मुझे दोष मत देना।"

शिव, पार्वती और नारद तीनों भूलोक पहुंचे। वे तीनों एक नगर से गुजर रहे थे। पार्वतीजी ने देखा कि कुछ स्त्रियां नदी के किनारे बैठी, पूजा कर रही हैं। उनसे रहा नहीं गया। वह शंकरजी से बोलीं— "प्रभो, तनिक ठहरें। मैं भी पूजा कर लूं।"

शंकर झुंझला उठे। बोले— "देवी, तुम नाहक ही समय व्यर्थ कर रही हो।"

नारद बोले— "भगवन, पूजा करने के लिए जाने दीजिए। हम आगे चलते हैं। यह बाद में हमारे साथ आ मिलेंगी।"

शंकर बोले—"जैसी तुम लोगों की मर्जी।"

पार्वती स्त्रियों की ओर बढ़ गईं। शंकर और नारद आगे चल पड़े। पार्वती उन स्त्रियों के पास पहुंचीं। उनसे पूछा— "आप सब किसलिए पूजा कर रही हैं?"

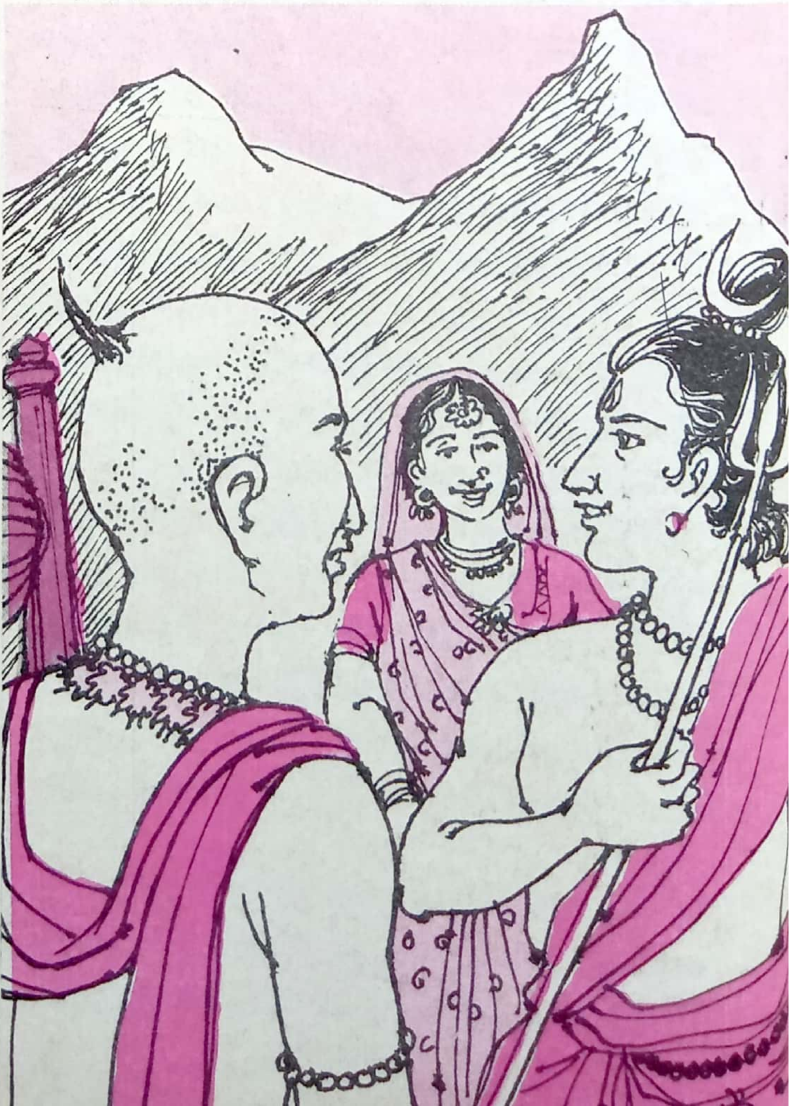
वे बोलीं— "हम अपने-अपने सुहाग की मंगलकामना के लिए पूजा कर रही हैं।"

पार्वतीजी वहां खड़ी उनकी पूजन-विधि देखती रहीं। जब स्त्रियां अपने-अपने घर चली गईं, तो पार्वती ने सोचा— 'मुझे भी भगवान शंकर के लिए पूजा करनी चाहिए।' यह सोचकर वह भी नदी के किनारे बैठ पूजा करने लगीं। उन्होंने रेत से शिवजी की प्रतिमा बनाई। फिर रेत से ही पूजा की सामग्री तैयार की। तभी उन्हें ध्यान आया कि उनके पास प्रसाद में चढ़ाने के लिए कुछ नहीं है। आसपास रेत पड़ी थी। उन्होंने रेत के लड्डू बनाए। लड्डू बन गए, तो पार्वती ने पूजा शुरू कर दी। शिवजी की प्रतिमा को रेत के लड्डुओं का भोग लगाया। पूजा कर पार्वतीजी भगवान शंकर के पास पहुंचीं। शंकरजी बोले— "देवी, आप पूजा कर आईं?"

— "जी प्रभो।"

— "आपने प्रसाद में किस चीज का भोग लगाया?"

पार्वतीजी हड़बड़ा गईं। कहा— "खीर का भोग लगाया था।"



"खीर कहां से मिली?"— शंकरजी ने हंसते हुए कहा।

पार्वतीजी ने यों ही कह दिया—"नदी तट पर आई स्त्रियों ने मुझे खीर दी थी। मैंने उसी से आपकी प्रतिमा को भोग लगाया था।"

शंकरजी बोले—"पार्वती, तुमने अकेले ही खीर खा ली? हमें भूल ही गईं। हम भी खीर खाना चाहते हैं। चलो, वहीं चलते हैं।"

पार्वतीजी सकपका गईं। बहाने बनाने लगीं। लेकिन शंकरजी कब मानने वाले थे। वह अड़ गए। तभी पार्वतीजी ने अपनी माया से उस जंगल में एक नगर बना दिया। शंकरजी व नारदजी के साथ वह चल पड़ीं। नगर में पहुंचते ही भगवान शंकर को बड़े-बड़े उद्यान, भवन दिखाई दिए। तभी उन्हें स्त्रियां आती दिखाई दीं। वे शंकर, पार्वती और नारद को भवन में ले गईं। उन्होंने उन सबको छककर खीर खिलाई। शंकरजी बोले— "पार्वती, खीर खाने में आज मजा आ गया। आज रात हम यहीं रहेंगे। कल सुबह यहां से प्रस्थान करेंगे।"

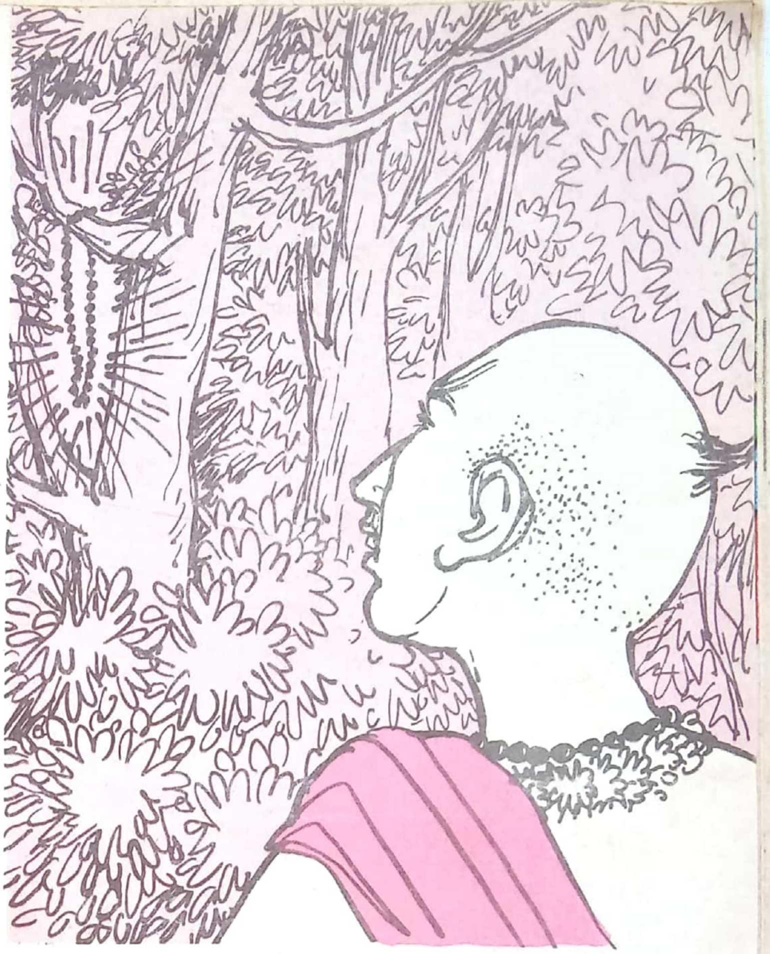
शंकरजी की बात सुनकर पार्वती घबरा गईं। सोचने लगीं— 'कहीं मेरी पोल न खुल जाए, इसलिए इन्हें यहां से ले चलना ही अच्छा रहेगा।'

पार्वती ने वहां रुकने से मना कर दिया। फिर आगे चल दीं। हारकर शंकर और नारद भी चल पड़े। जब काफी आगे चले गए, तो भगवान शंकर को ध्यान आया कि माला तो खीर खाते समय भवन में छूट गई है। वह बोले— "मेरी माला तो भवन में रह गई है। आप लोग यहीं ठहरो। मैं माला लेकर आता हूं।"

पार्वतीजी बोलीं— "प्रभो, आप कष्ट न करें, मैं अभी आपकी माला लेकर आई।"

शंकरजी बोले— "नहीं, आप नहीं जाएंगी। हम बहुत दूर निकल आए हैं। आप रास्ता भूल सकती हैं। मैं स्वयं जाऊंगा माला लेने।"

पार्वतीजी ने शंकरजी को बहुत रोका। पर उनके आगे पार्वती की एक न चली। नारदजी बोले— "भगवन, आप दोनों यहां ठहरें। मैं जाता हूं माला



लेने।"—यह कहकर नारदजी माला लेने चल पड़े।

नारदजी उस जगह पहुंचे। वह हैरान थे। क्योंकि वहां भवन, उद्यान की जगह अब घनघोर जंगल था। चारों तरफ हिंसक पशु घूम रहे थे। तभी घने बादल छा गए। चारों तरफ अंधकार फैल गया। जोरों से वर्षा होने लगी। बिजली कौंधने पर नारदजी को माला एक पेड़ पर लटकी दिखाई दी। उन्होंने माला उतारी। फिर शिव-पार्वती से मिलने चल पड़े।

हांफते हुए नारद पहुंचे शंकरजी के पास। शिव बोले— "नारदजी, आप हांफ क्यों रहे हैं?"

"प्रभो, जहां कुछ समय पहले भवन और उद्यान दिखाई दे रहे थे, अब वहां घनघोर जंगल है। वहां हिंसक पशु इधर-उधर घूम रहे हैं। बस, किसी तरह आपकी माला मिल गई।"

शिवजी ने मुसकराकर पार्वती की ओर देखा। बोले—"यह सब कुछ पार्वती की माया का फल है। मुझे खीर खिलाने के लिए इनको क्या कुछ नहीं करना पड़ा।"

फिर तीनों ने कैलाश पर्वत की राह पकड़ी। ●



अधूरी छतरी

— शान्ति अग्रवाल

वर्षों पहले की बात है। किसी नगर में एक सेठ रहता था। धनी होने पर भी उसमें घमंड नहीं था। कभी कोई याचक उसके द्वार से खाली हाथ नहीं जाता था।

एक बार की बात है। सेठ गहरी नींद सोया हुआ था। उसने स्वप्न में देखा कि एक दिव्य ज्योति कमरे में प्रकट हुई। उसी प्रकाश में उसे एक देवी की आकृति दिखलाई दी। सेठ ने हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया। बोला— "हेदिव्य-स्वरूपा ! आप कौन हैं ? क्या चाहती हैं ?"

तभी एक मधुर वाणी सेठ के कानों में गूंजी— "हे पुत्र ! मैं दुर्गा हूं। चाहती हूं कि तुम एक ऐसा सुंदर मंदिर बनवाओ, जिसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल जाए।"

"मेरा अहो भाग्य मां, जो मुझे आपके दर्शन हुए। मैं आज्ञा का पालन करूंगा।"— सेठ ने नतमस्तक होकर कहा। देवी अंतर्धान हो गईं। सेठ की आंख खुल गई। उसने सेठानी को जगाकर स्वप्न की बात सुनाई। सेठानी बोली— "हमारे धन्य भाग्य, जो मां दुर्गा हमारे घर पधारीं और मंदिर बनवाने की आज्ञा दी।"

सबेरा होते ही सेठ ने अपने मुनीम से ऐसे कलाकार की खोज करने को कहा, जो मंदिर का नक्शा बना सके। कुछ दिन बाद यह बात दूर-दूर तक फैल गई। कलाकार नक्शे बनाकर लाते और लौट जाते। पर सेठ को कोई नक्शा पसंद ही नहीं आता था।

एक दिन एक कलाकार ने चिढ़कर सेठ को एक सीधे-सादे किसान का नाम बताया।

सेठ ने उसकी बात को सच मानकर अपने सेवकों को उस किसान की खोज में भेज दिया। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते सेवक किसान के पास पहुंचे। उससे सेठ के मंदिर का नक्शा बनाकर देने को कहा, तो किसान चकित रह गया। बोला— "भैया ! मैं तो सीधा-सादा किसान हूं। मैं नक्शा बनाना क्या जानूं ?" पर सेवक कब मानने वाले थे। अंततः उनसे पीछा छुड़ाने के लिए उसने कह दिया— "अच्छा, मैं प्रयत्न करूंगा। तुम आठ दिन बाद आना।"

वह किसान था शंकर भगवान का भक्त। नित्य नियमानुसार एक दिन वह मंदिर में गया, पर उस दिन उसका मन बड़ा अशांत था। प्रतिमा के आगे हाथ जोड़े। प्रार्थना की— "हे भोलेनाथ ! यह कैसी मुसीबत मेरे गले पड़ गई ? मैं क्या करूं ? मुझे नक्शे के इस झंझट से मुक्ति दिलवाओ भगवन।" उसे लगा, जैसे कोई कह रहा है— 'वत्स, चिंता मत

करो। सब ठीक हो जाएगा।'

रात को भोजन आदि से निवृत्त होकर उसने पेंसिल से कागज पर कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें खींच दीं। फिर उन्हें सिरहाने रखकर वह सो गया। सवेरे उठकर देखा, वह हैरान रह गया। कागज पर नक्शा बना था। उसके मुंह से निकल पड़ा— ''हे परमात्मा ! तेरी लीला अपरम्पार है।''

आठ दिन बाद किसान नक्शा लेकर सेठ के पास पहुंचा। सेठ नक्शा देखकर फूला नहीं समा रहा था। अनेक कुशल कारीगरों को बुलाकर मंदिर का निर्माण-कार्य प्रारम्भ करवा दिया। सैकड़ों स्तम्भ, छतरियां, मेहराबें बनाई गईं, जिनकी शिल्प-कला देखते ही बनती थीं।

एक दिन यह समाचार वहां के राजा के कानों में भी पहुंचा। वह स्वयं मंदिर देखने जा पहुंचा। मंदिर की कला देखकर वह दंग रह गया। उसके मन में ईर्ष्या जाग उठी। उसने सेठ के पास संदेश भेजा कि इस मंदिर की एक छतरी वह बनवाएंगे। राजा ने कारीगरों को बुलवाया। उनसे कहा— ''इस मंदिर की एक छतरी तुम लोग बनाओ। पर उसका शिल्प शेष मंदिर के शिल्प से भिन्न होना चाहिए। ऐसा कि सेठ के पूरे मंदिर की शोभा उसके सामने फीकी पड़ जाए। लोग उसे भूलकर मेरे यश का गान करने लगें। मैं तुम्हें मुंहमांगा इनाम दूंगा।''

राजा के कहने की देर थी, कारीगर काम में जुट गए। कुछ ही दिनों में राजा की छतरी लगभग पूरी हो गई, तभी एक अनोखी घटना घटी। रात में कारीगर काम बंद करके सो गए। सवेरे उठे, तो देखा कि छतरी का आधा भाग गिरा पड़ा है। उनको काटो, तो खून नहीं। राजा ने सुना, तो शिल्पियों को खूब डांटा-फटकारा। पर वे हाथ जोड़कर बोले— ''महाराज ! इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। पता नहीं, यह कैसे टूट गई। अब हम छतरी पहले से भी मजबूत और सुंदर दोबारा बनाएंगे।''

लेकिन वे बार-बार छतरी बनाते और वह बार-बार गिर जाती। राजा और शिल्पी सभी परेशान थे। कारण कोई समझ नहीं पा रहा था। एक रात स्वप्न में राजा ने मां दुर्गा को देखा। मां दुर्गा ने उससे कहा— ''अरे राजा, तेरी छतरी कभी पूरी नहीं होगी, अधूरी ही रहेगी। इसमें शिल्पियों का दोष नहीं है। तू अहंकार और ईर्ष्या से प्रेरित होकर इसका निर्माण करवा रहा है। तेरे मन में मेरे भक्त को नीचा दिखाने की दुर्भावना है। अतः तुझे कभी सफलता नहीं मिलेगी।'' और वही हुआ, लाख प्रयत्न करने पर भी राजा की छतरी अधूरी ही रही। राजा अत्यंत लज्जित हुआ और उसने सेठ से क्षमा मांगी।

एक दिन स्वप्न में मां दुर्गा फिर प्रकट हुईं और सेठ से बोलीं— ''पुत्र ! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। मेरी इच्छा पूर्ण हुई। अब तू जो चाहे, मुझसे मांग ले।''

सेठ हाथ जोड़कर बोला— ''मां, मैं आपकी आज्ञा के अनुसार कार्य पूरा कर सका, इससे अधिक मुझे और क्या चाहिए?''

''यद्यपि तू कुछ नहीं चाहता, फिर भी मेरा आशीर्वाद है कि तेरा परिवार सदा सुखी रहेगा। तेरा नाम भी अमर रहेगा।''— इतना कहकर देवी अंतर्धान हो गईं।



चटपट

● पिता—चलो डाक्टर के पास। कुत्ते ने काटा है, चौदह टीके तो लगवाने ही पड़ेंगे।
बेटा— क्यों? शैतानी करे कुत्ता और सजा मिले मुझे! वाह, कैसा न्याय है?

● स्कूटर मालिक—माफ करना भाई, तुम्हें लिफ्ट नहीं दे पाऊंगा। मुझे कहीं और जाना है।
पड़ोसी—ठीक है, अपना स्कूटर ही दे दो।

● मां (फोन पर)—बेटा, बाजार से तुम्हारे लिए क्या लाऊं?
बेटा—मां, केवल एक दांत। क्योंकि पड़ोसी बंटू ने मेरा एक दांत तोड़ दिया है।

● अध्यापक—कुत्ता पालने से क्या लाभ है?—एक वाक्य में उत्तर दो।
छात्र—अनचाहे मेहमान घर नहीं आते।

● मोहन—मित्र, तुम तो बिल्ली पालने वाले थे। चूहा क्यों पाल लिया?
सोहन—क्योंकि चूहा पालने से बिल्ली खुद ही आ जाएगी।

● गोपाल—मैं नहीं जानता था कि तुम इतने मूर्ख हो।
राम—तभी तो मैं कहता हूं कि तुम बेवकूफ हो।

● एक आदमी—भाई, तुम इस मंदिर में हमेशा भगवान से वर्षा के लिए प्रार्थना क्यों करते हो?
दूसरा आदमी—क्योंकि मैं छातों का व्यापारी हूं।

● राजू—जब आदमी को डर लगता है, तो सिर के बाल खड़े हो जाते हैं।
सोनू—तब तो गंजे आदमियों को डर नहीं लगता होगा।

● बड़ा भाई—'नौ दो ग्यारह होना'—इसका मतलब क्या हुआ?
छोटा भाई—यही कि नौ और दो जमा हो जाएं, तो ग्यारह हो जाएंगे।

● रमा—जब बिल्ली की नजर खीर पर थी, तो तुमने बिल्ली से खीर कैसे बचाई?
विभा—मैंने खीर में मिर्च डाल दी थी।

● बड़ा भाई—कौन-सी चीज तुम देख सकते हो, लेकिन छू नहीं सकते?
छोटा भाई—तुम्हारे कान।

● मां— तुम्हें दो टाफियां खानी थीं, फिर तुमने दस टाफियां क्यों खरीदीं?
बच्चा— मुझे अपना होमवर्क कराने के लिए भइया-दीदी को भी टाफियां देनी पड़ती हैं।

● अजय— आजकल न जाने क्यों, चिड़ियाघर घूमने का मन कर रहा है।
विजय— अरे भाई! कभी-कभी भाई-बंधुओं की याद आती ही है।

● माली— बच्चे, तुम क्या कर रहे हो? देखा नहीं, सामने लिखा है— 'फूल तोड़ना मना है।'
बच्चा— इसीलिए मैं फूल न तोड़कर सिर्फ पौधा उखाड़ रहा हूं।

● दुकानदार— बच्चे, कौन-सी पुस्तक चाहिए?
बच्चा— जिसे पढ़ते ही परीक्षा में पास हो जाऊं।

● पिता— तुम कक्षा में पीछे बैठकर बार-बार सिर हिलाते रहते हो। क्या यह सच है?
बेटा— सोने के बाद मुझे कुछ पता ही नहीं चलता कि मैं क्या कर रहा हूं।

● बड़ा भाई— क्या तुम कक्षा में बहुत बातें करते हो?
छोटा भाई— और वे अध्यापक जो सारा दिन कक्षा में खड़े होकर बोलते हैं। आप उन्हें क्या कहेंगे?

● पिता— तुम्हारी मां कह रही थी कि तुम स्कूल से आते ही ऊधम मचाना शुरू कर देते हो?
बेटा— लेकिन मैं स्कूल से आने से पहले ऊधम कैसे मचा सकता हूं!

● मां— तुम्हें सारी कक्षा में भोलू ही क्यों अच्छा लगा?
बेटी— क्योंकि उसका नाम मुझे आसानी से याद हो गया।

● मछली (पानी पीती हुई चिड़िया से)— बहन, तुम कभी पानी में उतरकर देखो, बड़ा मजा आएगा।
चिड़िया— हां-हां, पहले तुम तो पानी से बाहर आओ।

तेनालीराम २८९

असली मालिक



राजा कृष्णदेव राय के दरबार में बड़ा विचित्र मुकदमा आया। दो परदेशी एक गठरी को ले, झगड़ते हुए आए। दोनों उस गठरी को अपनी बता रहे थे। राजा के अलग-अलग पूछने पर दोनों ने गठरी में बंधी वस्तुओं के बारे में भी सही-सही बताया।

राजा ने काफी पूछताछ की। सब बेकार। दोनों के उत्तर एक जैसे ही थे। राजा परेशान, दरबारी परेशान। ऐसे में गठरी का असली मालिक किसे बताएं? मामला हल न हुआ, तो मंत्री को अवसर मिला। तेनालीराम का नाम सुझा दिया। राजा भी बोले— "हां, तेनालीराम ही इस मामले को हल करे।"



तेनालीराम अपने आसन से उठा। गठरी पर नाक लगाकर कुछ सूंघने लगा। फिर वह बारी-बारी से दोनों परदेशियों के पास गया। हरएक के चारों ओर घूमकर उन्हें भी देर तक सूंघता रहा। फिर बोला— "महाराज, गठरी के असली मालिक का पता चल गया है। किंतु फैसला कल दूंगा। तब तक इन दोनों को अतिथिशाला में ठहरा दिया जाए।"



राजा मान गए। दोनों परदेशियों को अतिथिशाला में ठहरा दिया गया।



अगले दिन मुकदमा फिर पेश हुआ, किंतु दोनों में से एक गायब था। राजा ने सैनिकों से उसे खोजकर लाने के लिए कहा। तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला— "महाराज, अब वह कहां मिलेगा? वह तो रात को ही अतिथिशाला से भाग गया। मैंने तो सूंघने का नाटक ही किया था, मगर वह झूठा था। डर गया कि उसे पहचान लिया गया है।"

राजा जोर से हंसे। गठरी उसके असली मालिक को लौटा दी गई। पूरे दरबार में तेनालीराम की खूब वाहवाही हुई।



अब पेश हैं
मिस्टर लंबू
कैप्टन तूफ़ान
चैंपियन चान
रसना
का
धमाल
नया रसना कोला कोला
रसना की एक ज़ोरदार पेशकश!
रसना कोला कोला.
क्या सनसनाता ज़ायक़ा!
क्या मज़ेदार स्वाद!
ठंडा ठंडा पीजिए. मस्ती में झूमिए.
6 ग्लास वाले छोटे पैक में भी
रसना
कोला
कोला
NEW REFRESHING Rasna
COLA COLA
IS 13019
एक ग्लास = 180 मि.लि.
आपकी नज़दीकी दुकान पर उपलब्ध. आज ही ले आइए. पीजिए पिलाइए.
Mudra: A: EAMR: 5880: HN

कवि एक रंग अनेक

विनोद-चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'



मिठाइयों की रानी

बच्चो, ले लो बाल मिठाई।
इसमें खोया, इसमें चीनी
इसकी गंध बड़ी ही भीनी,
कौन नहीं जिसको यह भाई।

चमक रहे हैं सुंदर दाने
लगते सबको खूब सुहाने,
करते इसकी सभी बड़ाई।

चाकलेट-सा स्वाद निराला
खुश होता हर खाने वाला,
अल्मोड़े से है यह आई।

यह मिठाइयों की है रानी
है सबकी जानी-पहचानी,
इसकी महिमा सबने गाई।

गरम-गरम

लो मूंगफली, लो मूंगफली।

यह खस्ता और करारी है
सारे मेवों से न्यारी है,
है मजेदार, जायकेदार
लगती है अच्छी और भली।

इसका तो स्वाद निराला है
कर देता मन मतवाला है,
है ताजी-ताजी, गरम-गरम
है खूब भुनी, है खूब तली।

अखरोट यही, बादाम यही
देती काजू का काम यही,
सबको ही स्वस्थ बनाने को
किस धूमधाम के साथ चली।

सब ओर इसी का जोर हुआ
हर ग्राम-नगर में शोर हुआ,
ऐसी आई इसकी बहार
दुकान लग गई गली-गली।

कबूतर

भले कबूतर
चले कबूतर,
बड़े प्यार से
पले कबूतर।

जुड़े कबूतर
मुड़े कबूतर,
आसमान में
उड़े कबूतर।

इधर कबूतर
उधर कबूतर,
जाने कब हैं
किधर कबूतर।

डोल कबूतर
बोल कबूतर,
देते हैं रस
घोल कबूतर।



निराला टेलीविजन

यह टी.वी रंगीन निराला
जिसने टेलीविजन बनाया
कैसा चमत्कार दिखलाया,
उसने बुद्धि और कौशल से
आविष्कार नया कर डाला
यह टी.वी रंगीन निराला।

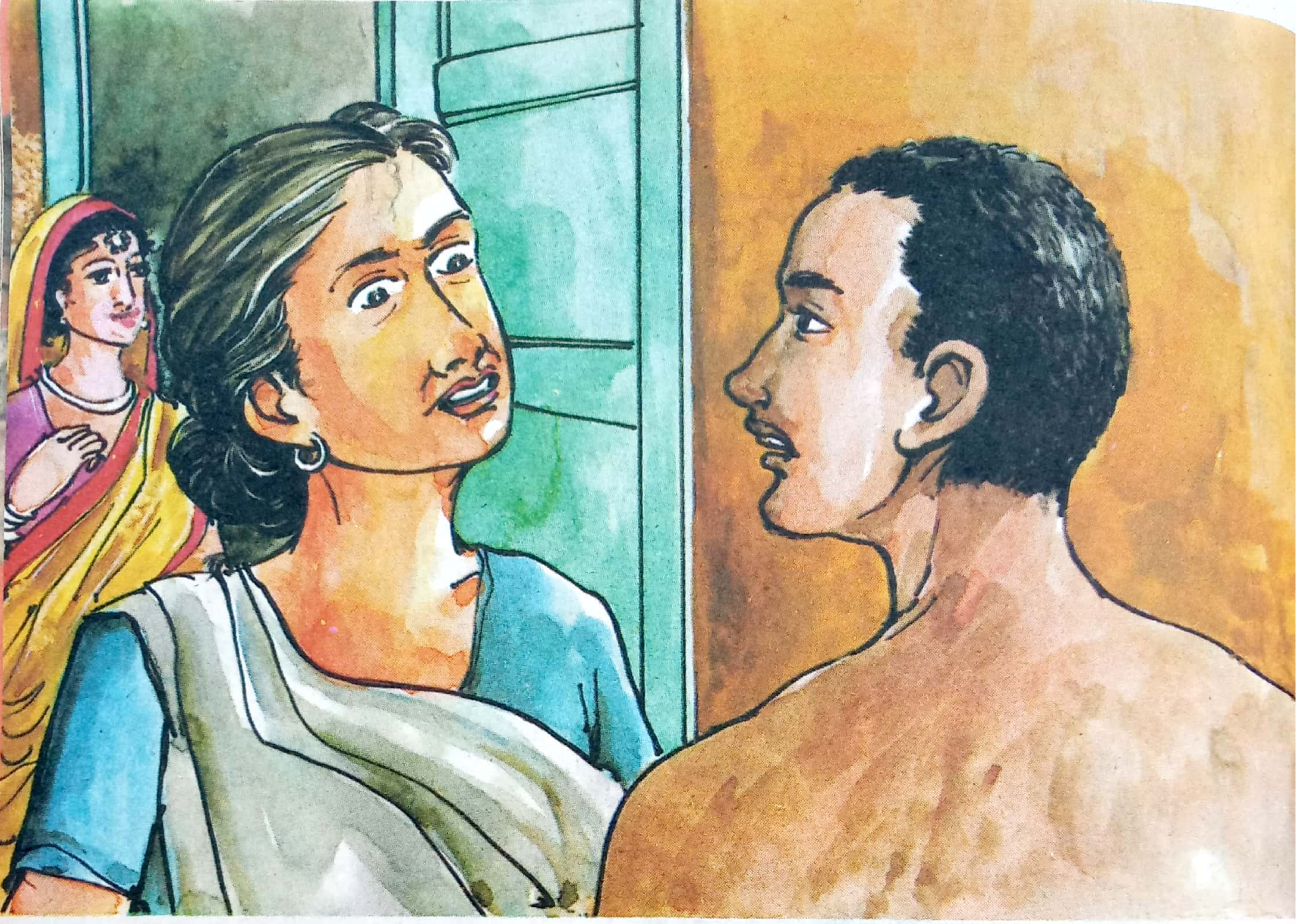
रूप-रंग मन हर लेता है
खुश हम सबको कर देता है
देख देन विज्ञान की
होता कौन नहीं मतवाला
यह टी.वी रंगीन निराला।

जो है दूर सामने आता
सीधे अपनी बात बताता
तरह-तरह के कार्यक्रमों से
है यह ज्ञान बढ़ाने वाला
यह टी.वी रंगीन निराला।



सलोने खिलौने

खिलौने, खिलौने, खिलौने
सभी एक से एक, हैं ये सलोने।
कई ढंग वाले, कई रंग वाले
गुलाबी, हरे, बैंगनी, लाल, काले।
रबड़ के मुलायम हिरन, शेर, हाथी
बनेंगे तुम्हारे सभी मित्र-साथी।
घड़ी, साइकिल, कार, मोटर निराली
रखी रेलगाड़ी अजब चाल वाली।
करो खेल इनसे, करो खेल इनसे
करो मेल इनसे, करो मेल इनसे।



मान जा भाई

— शंकर दयाल सिंह

किसी गांव में एक जुलाहा रहता था। वह परले सिरे का कायर और मूर्ख था। एक दिन उसकी मां ने उसे निमकी और खजूर की पोटली थमाते हुए ससुराल जाने को कहा। बोली— "सावधानी से ससुराल में रहना। अपने साथ किसी दूसरे को मत ले जाना।"

जुलाहे ने हामी भरी। ससुराल के लिए रवाना हो गया। ससुराल पश्चिम दिशा में थी। संध्या का सूरज उसके सामने की ओर था। उसने मां की बात याद कर, पीछे की ओर देखा कि कोई साथ तो नहीं आ रहा है। उसे अपनी परछाई दिखाई पड़ी। वह पीछे घूमा और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। परछाई से बोला— "भाई, मेरी मां ने मुझे अकेले जाने को कहा है। तुम लौट जाओ। तुम्हें भूख लगी हो, तो मेरे नाश्ते में से आधा ले लो।" यह कहकर उसने अपनी पोटली में से आधी निमकी और खजूर पीछे की ओर फेंक दिए। फिर तेजी से आगे बढ़ा।

कुछ दूर आगे जाने पर जुलाहे ने फिर पीछे की ओर देखा। इस बार भी उसे अपनी परछाई साथ चलती दिखाई दी। वह गिड़गिड़ाकर उससे बोला— "भाई, मान जा, मान जा। ससुराल से लौटते समय, तुम मेरे साथ हो लेना। लेकिन इस समय तो मेरा पीछा छोड़ दो। तुम्हारे पास पहनने को कुछ नहीं है, तो यह कुर्ता ले लो।"— कहते हुए जुलाहे ने अपना कुर्ता निकालकर पीछे की ओर फेंक दिया। फिर आगे बढ़ा।

कुछ और आगे बढ़ने पर उसने फिर पीछे देखा। परछाई और लम्बी दिखाई पड़ी। उसने इस बार उसे अपना छाता दे दिया। इसी भांति एक-एक कर उसने परछाई को अपना सारा सामान दे दिया। सूरज डूब जाने पर परछाई ने उसका साथ छोड़ दिया। जुलाहा बड़ा प्रसन्न हुआ।

किंतु अब उसके बदन पर सिवा एक पायजामे के

और कुछ शेष नहीं रह गया था। उसी वेश में रात गए वह अपनी ससुराल पहुंचा। उसकी सास ने दामाद का ऐसा हाल देखा, तो घबरा उठी। पूछने लगी— "क्या हुआ ?"

मूर्ख जुलाहे ने यहां अपनी अक्ल का घोड़ा दौड़ाया। सास को झूठ-मूठ कह दिया कि रास्ते में डकैतों ने उसे पकड़ लिया था। उसके पास जो भी सामान और कपड़े-लत्ते थे, सब उन्होंने छीन लिए।

उसकी सास ने कुछ पुराने कपड़े लाकर उसे दिए। जुलाहे ने वे पहने। फिर उसके लिए खाना लाया गया। मां-बेटी ने अपने लिए चार रोटियां पकाई थीं। चारों रोटियां जुलाहे को दे दीं। जुलाहे ने उनमें से दो रोटियां निकाल दीं और दो ही खाईं।

सास ने समझा— हो न हो, दामाद जी ज्योतिष जानते हैं। इसीलिए उन्होंने हम दोनों के लिए एक-एक रोटी निकाल दी।

दूसरे दिन पास-पड़ोस में मां-बेटी ने बातों ही बातों में यह चर्चा फैला दी कि जिस बात को कोई नहीं जानता, उसको जुलाहा जान जाता है।

उसी गांव के धोबी का एक गदहा खोया हुआ था। कई जगह उसने खोज की, पर मिला नहीं। जुलाहे की प्रशंसा सुनकर वह रोता-कलपता उसके पास आया। अपने गदहे के बारे में बताने को कहा।

उसी दिन जुलाहा सवेरे-सवेरे टहलने के लिए गया था। अरहर के एक खेत में उसे एक मोटा-ताजा गदहा दिखाई पड़ा। जुलाहे ने सोचा— 'वही गदहा इस धोबी का होगा।' बस, उसने झूठ-मूठ का ढोंग रचा। फिर बोला— "गदहा गांव के दक्षिण, अरहर के खेत में होना चाहिए।"

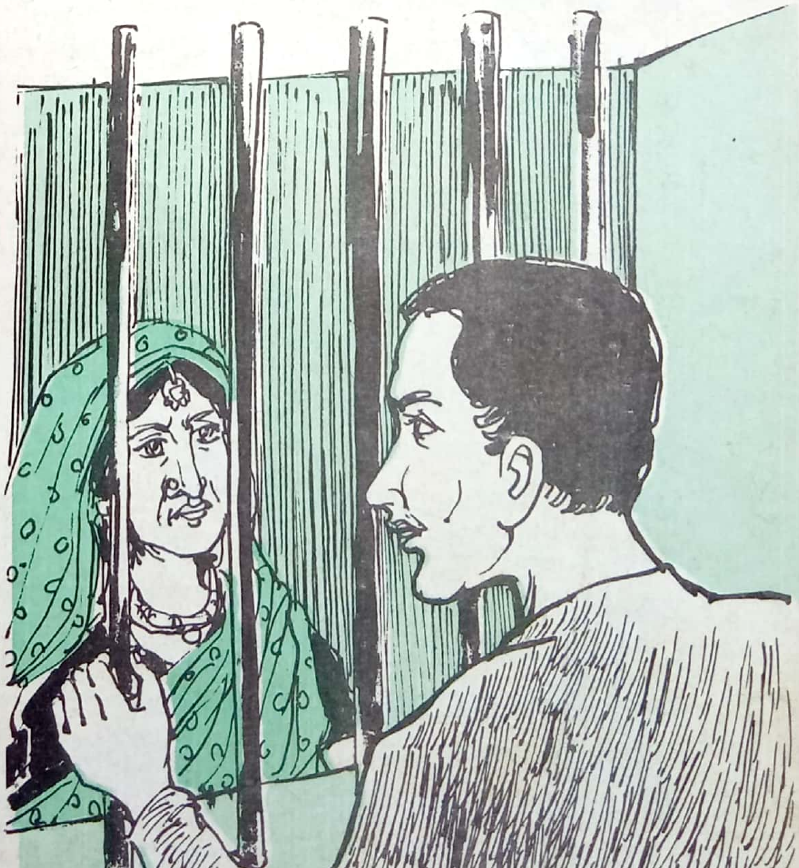
धोबी को गदहा मिल गया। राज्य भर में जुलाहे का नाम फैल गया। संयोग की बात, उस राज्य की रानी का नौलखा हार किसी ने चुरा लिया था। इसके लिए बहुत अधिक खोज-बीन की गई। पंडितों और ज्योतिषियों को भी बुलाया गया। परंतु हार नहीं मिला।

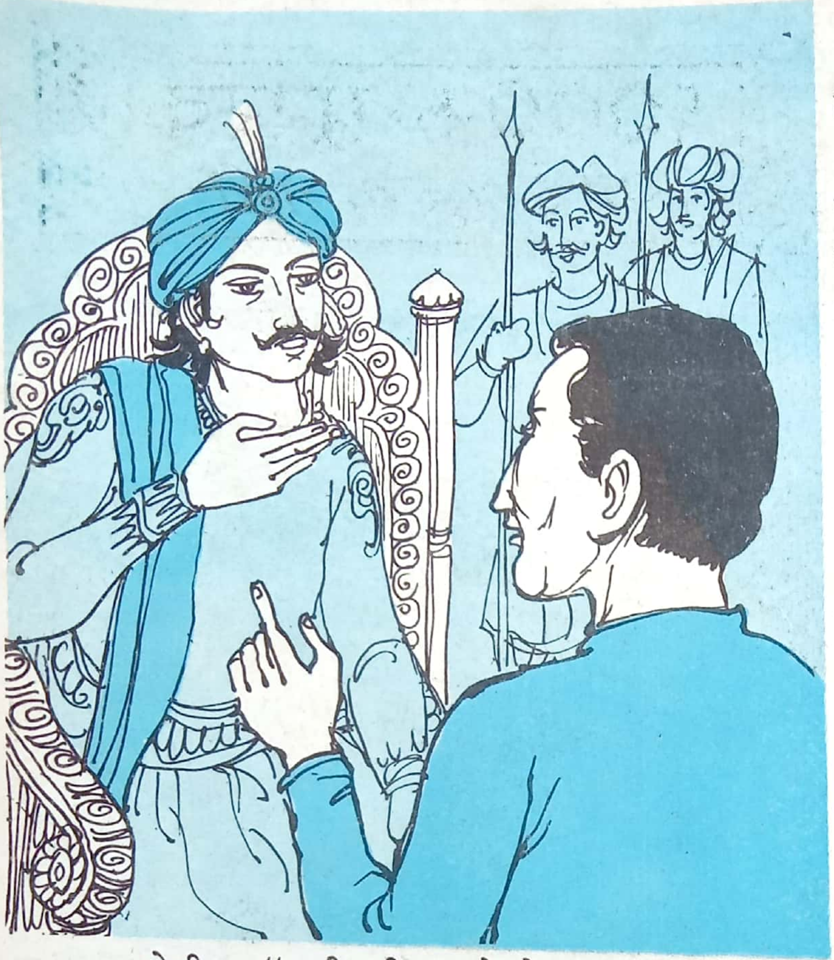
इसी बीच राज दरबार में जुलाहे की खबर पहुंची। फौरन दो सिपाही जुलाहे को लाने के लिए चल पड़े। जुलाहे ने बहुत आनाकानी की, पर उसे दरबार में आना ही पड़ा।

राजा ने उससे रानी के हार का पता लगाने को कहा। कांपते-सहमते ज़ुलाहे ने तीन दिन की मोहलत मांगी। मगर राजा चतुर था। उसने सोचा— 'मोहलत ले, यह भाग न जाए।' इसलिए उसने एक दिन की मोहलत भी न दी। जुलाहे को जेल में बंद कर दिया गया। रात भर वह अपने को कोसता रहा— 'नौलखिया, मेरी जान गई।'

नौलखा हार को चुराने वाली राजमहल की ही दासी नौलखिया थी। उसको भी उस रात नींद नहीं आ रही थी। उसने जुलाहे की काफी प्रशंसा सुनी थी। वह जेल के दरबान से मिलकर जुलाहे वाली कोठरी के पास छिपी देख रही थी कि आखिर जुलाहा क्या करता है। उसने अपना नाम सुना, तो समझ गई कि जुलाहे ने चोरी की बात जान ली है। वह जुलाहे के पास पहुंची

वह घबराई हुई, गिड़गिड़ाती हुई जुलाहे से





बोली— "फकीर जी, आपने तो जान ही लिया है, किंतु अब किसी प्रकार मेरी जान की रक्षा करो।"

जुलाहे को बात समझते देर न लगी। उसने दासी पर खूब रोब गांठा। दासी ने उसे बताया कि वह नौलखा हार महल के पश्चिम वाले कूड़ा-करकट के ढेर में दबाकर रखा हुआ है।

दूसरे दिन जुलाहा दरबार में हाजिर किया गया। सभी समझ रहे थे कि आज यह जान से हाथ धोएगा। मगर जुलाहे ने रंग जमाने के लिए खूब लोबान जलाया। बहुत देर तक आंखें बंद किए, बैठा कुछ गुनगुनाता रहा। उसके बाद पश्चिम की ओर मुंह करके खड़ा होकर बोला— "चोर का नाम कोई न पूछे। महल के पश्चिम की ओर कूड़ा-करकट का ढेर है। उसी में चोर ने हार छिपा दिया है।"

कूड़ा-करकट हटाया गया, तो नौलखा हार बाहर निकल आया। जुलाहे की बन आई। उसको काफी पुरस्कार और सम्मान दिया गया। साथ ही वहीं रहने की व्यवस्था भी कर दी गई।

पर इस तरह जुलाहे की जान कब तक बचती। कुछ ही दिनों तक वह आराम की सांस ले पाया होगा कि पड़ोसी राजा ने वहां के राजा पर चढ़ाई कर दी।

राजा घबरा गया। मंत्री परिषद ने सलाह दी कि दुश्मन को जीतने में फकीर साहब की मदद ली जाए। राजा ने जुलाहे को हुक्म दिया कि वह दुश्मन को भगाए। फौज के आगे-आगे चले।

जुलाहे को काटो तो खून नहीं। पर करता क्या? घोड़ा चुनने वह अस्तबल की ओर चला।

अस्तबल में पहुंचकर एक दुबले-पतले घोड़े को देखा, तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसे विश्वास हो गया कि अब मेरी जान बची। कारण, फौज के सभी बढ़िया घोड़े उससे आगे निकल जाएंगे। सबकी आंखें बचाकर वह निकल भागेगा।

निश्चित समय पर कूच का डंका बजा। आगे-आगे जुलाहा। पीछे-पीछे फौज। मगर उस दुबले-पतले घोड़े में भी गजब की फुर्ती थी। जुलाहे का पीठ पर बैठना था कि घोड़ा हवा से बातें करने लगा। जुलाहे के प्राण आसमान में टंग गए। दौड़ते हुए उसने यह सोच कि कहीं गिर न पड़े, ताड़ के एक पेड़ को पकड़ लिया। ताड़ का पेड़ पुराना और कमजोर था। वह उखड़ गया। जुलाहे के कवच में फंस जाने के कारण घोड़े के साथ वह भी घिसटने लगा।

अब तो बेचारा जुलाहा दो-दो मुसीबतों में फंस गया। मौत उसके सामने नाचने लगी।

उधर, दुश्मन की फौज ने जब समूचे ताड़ को उठाए जुलाहे को अपनी ओर आते देखा, तो उसके होश गायब हो गए।

सारी फौज में तहलका मच गया। देखते ही देखते मैदान साफ हो गया।

जब जुलाहे की ओर वाली फौज पहुंची, तब तक शत्रु पक्ष की फौज भाग चुकी थी। जुलाहे को घोड़े ने जमीन पर पटक दिया था। वह अपनी कमर पर हाथ रखकर खड़ा था। फौज जब उसके पास पहुंची, तो वह चहकता हुआ राजा से बोला— "भला इतनी फौज की क्या जरूरत थी? मेरी तपस्या क्या बेकार चली जाती? मैं अकेला ही इन सब के लिए काफी था।"

राजा ने जुलाहे को काफी सम्मान दिया। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अहा,— की कितनी सुंदर कुटिया है यह! (फूलों/फूस)

२. महाराज, यह — एकदम नया है। (रथ/पथ)

४. —योद्धाओं ने मिलकर उसे घेर लिया। (सात/साठ)

६. देखना, अभी इस —का नामोनिशान नहीं रहेगा। (जादू/जाले)

७. —की सवारी कोई आसान बात नहीं। (शेर/कार)

८. ताज्जुब है, तुम इस —का क्या करोगे! (चूहे/चूड़ी)

९. अरे मित्र, तुम— क्यों गए? (चौंक/रुक)

११. सचमुच, कितने सुंदर हैं ये—। (मोर/मोती)

१२. गरमियों में खिलते हैं मीठी गंध वाले ये फूल।

ऊपर से नीचे

३. मैं यह— कुरता नहीं पहनूंगा बाबू जी। (ढीला/पीला)

५. आज से ही— की तलाश शुरू कर दो सत्यव्रत! (गुरु/गुफा)

१०. भारत का पड़ोसी देश।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २८१

नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____



नं. ज्ञा. प. २८१

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने एवं लेखन में रुचि :

१. दिलीपकुमार, १५ वर्ष, रामसागर राय, जंदाहा, अरनियां, वैशाली; २. विनीत गोयल, १४, १२९ ए/आर न्यू कालोनी, पलवल, फरीदबाद; ३. अमिताभ राजीव, १६, रामजतन शर्मा, लखी बाग, भानपुर, गया; ४. अभिजीत कुमार, ८, ९०/एम. रानी शंकरी लेन, कालीघाट, कलकत्ता; ५. पीयूषरंजन, ११, अशोककुमार पाठक, फारबिसगंज, पूर्णिया; ६. सुनील तिवारी, १५, २०२-बी, काजी खेड़ा, हरजिंदर नगर, कानपुर; ७. विकासकुमार, १२, गोपाल सिंह, सी.एम.आर.एस. गेट, आनंद कालोनी,वरटांड, धनबाद; ८. रिंकू गुप्ता, १६, संतलाल गुप्ता, सब्जी मंडी, लालगंज, रायबरेली; ९. गौरवकुमार १०, डी/५०-ए, गली नं. १०, ब्रह्मपुरी, दिल्ली; १०. नलिन श्रीवास्तव, १०, चंद्रभाल श्रीवास्तव/ जे-३ न्यायालय परिसर, मथुरा; ११. सविता कुमारी शर्मा, १६, म. नं. ४७४, टिस्को बारीडिह, जमशेदपुर; १२. मुकेशकुमार, १३, एच-१ नूतन कालोनी, बिलासपुर; १३. सुदर्शन भटनागर, १४, ५१ गोगावत वाड़ी, उदयपुर (राज.); १४. संतोषकुमार, १५, सिद्धेश्वर पंडित, ग्रा. सिखारी चक, पो. मोकामा घाट, पटना; १५. अतुल सक्सेना, १२, एम.पी. सक्सेना, दूरभाष केंद्र, कासगंज; १६. रविरंजन पांडेय, १५, वशिष्ठ पांडेय, ग्रा.+पो. रामनगर, प. चम्पारण; १६. अमितकुमार शर्मा, १५, ११७ अहीर पाड़ा, खुर्जा, बुलंदशहर; १८. ऋषि मुखर्जी, १५, प्रभाषकुमार मुखर्जी, भूमि संरक्षण कार्यालय, साहिबगंज (बि.); १९. मनमीत सुमन, १२, २४/८ त्रिलोकपुरी, दिल्ली; २०. हिमांशु अग्रवाल, १०, गुप्ता फोटोग्राफर्स, फड़ बाजार, बीकानेर।

खेल, संगीत एवं चित्रकला में रुचि :

१. वैभव रस्तोगी, १५ वर्ष, ३९-ए, पाकेट-बी, हरिनगर, दिल्ली; २. शालू, १७, ९२८-बी पंचकूला; ३. सुनीलकुमार, १३, ग्रा.+पो. सिमर बाड़ा, वैशाली; ४. अरुणदीप त्रिपाठी, १४, २४ डी-२ यशोदानगर, कानपुर; ५. जीवनकुमार सिंह, १४, २७१ एल.आई.जी. न्यू हाउसिंग कालोनी, आदित्यपुर-२, जमशेदपुर; ६. शिवानी कौशिक, ६, बृजकिशोर, किंडर गार्डन रोड, छपरा; ७. हरीशचंद्र पाठक, १२, हिंदुस्तानी आर्ट कालेज, अमीनाबाद रोड, गणेश गंज, लखनऊ; ८. गणेशकुमार मलिक, १२, वार्ड-१६, पटनिया टोला, साहिबगंज (बि.); ९. श्यामवीर सिंह, १६, सरनाम सिंह, ग्रा.+पो. कुरसंडा, मथुरा; १०. अभिषेक अग्रवाल, ८, विष्णुकुमार अग्रवाल, पो. कतरास बाजार (बि.)।

दस बरस बाद

—रवि दिवाकर



महाराजा विजयसिंह का इकलौता बेटा था राजकुमार जगतसिंह। एक दिन वह महल में सोया हुआ था कि रात को न जाने क्या हुआ, सवेरे वह अपने पलंग से गायब पाया गया। उसकी देखभाल में नियुक्त बांदी रतना से काफी पूछताछ की गई। दंड का भय भी दिखाया गया, लेकिन वह सिर्फ रोती रही। यही कहती रही— "मुझे कुछ मालूम नहीं है।"

दस बरस का समय बीत गया। प्रजा राजकुमार को भूलने लगी, लेकिन राजा के मन में एक कांटा-सा हर घड़ी चुभता रहता था।

उनका मंत्री क्रूरसिंह पक्का अवसरवादी था। ऐसे में उसकी आंखें विजयपुर के राज्य पर लगी थीं। बाहर से वह बहुत मीठा और चापलूस था। उसने राजा पर ऐसा सिक्का जमा रखा था कि राजा सिवाय उसके और किसी पर यकीन ही नहीं करते थे।

क्रूरसिंह की हरकतों पर सिर्फ एक आदमी को ही शक था और वह आदमी था उप सेनापति शंकरसिंह। एक दिन उसने सेनापति शिवसिंह के साथ क्रूरसिंह की बातचीत का कुछ अंश सुन ही लिया। क्रूरसिंह शिवसिंह से कह रहा था— "देखो, अब ज्यादा समय नहीं है। राज्य की बागडोर जल्दी ही मेरे हाथ में आ जाएगी। बूढ़े राजा को ठिकाने लगाने का काम तुम्हें करना है। जब भी मैं इशारा करूं, उसे तुम साफ कर देना। रतना जगत के बारे में जानती है। उसे भी खत्म करा देंगे।"

शंकरसिंह क्रूरसिंह की बातें सुनकर एक बार तो कांप उठा। फिर वह क्रोध में भर उठा। मुट्ठियां तन गईं। आंखें लाल हो गईं।

घोड़ा दौड़ाते हुए शंकरसिंह रतना के घर पहुंचा। घोड़े से उतर, दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुला। वह सीधा रतना के कमरे में घुस गया।

शंकरसिंह ने क्रूरसिंह और सेनापति शिवसिंह दोनों की सारी बातें रतना को बता दीं। सुनकर रतना को पसीना आ गया। भय से कांपती हुई बोली—"अब क्या होगा?"

शंकरसिंह ने उसे दिलासा दिया—— "घबराओ नहीं, तुम मेरे साथ घोड़े पर बैठो। मैं तुम्हें सुरक्षित स्थान पर छोड़ देता हूं, जहां क्रूरसिंह कभी नहीं पहुंच सकता।"

रतना को लेकर शंकरसिंह एक निर्जन स्थान पर बनी झोंपड़ी में आया। झोंपड़ी में एक साधु रहता था। वहां पहुंचकर उप सेनापति ने साधु से कहा— "जंगू बाबा, इस औरत को संभालकर रखना। इसके यहां होने की खबर हवा को भी नहीं मिलनी चाहिए।"

रतना ने शंकरसिंह को राजकुमार जगतसिंह का पूरा पता - ठिकाना बता दिया था। रतना को साधु बाबा के पास छोड़कर शंकरसिंह ने अपने वफादार घोड़े बिजली को एड़ लगाई।

दो दिन और दो रात घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते शंकरसिंह चम्बापुर में दाखिल हुआ। चम्बापुर चम्बा राज्य की राजधानी थी। वहां का राजा हरदेव सिंह विजयपुर के राजा विजयसिंह का था तो मौसेरा भाई, लेकिन उसका पक्का शत्रु भी था। क्रूरसिंह का वह दोस्त था। क्रूरसिंह ने उसी के पास राजकुमार जगतसिंह को छोड़ रखा था।

हरदेव ने जब यह सुना कि उप सेनापति शंकरसिंह आए हैं, तो उसने उसका खूब स्वागत-सत्कार किया। लेकिन शंकरसिंह वहां ठहरने के लिए नहीं, राजकुमार को वहां से निकालकर वापस ले जाने के लिए आया था। हरदेवसिंह ने समझा कि उन्हें क्रूरसिंह ने ही भेजा है। शंकरसिंह ने कहा कि मैं

राजकुमार जगतसिंह को महामंत्री जी की आज्ञा से ले जाना चाहता हूं। हरदेव सिंह ने तुरंत एक दूसरा घोड़ा तैयार कर, राजकुमार को उस पर बैठाया और शंकरसिंह के साथ रवाना कर दिया।

उधर जब शिवसिंह के सैनिक रतना के घर पहुंचे, तो पता लगा कि रतना घर से गायब है। उन्होंने सेनापति को खबर दी, तो उसके हाथों के तोते उड़ गए। सेनापति ने क्रूरसिंह को सारी बात बताई, तो वह भी घबरा गया। शंकरसिंह भी गायब था। दोनों को समझते देर न लगी कि उनका भेद खुल गया है। उन्होंने फौरन महल पर हमला करने की ठान ली। शंकरसिंह, राजकुमार तथा अपने कुछ वफादार सैनिकों के साथ जब शहर में घुसा, उस समय क्रूरसिंह और सेनापति शिवसिंह के सैनिक महल पर धावा बोलने ही वाले थे। शंकरसिंह पलक मारते ही सब-कुछ समझ गया। उसने जोर से जयकारा लगाया— 'राजकुमार जगतसिंह की जय हो।' सेना के जवानों ने जैसे ही राजकुमार जगतसिंह का नाम सुना, उनके पांव वहीं पर ठहर गए। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, एक घोड़े पर शंकरसिंह हाथ में तलवार लहराते हुए जय-जयकार कर रहे थे। उनकी बगल में खड़े जवान जगतसिंह को देखकर सेना ने भी जयघोष किया— 'राजकुमार जगतसिंह की जय हो।'

मंत्री क्रूरसिंह और सेनापति शिवसिंह के बदन में काटो तो खून नहीं। वे कुछ करते, इससे पहले ही शंकरसिंह गरजकर बोला— "मेरे प्यारे वफादार सैनिको, गिरफ़्तार कर लो इन दोनों गद्दारों क्रूरसिंह और शिवसिंह को।"

सैनिकों ने फौरन दोनों को दबोच लिया।

शोर-शराबा सुनकर राजा भी इस बीच महल के द्वार पर आ गए थे। राजकुमार घोड़े से नीचे कूदा और उसने अपने पिता विजयसिंह के चरण स्पर्श किए। राजा ने उसे अपने गले से लगा लिया।

राजा को उनका खोया राजकुमार मिल गया। क्रूरसिंह और शिवसिंह को जेल में डाल दिया गया। शंकरसिंह की वफादारी से प्रसन्न हो, राजा ने उसे अपना मंत्री नियुक्त कर दिया। ●

असली कलाकार

—कमला चमोला

एक गांव में सुजान नाम का एक आदमी रहता था। खेतों में मजदूरी करके ही उसकी गुजर-बसर होती थी। शाम को थका-हारा घर लौटता, तो पत्थर के टुकड़ों पर छेनी-हथौड़ी चलाने लगता। असल में वह बहुत अच्छा कलाकार था, पर अपने हुनर का उसे स्वयं भी पता नहीं था। पत्थरों में मनचाही आकृतियां बनाता, तो उसकी दिन भर की थकान दूर हो जाती। बाद में उन छोटी-छोटी पत्थर की मूर्तियों को या तो वह बच्चों को खेलने के लिए दे देता या यूं ही अपनी झोंपड़ी में डाल देता।

एक बार एक व्यापारी वहां से गुजर रहा था। अंधेरा हो गया, इसलिए आश्रय पाने के लिए उसने सुजान की झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। रात काटने के लिए शरण मांगी। सुजान विनम्रता से बोला—"आप आराम से मेरी झोंपड़ी में रात काट सकते हैं। पर आप धनी व्यक्ति हैं, मैं शायद आपकी ठीक से खातिर न कर पाऊं।"

व्यापारी सुजान की सरलता से बहुत प्रभावित हुआ। घोड़ा बांधकर अंदर झोंपड़ी में आ गया। ढिबरी की टिमटिमाती रोशनी में उसने जो दृश्य देखा, उससे उसकी आंखें विस्मय से फैल गईं। वहां चारों ओर अनेक छोटी-बड़ी पत्थर की मूर्तियां पड़ी थीं। कहीं हल चलाता किसान, कहीं कोई देवी-देवता, कहीं खुर पटकता घोड़ा, तो कहीं भागता हुआ सांड। वह बोला—"ये मूर्तियां तुम्हारे पास कहां से आईं?"

"मैंने बनाई हैं। खाली समय में यूं ही पत्थर पर छेनी-हथौड़ी चलाता रहता हूं।"—सुजान बोला।

—"किसी को दिखाई या बेची भी हैं ये मूर्तियां?"

"इन्हें भला कौन खरीदेगा?"—सुजान भोलेपन से बोला। व्यापारी ने कहा—"तुम शायद नहीं जानते, तुम्हारे हाथों में कमाल का जादू है। अपने हुनर को इस झोंपड़ी और गांव से बाहर निकालो।"

"कैसे निकालूं ?"—सुजान ने पूछा।

"इस रियासत के राजा बड़े ही कला मर्मज्ञ हैं। उनके दरबार में सैकड़ों कलाकार जाकर पुरस्कार पाते हैं। इसीलिए मैं भी हीरे-माणिक के सुंदर आभूषण ले जा रहा हूं उन्हें दिखाने। तुम भी एक मूर्ति लेकर राजा के पास चले जाना। वह अवश्य तुम्हें पुरस्कृत करेंगे।"

अगले दिन व्यापारी तो चला गया, पर सुजान और उसकी पत्नी सोच में डूब गए। वे समझ नहीं पा रहे थे कि राजा को कौन-सी मूर्ति भेंट की जाए। सुजान की पत्नी बोली—"कोई नई मूर्ति बना लो।"

—"क्या बनाऊं ?"

— "राजा जी की मूर्ति ही बना दो न! जमींदार के यहां तस्वीर टंगी है महाराज की। उसे देखकर बना लो।"

"यह ठीक सलाह दी तुमने, पर इसमें एक चीज और भी जोड़ूंगा। मैं स्वयं भी महाराज के चरणों में छेनी-हथौड़ी लिए बैठा होऊंगा।"—सुजान मुसकराते हुए बोला।

उसी दिन से सुजान जी-जान से काम में जुट गया। एक बड़े से पत्थर पर छेनी चलाने लगा। उसने तस्वीर देखकर राजा की आकृति बनाई, फिर अपनी। दिन-रात उसकी झोंपड़ी में छेनी-हथौड़ी की ठक-ठक गूंजती रहती। लगभग एक माह के अथक परिश्रम के बाद मूर्ति बनकर तैयार हो गई। गर्व से मस्तक ऊंचा किए, तलवार उठाए राजा और उनके पैरों के पास छेनी-हथौड़ी लिए विनम्रता से बैठा सुजान।

अपनी कलाकृति लेकर सुजान नगर की ओर चल पड़ा। अगले दिन वह राजमहल पहुंच गया। वहां वह द्वारपाल से बोला—"मुझे महाराज से मिलकर उन्हें अपनी बनाई मूर्ति दिखानी है।"

— "यूं सीधे-सीधे हर ऐरा-गैरा नहीं मिल सकता महाराज से। इसके लिए पहले तुम्हें राज कलाकार देवगुण जी से मिलना पड़ेगा। वह तुम्हारी मूर्ति को यदि इस योग्य समझेंगे, तभी जा पाओगे तुम दरबार में। वह सामने का सफेद भवन देवगुण जी का है।"

सुजान ने जब राज कलाकार देवगुण को अपनी बनाई मूर्ति दिखाई, तो वह पलक झपकना भी भूल गए। ऐसी अद्‍भुत कलाकृति वह जीवन में पहली बार देख रहे थे। पत्थर पर उभरी एक-एक रेखा जैसे बोल रही थी।

देवगुण को लगा, यदि यह कलाकृति महाराज तक पहुंची, तो स्वयं उनकी इज्जत और पद दांव पर लग जाएगा। इसे देखते ही वह अवश्य इस युवक को राज दरबार में स्थान दे देंगे। हो सकता है, राज कलाकार का पद भी उनसे छिन जाए। इस युवक को किसी भी अवस्था में राजा तक नहीं पहुंचने देना चाहिए। यह सोच, वह सुजान से बोले—"युवक, तुम्हारी मूर्ति में इतनी अधिक त्रुटियां हैं कि महाराज देखेंगे, तो तुम्हें दंड दिए बिना न रहेंगे। बनाई भी तो तुमने महाराज की मूर्ति! इस तरह से उनका अपमान भी किया है।"

देवगुण की बात सुन, सुजान भय से थर-थर कांपने लगा। बोला—"मैं यह मूर्ति महाराज को नहीं दिखाऊंगा। इसे वापस ले जाता हूं। आप भी कृपया इसकी किसी से चर्चा न करें।"

"तुम इस मूर्ति को वापस ले जाओ और तोड़ दो। यदि गलती से भी किसी की दृष्टि इस पर पड़ गई, तो तुम्हारी खैर नहीं।"—देवगुण ने डराया।

"ठीक है।"—कहकर सुजान निढाल कदमों से वहां से चल पड़ा। उसने मूर्ति कपड़े में लपेट दी,



ताकि किसी की उस पर नजर न पड़े । मार्ग में जंगल पड़ता था । सुजान ने सोचा—'यहीं बैठकर मूर्ति को नष्ट कर दूं !' पर जब उसने मूर्ति से कपड़ा हटाया, तो उसे तोड़ने की हिम्मत न पड़ी । कुछ सोचकर उसने वहां गड्ढा खोदा और मूर्ति को उसमें दबा दिया ।

समय गुजरता रहा । कई महीने बीत गए । एक बार राजा शिकार करने गए । एक हिरन को देख, अपना घोड़ा उन्होंने उसके पीछे लगा दिया । आगे झाड़-झंखाड़ होने से अब उन्हें घोड़ा वहीं छोड़, पैदल चलना पड़ा था । अचानक उन्हें ठोकर लगी और वह गिर पड़े । उन्होंने देखा , जमीन से उभरे एक पत्थर से उन्हें ठोकर लगी है । इस पत्थर में एक पांव जैसी आकृति उभरी थी । उन्होंने सेवक से वहां मिट्टी खोदने को कहा । थोड़ी देर में वहां मिट्टी लगी एक मूर्ति निकली ।

राजा ने कहा—''इस मूर्ति को साफ करके शाम को हमें महल में दिखाना ।''

महल में लौटने पर सेवक मूर्ति को धो-पोंछकर महाराज के कक्ष में लाया । बोला—''महाराज, यह तो आपकी ही मूर्ति है ।''

महाराज और मंत्री दोनों विस्मय भरी नजरों से मूर्ति को देखने लगे । महाराज बोले—''ऐसी सुंदर कलाकृति तो हम जीवन में पहली बार देख रहे हैं । किसने बनाई होगी यह मूर्ति ? फिर बनाकर जमीन में क्यों गाड़ दी होगी ?''

— ''महाराज, बनाने वाला भी मौजूद है मूर्ति में । मेरे विचार से आपके कदमों के पास बैठा यह व्यक्ति ही इसका मूर्तिकार है । देखिए न, उसके हाथ में छेनी-हथौड़ी भी है ।''

''इस व्यक्ति को ढूंढ़िए मंत्री जी । ऐसे महान कलाकार को गुमनामी के अंधेरे से निकालना चाहिए ।''— राजा ने कहा ।

मंत्री ने सैनिकों को वह मूर्ति दिखाकर उस शक्ल के आदमी को ढूंढ़ने का हुक्म दे दिया । जल्दी ही सैनिकों को सुजान खेत में काम करता नजर आया । उसे पकड़कर वे राजमहल ले चले ।

सुजान डर के मारे थर-थर कांप रहा था । वह सोच रहा था, मूर्ति अवश्य किसी तरह राजा के हाथ पड़ गई है । अब अवश्य मुझे मृत्यु दंड दिया जाएगा । महल में राजा के हाथ में अपनी बनाई वही मूर्ति देख, वह भय से सफेद पड़ गया ।

''क्या तुमने बनाई है यह मूर्ति ?''—राजा ने पूछा ।

—''जी हां, महाराज ।''

—''फिर इसे मिट्टी में क्यों गाड़ दिया ?''

सुजान को लगा, अब कुछ भी छिपाना व्यर्थ है । उसे सब कुछ सच-सच बता देना चाहिए । वह बोला—''महाराज, इस मूर्ति में इतनी अधिक त्रुटियां थीं कि इसे जमीन में दबा देना ही ठीक समझा मैंने ।''

—''किसने कहा, इसमें त्रुटियां हैं ?''

— ''स्वयं राज कलाकार ने ।'' और सुजान ने सारी बात विस्तार से उन्हें कह सुनाई । राजा ने उसी समय मूर्तिकार देवगुण को बुलवाया । राजा के हाथ में मूर्ति और सामने सुजान को खड़ा देख, देवगुण सब समझ गए । वह बोले—''मुझे क्षमा करें महाराज । एक अद्‌भुत कलाकृति आप तक न पहुंचने देने का मैं अपराधी हूं । वास्तव में इस विलक्षण और सुंदर मूर्ति को देख, मुझे अपनी इज्जत और पद दोनों डोलते नजर आए । मैंने सोचा, यदि ऐसी प्रतिभा का धनी मूर्तिकार आप तक पहुंचा, तो आप मुझे राज कलाकार के पद से हटा देंगे । यह व्यक्ति महान कलाकार है महाराज ! यही राज कलाकार होने योग्य है ।''

''नहीं-नहीं, देवगुण जी ।''—सुजान देवगुण के पांव में गिर पड़ा—''मैं तो निपट अनाड़ी हूं । आप ही इस पद के योग्य हैं । आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं, तो अपना शिष्य बना लें । ताकि मैं इस कला की विधिवत शिक्षा ले सकूं ।''

''धन्य हो तुम मूर्तिकार ।''—राजा के मुंह से निकला—''तुम जितने बड़े कलाकार हो, उतने ही बड़े इंसान भी । देवगुण जी, आज से आप इनके गुरु हैं । हमारे नए महल का काम यह नया मूर्तिकार ही करेगा । इसके वेतन तथा आवास की व्यवस्था की जाए ।''

सुजान गदगद खड़ा था । ●

चीटू-नीटू



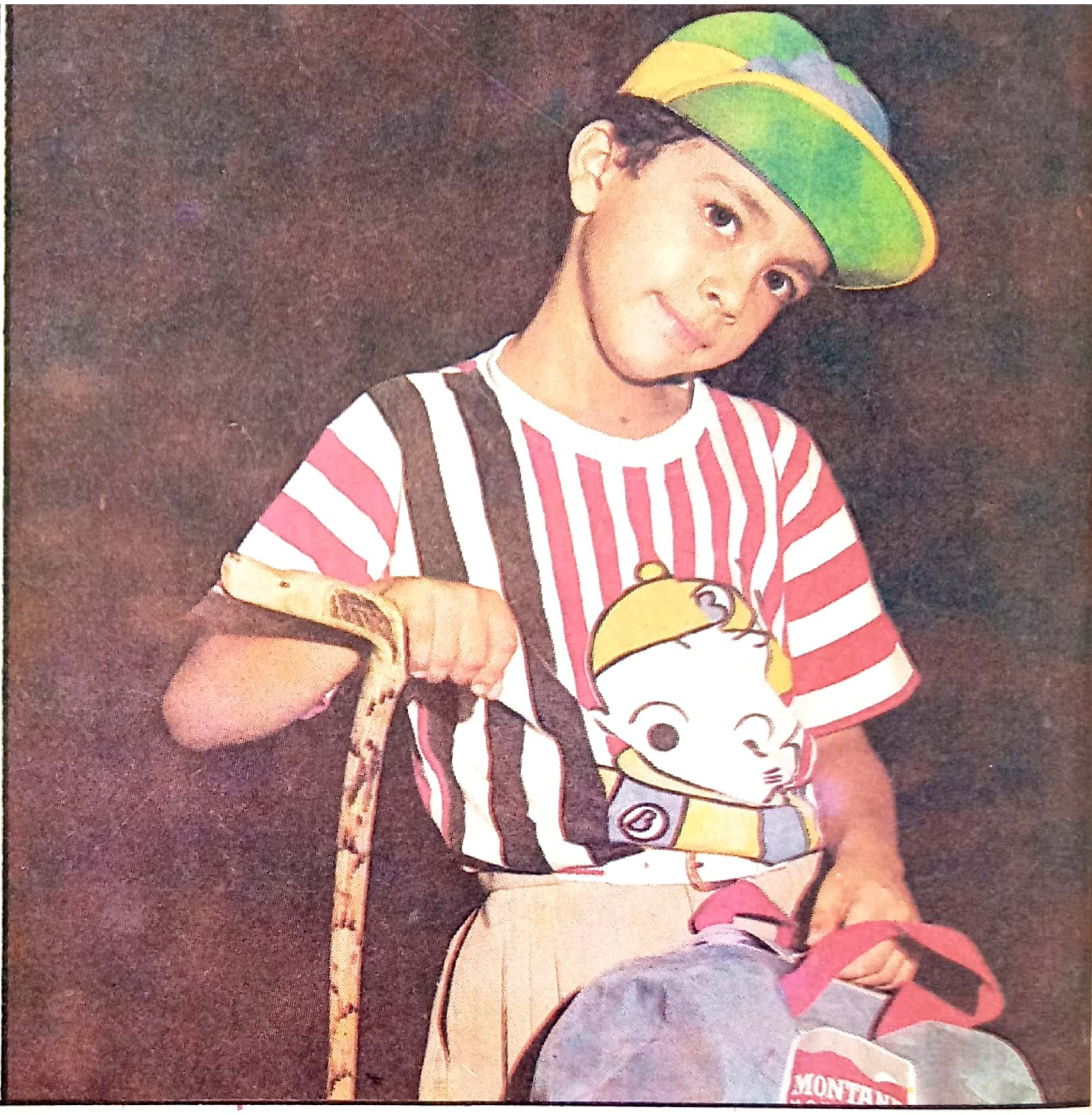
गर्मी की छुट्टियां हो रही हैं। टीचर जी ने पिकनिक रखी है। बस कल सुबह स्कूल से ठीक सात बजे...
मैं तो पांच बजे ही उठ कर तैयार...
छः बज गए हैं। तुम जल्दी से कपड़े प्रेस कर लो। तब तक मैं बूट पालिश...
घर से खाना ले कर जाना है, तो बताया क्यों नहीं! नीटू, तुम दूध ले आओ। चीटू, तुम सब्जी में कलछी... तब तक मैं पूजा...
मम्मी, मेरी फ्रॉक जल गई किसी ने देखा क्यों नहीं
चीटू ने सब्जी जला दी। उसे देखती या तेरी फ्रॉक को
पापा, आपने तो शर्मा अंकल के स्कूटर पर स्कूल छोड़ने का वायदा किया था, लेकिन...
बेटे, स्कूटर तो उनके साले बाबू ले गए हैं। अभी तक लौटे नहीं...
चलो, अपनी पुरानी साइकिल ही निकालते हैं
जब दूध लेने गई थी, वह तो वहीं पंक्चर... चलो भागें...
बस को गए तो आधा घण्टा...
चलो, अब यहीं बैठ कर पिकनिक...

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ **मई '९२ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : जुलाई '९२

चित्र : ओम प्रसाद





पुरस्कृत चित्र

राधा मोहन पटनायक, आयु १० वर्ष, क्वा. नं. पी. डब्लूयू. डी./सी./टी./ई./४४, न्यू एल. आई. सी. कालोनी, समीप एस. टी. आई. चौक, रूरकेला, सुंदरगढ़, उड़ीसा।

इनके चित्र भी पसंद आए— निशा नायर, दिल्ली; संजीव जिंदल, पानीपत; एस. सी. जैन, देहरादून; दीप गुप्ता, हरिद्वार



राजीव अमित दीपक सोमनाथ गुड़िया

पुरस्कृत कथा

मिली अंगूठी

मनीष की बड़ी बहन थी मंजुला । उनके घर के सामने ही एक बड़ा पार्क था । पार्क के पास एक छोटी-सी नदी बहती थी । नदी के उस पार जंगल था । वे लोग शाम को पार्क में जाते और खूब खेलते ।

एक दिन वे स्कूल से घर आए । खाना खाकर पार्क में चले गए । वहां घूमते हुए उन दोनों ने दूर कुछ पड़ा देखा । वह एक बड़ा-सा फूलदान था । पर फूलदान में एक भी फूल नहीं था । झांककर देखने पर अंदर की मिट्टी भी सूखी दिखाई दी । मनीष के हाथ में एक पाल वाली नाव थी । वह तो पाल वाली नाव को नदी में तैराना चाहता था । उसने जिद की कि चलो । पर मंजुला को फूलदान सूखा क्यों है, यह जानने की उत्सुकता थी ।

वह सोचने लगी कि हम रोज यहां खेलने आते हैं । इस पर कभी ध्यान क्यों नहीं गया ? उसने फूलदान के अंदर हाथ डाला । उसकी मिट्टी को खुरचना शुरू किया । अचानक उसकी उंगलियों से कोई चीज टकराई ।

वह एक अंगूठी थी— सोने की । उसमें एक रत्न भी जड़ा हुआ था । इतने में ही एक आदमी दौड़ता हुआ वहां पहुंचा । वह बुरी तरह हांफ रहा था । —"यहां मेरी अंगूठी गिर गई है । मैं कई दिनों से इस फूलदान में पानी डालकर, इसमें पौधा लगाना चाहता था । बालटी लाने घर गया था । इतने में मुझे अपनी अंगुली में अंगूठी दिखाई नहीं दी । मैंने सोचा, यहीं सूखी मिट्टी को खुरचते समय गिर गई होगी ।"

"क्या यही आपकी अंगूठी है ?" मंजुला ने उसे अंगूठी दिखाते हुए कहा।

उस आदमी ने मंजुला की ओर प्यार से देखते हुए कहा— "हां बेटी, यह अंगूठी मेरी है । पर मैं इसे तुम्हें उपहार में देना चाहता हूं।" लेकिन मंजुला ने अंगूठी लेने से मना कर दिया । वह मनीष के साथ घर वापस चली गई ।

—मणिका मस्करा, नेपाल

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : विवेक गर्ग, पटियाला; रश्मि सिन्हा, बेगुसराय; विकल शुक्ला, मुंगेली, बिलासपुर ।

आगामी अंक : जून '९२

छुट्टियों के दिन और नंदन हो संग

- **भारतरत्न सत्यजित राय की फ्रेम कराने योग्य छवि । उनके हस्ताक्षर भी ।**
- जंगल में जानवरों को पता चला कि शहर में बच्चे परेशान हैं । वे बच्चों को जंगल में ले आए । फिर क्या हुआ ? पढ़िए जर्मनी के लेखक ऐरिख केश्नर की कृति 'कांफ्रेंस डेयर टियरे' का सार—विश्व की महान कृतियों में ।
- **नटों ने राजा से कहा—'और कुछ नहीं 'सुख' चाहिए ।' तेनालीराम ने पता लगाया ।**

कहानियां, कविताएं, समाचार और प्रतियोगिताएं । भाग लेकर हजारों रुपए के नकद इनाम जीतिए ।

बाल अधिकार प्रतियोगिता



बच्चों के विचार

देश के हर कोने से पाठकों ने बाल अधिकार प्रतियोगिता में भाग लिया। सबने बिना झिझके मन की बात कही। कुछ ने डांट भी लगाई— 'बच्चों के अधिकारों की बात करके आप उन्हें बिगाड़ रहे हैं ! माता-पिता के लिए सिरदर्दी क्यों पैदा कर रहे हैं आप ?' ...लेकिन ज्यादातर ने जो लिखा, उससे लगा, बच्चों के अधिकारों के बारे में उन्हें पता है। वे काफी कुछ सोचते हैं इस बारे में। कुछ बच्चों ने लिखा, उन्हें सप्ताह में एक दिन फिल्म या नाटक दिखाया जाए। मेले में, ऐतिहासिक जगहों पर घूमने-फिरने की आजादी हो। कुछ ने लिखा— बच्चे सूई में धागा पिरोने से लेकर हवाई जहाज तक चला सकते हैं— अगर उन्हें मौका दिया जाए तो ! कुछ बच्चों ने अच्छी किताबों की मांग की, तो कुछ ने माता-पिता के प्यार की बात की। किसी ने लिखा— कितने बेबस हैं हम ! खाना चाहते हैं गोल गप्पे-- खिलाई जाती है डांट। चाहते हैं खेलना, लाद दी जाती हैं किताबें। इसका कुछ इलाज होना चाहिए। ....और सबसे अच्छी बात यह पता चली कि आज के बच्चे किताबी कीड़े या रट्टू तोते नहीं बनना चाहते। खेलकूद, मनोरंजन और कला की ओर भी उनकी रुचि बढ़ी है।

नन्हे बच्चे, बड़ी शिकायतें

बच्चों को खेलने का अधिकार कैसे मिले ? बच्चे ज्यादा हैं, पार्क बहुत कम। महंगाई इतनी कि माता-पिता इनके लिए इतनी महंगी किताबें भी तो नहीं खरीद पाते।

—जफर अहमद अंसारी, कामठी (महा.)

गरीब बच्चे तो आज भी खेलने की उम्र में घर को चलाने के लिए काम करते हैं। वे न तो पढ़ पाते हैं, न अच्छे-अच्छे कपड़े पहन पाते हैं। बीमार पड़ते हैं, तो डाक्टर की फीस देने को पैसे नहीं होते घर में।

- मुदित आर्य, खेतड़ी नगर (राज.)

बच्चे स्वस्थ होंगे तो समाज, देश, दुनिया सभी स्वस्थ होंगे। कुछ छोटी-बड़ी संस्थाएं कहती हैं -- यह काम वे कर रही हैं। पर काम नजर नहीं आता। सच्चे मन से बच्चों की भलाई के लिए काम किया जाए।

—हिमांशु शेखर, सीतामढ़ी

खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने का अधिकार हर बच्चे को है। किंतु बहुतों को ये सुविधाएं गरीबी के कारण नहीं मिल पातीं। सरकार को सभी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और कानूनी सुरक्षा का जिम्मा लेना चाहिए।

—रीता धवन, नई दिल्ली

बचपन से बच्चे में जैसी आदत डाली जाए, बड़ा होने पर वह वैसा ही बन जाता है। मगर ऐसी आदत डाले कौन ? पिता को कमाने से फुरसत नहीं, मां को घर के काम से। और अध्यापक जी वही पढ़ाते हैं, जो पास होने के लिए जरूरी होता है।

—ब्रजेशकुमार गुप्ता, महासमुंद

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त बच्चे की रुचि किस कला या खेल में है, बचपन से ही यह जान लेना चाहिए। उस क्षेत्र में बच्चे को बढ़ावा मिले, तो आगे चलकर वह देश का नाम ऊंचा कर सकता है।

—कविता आहूजा, भिवानी

अधिकार का नहीं, बच्चों को मां-बाप के भरपूर प्यार का सवाल है। छोटी-छोटी बातों पर उनका अपमान न किया जाए, डांटा-फटकारा न जाए। यूं बच्चों को यह अधिकार तो होना ही चाहिए कि दिन-रात की पढ़ाई के बीच कुछ घंटे वे आराम से खेल कूद भी सकें।

—हरीशकुमार, वाराणसी

भाग्य और अधिकार बड़ों की मुट्ठी में बंद है। वह मुट्ठी खुले, तो बात बने। मगर खुले कैसे, कौन खोले ? वह तो हमेशा हमारे सिर पर सवार रहती है।

– श्वेता चौबे, लामडिंग, नवगांव (असम)

बच्चे भरपूर प्यार पा सकें, जीवन में आगे बढ़ सकें। इसके लिए जरूरी है, दुनिया में अमन और शांति रहे।

—चंचलकुमार, इरोड (तमिलनाडु)

अच्छे तन में सुंदर मन
बच्चे का यह सच्चा धन,
इसकी ओर सभी दें ध्यान
बनेंगे तब ये राम, बलराम।

—अमीता सलारिया, जम्मू-तवी

बच्चों को माता-पिता का प्यार मिलना जरूरी है। वे बेझिझक होकर मन की बात कह सकें— पढ़ने-लिखने के साथ यह भी उनका अधिकार है।

—जी. कुमार रेड्डी, तिरुपति

बच्चों को कक्षा में इतने विषय पढ़ाए जाते हैं कि तौबा । जैसे वह बच्चा नहीं, कंप्यूटर है। होना तो यह चाहिए कि रुचि के अनुसार बच्चे को एक या दो विषय ही पढ़ाए जाएं, ताकि बच्चा आगे चलकर उसमें महारत हासिल कर सके।

—नीरज चराटे, इंदौर

बच्चे अब और डांट-डपट नहीं चाहते। उन्हें प्यार चाहिए। वे चाहते हैं कि विपदा में वे एक-दूसरे की मदद करें। ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाया जाए।

—पूजा सैनी, नई दिल्ली

बच्चों को बेरोक-टोक सब जगह जाने देना चाहिए। उन्हें खुली हवा और धूप मिलनी चाहिए जिससे वे तंदुरुस्त हों। उन्हें प्रतियोगिताओं में भाग लेने देना चाहिए। —यंगस्टार अफरीदी, मुंबई

विकलांग तथा अनाथ बच्चों को भी प्यार मिले, शिक्षा मिले, सम्मान मिले— इस बारे में सोचा जाना चाहिए। ऐसे बच्चे समाज और सरकार की दया पर कब तक पलेंगे? —अमित भटनागर, रुड़की

हर बच्चे को मां-बाप का स्नेह पाने का अधिकार तो है, मगर ऐसे घर को क्या कहिए, जहां मां-बाप दिन-रात लड़ते हों? क्या कोई ऐसा कानून भी बन सकता है कि जब तक बच्चा घर में रहे, मां-बाप न लड़ें। —शैलेश बड़थ्वाल, नगीना

डांट-डपट को हटाना है
प्यार से पढ़ाना-लिखाना है,
सुरक्षा दे कानून अगर
मुश्किल नहीं कोई डगर।

—सविता गुप्ता, नई दिल्ली

पत्र मिला

☐ महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान शंकर का चित्र देखकर मन पुलकित हो गया। 'लौटा नहीं पावन' शिक्षाप्रद कहानी थी। विश्व की महान कृतियों में बंकिमचंद्र की कृति 'देवी चौधरानी' बेहद अच्छी लगी। मुखपृष्ठ अति आकर्षक था। 'घोड़े ने कहा', 'पानी का नगाड़ा' और 'कीमत चुकाओ' कहानियां मनोरंजक थीं।

— विवेक कौशिक, रुड़की

☐ 'नंदन' हमें सबसे अच्छी पत्रिका लगती है। लेकिन अपनी प्रिय पत्रिका से हमें और भी उम्मीदें हैं। नई खोजों, ऐतिहासिक बातों, खिलाड़ियों के रंगीन चित्रों तथा प्रतिभाशाली बच्चों के बारे में भी बताया करें।

— शाहिद सैफी, नरसिंहगढ़ (म. प्र.)

☐ 'एक दो सात', 'हार से हारी', 'भरा समंदर पानी कम' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। शिवजी का चित्र देखकर बहुत खुशी हुई। 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' के क्या कहने!

— ललित नंदा, सिरसा (हरि.)

☐ तीन वर्षों से लगातार 'नंदन' पढ़ रहा हूं। 'कीमत चुकाओ' तथा 'आओ गंगा' कहानियां इस अंक की उपलब्धि थीं।

— विवेक अग्रवाल, मद्रास

☐ 'बारह बजे' तथा 'मीठे पानी का कुआं' चित्र-कथाएं एक से बढ़कर एक थीं। भगवान शिव का चित्र और कहानियां मन को खूब भाईं।

— सुनीलकुमार, मझौलिया हाट (गुज.)

☐ १९६५ से 'नंदन' का नियमित पाठक हूं। इस अंक में शिवजी का रंगीन चित्र बहुत अधिक पसंद आया। 'नंदन' लगातार प्रगति करे। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को यह बहुत प्रिय है।

— प्रकाश नारायण ओमर, फफूंद

☐ विश्व की महान कृतियों में 'देवी चौधरानी' छापने के लिए धन्यवाद। आशा है, भविष्य में भी ऐसी रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी।

— दिलीप मोदी, कटक

☐ यों कहने को तो 'नंदन' बच्चों की पत्रिका है, मगर समय पर न मिले, तो बड़ों के दिल पर क्या गुजरती है, बता नहीं सकता।

— दीपक, रेवाड़ी

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे: अशोककुमार खेतान, गुवाहटी; ओमप्रकाश सोनी, जोधपुर; संतोष भालोटिया, गांधीनगर, दिल्ली।

नई पुस्तकें

विज्ञान गीत—कवि : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, नई दिल्ली; मूल्य : ८ रुपए ।

पुस्तक में हवा, बिजली, पानी, पेड़, पंखा, मिसाइल, ऊर्जा, धुआं आदि विषयों पर छोटे-छोटे गीत हैं । गीतों में आज की समस्याओं को बच्चों के सामने रखा गया है । जैसे कि पेड़ नहीं कटने चाहिए । वायुमंडल में प्रदूषण का जहर बहुत खतरनाक है । पानी कीमती है । मिसाइल जहां जाती है, सब नष्ट हो जाता है । धरती पर रहने वाले जीव-जंतुओं का शिकार नहीं करना चाहिए । पीपल का वृक्ष सबसे अधिक आक्सीजन देता है । बिजली का उपयोग सावधानी से करें । आसमान में दिखते छोटे-छोटे कई तारे दरअसल सूरज से भी बड़े हैं । यही नहीं 'लड़ाई' के बारे में कहा गया है—'पेट भरे हैं जिन देशों के, छेड़ें सदा लड़ाई ।'

सरल शब्दों में बहुत उपयोगी बातें कविताओं में कह दी गई हैं । वे सारी समस्याएं जिनसे भारत ही नहीं, पूरा विश्व परेशान है, उन्हें बच्चों के सामने रखा गया है । लेकिन पुस्तक में उपदेश जरा भी नहीं हैं । कविताओं में उठाए गए विषय कठिन हैं, लेकिन कविताएं उतनी ही सरल-सरस हैं । हर पृष्ठ पर सुंदर चित्र हैं ।

बाल पुस्तक-माला : सौ पुस्तकें

हिन्दी सम्पादक : सत्यपाल पटाईत; प्रकाशक : भारत-भारती बाल पुस्तक-माला, आप्टे स्मारक भवन, महाल, नागपुर-२

सत्रह बरस पहले हिन्दी और मराठी में छोटी-खोटी जीवनियां छापने की शुरुआत हुई । सरल भाषा में पौराणिक, ऐतिहासिक और आज के महामानवों के चरित्र । अधिकांश ऐसे महापुरुष जिन्होंने त्याग और बलिदान से भारत की नींव को मजबूत किया ।

इस माला में श्रीराम, श्रीकृष्ण, वेदव्यास, वाल्मीकि, भीष्म, भगीरथ, विक्रमादित्य हैं तो द्रौपदी, सावित्री, मीरा, चन्नम्मा, जीजाबाई और मैडम कामा जैसी महिलाएं भी हैं । आर्यभट्ट, विक्रम साराभाई, बीरबल साहनी, श्रीनिवास रामानुजन जैसे वैज्ञानिकों की जीवनियां भी छपी हैं । सौ से अधिक ये जीवनियां आ चुकी हैं । सभी पुस्तकें सचित्र और प्रेरक हैं । पाठकों ने इनको पसंद किया है । पुस्तक में छोटी-छोटी रोचक घटनाएं होने से पढ़ते हुए ऊबते नहीं । पिछले दिनों इस माला की तीन पुस्तकें आई हैं । प्रत्येक का मूल्य— तीन रुपए ।

महात्मा गांधी— लेखक : जि. वि. नारायणमूर्ति; अनुवाद : रजनी पटाईत; **देश गौरव सुभाष चंद्र बोस**—लेखक : प्र. ग. सहस्रबुद्धे; **परम पूजनीय श्री गुरुजी**—लेखक : रसिक पुत्तिगे

चोंच में नदी

—ब्रह्मदेव

बहुत पुरानी बात है, संसार का आरम्भ ही हुआ था।

एक दिन भैंस और बगुले की आपस में किसी बात पर कहा-सुनी हो गई। बात बढ़ती गई पर झगड़े का अंत न हुआ। झगड़े को बढ़ता देख, भैंस बोली— "झगड़ा निबटाने के लिए हमें कोई प्रतियोगिता करनी चाहिए। क्यों न हम नदी किनारे चलें और वहां दोनों पानी पिएं। जो अधिक पी ले, उसे ही विजयी माना जाए।" अभी चलो। हम नदी के किनारे प्रतियोगिता द्वारा अपने झगड़े का निर्णय कर लें।" वह जानती थी कि बगुला उसके सामने अधिक पानी नहीं पी सकेगा।

लेकिन बगुला बोला— "जल्दी न करो। अभी तो हमने किसी को निर्णायक भी नियुक्त नहीं किया। तुम अपने सब चौपाए बंधुओं से कह दो कि कल प्रातः वे नदी किनारे इकट्ठे हों। मैं सब पक्षियों से कह दूंगा।"

भैंस ने सहमति प्रकट की— "ठीक है, तो कल नदी के किनारे सब मिलेंगे।"

जब दोनों अलग हो गए, तो बगुला फौरन नदी किनारे लपककर पहुंचा। एक झाड़ी में छिपकर दिन भर पानी को देखता रहा। उसके बाद सब पक्षियों को दूसरे दिन आने के लिए कहकर, घर लौटा।

दूसरे दिन सवेरे से ही सारे पशु-पक्षी प्रतियोगिता को देखने के लिए इकट्ठे हो गए। जब नदी का किनारा निर्णायकों से पूरा भर गया, तो सब एक स्वर में चिल्ला उठे— "अब प्रतियोगिता आरम्भ की जाए।"

भैंस बोली— "बगुले, तुम आरम्भ करो।"

बगुला बोला— "मैं नहीं, तुम पहले पियो।"

भैंस ने बड़े जोर से ठहाका लगाया। बोली— "मेरे पीने के बाद पानी बचेगा ही कहां, जो तुम पिओगे?"

बगुला बोला— "हंसना बाद में, पहले प्रतियोगिता का परिणाम तो देख लो।" और निर्णायकों की ओर घूमते हुए बोला— "महोदय, भैंस ने यह सुझाया था कि पानी पीने की प्रतियोगिता की जाए। इसलिए मेरा यह कहना है कि वही इस प्रतियोगिता की पहल करे। आप लोगों का क्या निर्णय है?"

"ठीक है, भैंस ही पहले आरम्भ करें।"— सब निर्णायकों ने एक स्वर में कहा।

भैंस को पहल करनी पड़ी। उसने गहरी सांस ली। अपना मुंह पानी में देकर पीना आरम्भ कर दिया। बगुला तो जानता था कि ज्वार-भाटा के कारण पानी बढ़ने-घटने का समय है। पास ही समुद्र से होकर इस नदी का पानी आता है। इसलिए नदी का पानी भी बढ़ जाता है।

जितनी जोरों से भैंस पानी पीने लगी, वह उतना ही बढ़ता गया। यहां तक कि जहां खड़े होकर भैंस पानी में घुसी थी, वहां पानी इतना बढ़ गया कि वह लगभग तैरने लगी। यह देखकर किनारे पर खड़े सब निर्णायक हंसने लगे। भैंस तैरकर किनारे पर आ गई। बोली— "अब बगुले को कहा जाए कि वह पानी पिए।"

लेकिन बगुले को किसी बहाने अभी रुकना था। बोला— "इतना बड़ा मुकाबला है। पानी पीने की तैयारी करने के लिए मुझे अपने पंख ठीक से संवारने दो।" यह कहकर वह अपने पंख संवारता रहा। इसमें उसने काफी देर कर दी। यहां तक कि निर्णायक भी बैचेन होने लगे।

अंत में जब बगुले ने देखा कि पानी कम होने लगा है, तो वह नदी किनारे गया और पानी में चोंच डाल दी। पानी में मुंह डालने का तो उसका बहाना भर था, क्योंकि भाटे के कारण पानी कम हो रहा था। यहां तक कि कुछ देर में जहां बगुले की चोंच थी, वहां का पानी ही सूख गया। पशु-पक्षी ज्वार-भाटे के उतार-चढ़ाव से परिचित नहीं थे। वे मुंह बाए देखते रहे कि इतने छोटे-से बगुले ने इतना पानी कैसे पी लिया?

इससे पूर्व कि बगुला अपनी चोंच उठाता, सब निर्णायक चिल्लाने लगे— "बगुला जीत गया, बगुला जीत गया।"

वन में रथ

—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

बहुत पुरानी बात है। एक नगर में दो बहनें रहती थीं। एक सत्रह साल की थी, दूसरी दस साल की। बड़ी का नाम अनिता था। छोटी का नाम वनिता। दोनों बड़ी दुखी थीं। उनकी मां जो नहीं थी। सौतेली मां सुखमती उनसे खूब काम लेती, पर भरपेट भोजन नहीं देती थी। सुखमती की बेटी का नाम था सुमन। सुमन बेहद घमंडी थी। बात-बात में डांटती रहती थी। वे दोनों बेचारी क्या करतीं? रोकर रह जाती थीं।

एक दिन सुमन ने उनको जरा-सी बात पर खूब पीटा। वनिता अचेत हो गई। सुखमती ने कोई ध्यान नहीं दिया। अनिता घबरा गई। वह झट से पानी ले आई। पानी के छींटें उसके मुंह पर मारे। पंखा झला। कुछ देर में वनिता ने आंखें खोल दीं। फिर दोनों छिपकर दयालु बाबा के पास गईं। रो-रोकर अपनी बात बताई। दयालु बाबा बहुत उदार थे। उनसे दोनों की परेशानी देखी न गई।

फिर वह सुखमती के पास गए। उससे कहा— "अनिता और वनिता पर रहम खाओ। उन्हें तंग न करो। गली-मोहल्ले वालों को पता लग गया, तो तुम्हारी बदनामी होगी।"

यह सुन, सुखमती डर गई। उसने सोचा कि दयालु बाबा ठीक कहते हैं। उसकी बेटी सुमन घमंडी और अनपढ़ थी। दिन भर खाती और सोती रहती थी।

सुखमती ने सोचा कि उसे अपनी बेटी से सलाह करनी चाहिए।

सुखमती ने कहा— "अनिता और वनिता को यहां रखना कठिन है। गली-मोहल्ले में ये हमें बदनाम कर देंगी।"

सुमन बोली— "मां! मैं समझती हूं, घुमाने के बहाने इन्हें जंगल में छोड़ दिया जाए।"

—"हां-हां, यही अच्छा रहेगा। इससे हम पर किसी तरह का संदेह भी नहीं होगा और ये दूर हो जाएंगी।"

सुमन ने दोनों बहनों को आवाज दी। उन्हें पास में बैठाया। फिर सुखमती बोली— "बेटियो! आज तुम सब जंगल की सैर कर आओ।" अनिता-वनिता बहुत खुश हुईं।

सुमन ने अपने घर के रथ को जोड़ा। उनमें अनिता और वनिता को बिठाया। साथ में खाने का सामान लिया। फिर वे चल पड़ीं।

अनिता और वनिता समझ नहीं पा रही थीं कि आज सुमन उनसे प्यार से क्यों बोल रही है, सैर कराने क्यों ले जा रही है?

दोपहर को रथ वन में पहुंचा। सब ओर पशुओं की भरमार थी। तीनों रथ से उतर इधर-उधर घूमने लगीं। अचानक सुमन ने प्यास का बहाना बनाया। वह अनिता से बोली— "सामने वाली पहाड़ी के पीछे एक छोटा-सा तालाब है। तुम दोनों वहीं जाकर यह सुराही भर लाओ।"

"हमें उधर जाने में डर लगता है।"— अनिता ने कहा।

—"डर किस बात का?"

—"वहां जंगली जानवर रहते हैं।"

—"कोई जंगली जानवर नहीं रहता। बस, इसी पहाड़ी के एकदम पीछे जाओ, नहीं तो तुम दोनों को मां डाटेंगी।"

लाचार अनिता और वनिता सुराही लेकर चल पड़ीं।

घनघोर जंगल था। थोड़ी देर में वे आंखों से ओझल हो गईं। उनके ओझल होते ही सुमन रथ पर सवार हो, वापस चल पड़ी। जाने से पहले उसने कुछ खाना उनके लिए छोड़ दिया।

अनिता और वनिता पहाड़ के पीछे गईं। वहां तालाब नहीं था। छोटा-सा झरना था। उन्होंने सुराही भरी। लौट पड़ीं। पर वहां तो सुमन थी ही नहीं। खाना जरूर रखा था।

अनिता ने वनिता से कहा— "बहन! घबराना नहीं। पहले पेट पूजा कर लें, फिर रथ के पहियों के निशानों के सहारे चलते हैं।"

वनिता को भी इस बात से धैर्य बंधा।

दोनों ने खाना सामने रखा ही था, तभी एक बूढ़ा बंदर आ गया। उसके शरीर पर कई घाव थे। घावों से खून रिस रहा था।

अनिता ने बंदर की ओर स्नेह से देखा। बोली—"लो बंदर भाई, पहले तुम अपना पेट भर लो ? हम दोनों को तो भूखे-प्यासे रहने का अभ्यास है।" कहती हुई अनिता ने खाना उसकी तरफ बढ़ा दिया।

बंदर देखते-देखते सारा खाना सफाचट कर गया। वनिता ने कहा— "लो, अब पानी भी पी लो।" उसने



उसे सुराही दे दी।

अनिता बोली— "तुम जंगल में रहते हो। यहां के सारे रास्ते जानते होंगे। हमें रास्ता बता दो।"

बंदर पानी पी रहा था। तभी एक चमत्कार हुआ। वह बंदर यक्ष के रूप में बदल गया। दोनों बहनें यह चमत्कार देख, थर-थर कांपने लगीं।

—"बेटियो ! डरो नहीं। मैं इस जंगल में रहने वाला यक्ष हूं। मैं तुम दोनों की परीक्षा ले रहा था। तुम दोनों की उदारता से मैं बहुत ही प्रसन्न हूं। मुझे मालूम था कि तुम भूखी हो, फिर भी तुमने अपना खाना मुझे दे दिया। मैं तुम दोनों के दुःख भी जानता हूं। बस, आज से सारे दुःख दूर हो जाएंगे। आओ मेरे साथ।"

वे दोनों उस यक्ष के पीछे-पीछे चल पड़ीं। थोड़ी देर में वे एक गुफा के आगे पहुंचीं। यक्ष ने हाथ का इशारा किया। गुफा का दरवाजा खुल गया। अनिता और वनिता की आंखें गुफा में हीरे-मोतियों की चमक से चुंधिया गईं।

यक्ष ने कहा— "सुनो ! तुम्हारी मुट्ठी में जितने हीरे-मोती आएं, उतने तुम एक थाल में से ले लो। ध्यान रहे कि एक थाल के अलावा दूसरे थाल में हाथ डाला, तो अंगुलियां जल जाएंगी।"

अनिता और वनिता ने एक-दूसरे को देखा। फिर ईमानदारी से एक-एक मुट्ठी भर ली, दोनों बाहर आ गईं।

यक्ष ने कहा— "अब तुम घर जाओ। आज से तुम दोनों के दुःख दूर हो गए। विवाह करके और अच्छा घर बनाकर सुख-शांति से रहना।"

वे मुड़ी ही थीं कि यक्ष ने कहा— "बेटियो, जरा रुको। तुम्हारी सौतेली मां को दंड देना तो मैं भूल ही गया। बताओ, क्या सजा दूं उसे।"

अनिता बोली— "हे देव ! आपने हम पर बहुत बड़ी कृपा की। हमें रहना उसी के पास है। फिर वह भी मां के समान ही है। आप उसे क्षमा कर दें।"

—"बेटी ! तुम्हारे उत्तर से मैं बहुत खुश हूं। अब तुम जाओ। मैंने तुम्हारी बात मानकर, उसे छोड़ दिया है। अब वह तुम्हें कभी परेशान नहीं करेगी।"

दोनों बहनें घर आ गईं। उन्हें सही-सलामत देख, मां-बेटी घबरा गईं। सुमन बोली— "मां, जंगल में जरूर कोई देवता रहते हैं। उन्होंने ही इन्हें बचाया है।"

—"हां बेटी, तुम ठीक कहती हो। आज से हम दोनों को अपना बुरा बर्ताव छोड़ देना चाहिए। वरना जंगल वाले देवता नाराज हो गए, तो खैर नहीं। और फिर अनिता-वनिता हैं तो तुम्हारी ही तरह।"

बातें करतीं मां-बेटी द्वार पर आ गईं। उन्होंने अनिता और वनिता को हंसते हुए गले लगाया। सुखमती का बदला व्यवहार देख, दोनों बहनें प्रसन्न थीं। सुखमती को उन्होंने सारी बातें बता दीं।

शीर्षक बताइए : परिणाम



ढेर सारे शीर्षक मिले। मार्च '९२ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

जब से आया मेरा टामी, भूल गई मैं खाना-पानी।
— रुचि अग्रवाल, ५/१, दोणिमलै टाउनशिप, जि. बिल्लारी, कर्नाटक।

चोर अगर कोई आ जाए, टामी उसको काट भगाए।
— चंदा पांडेय, नृपेंद्रनाथ पांडेय, विक्टोरिया कोलियरी, पो. लाल बाजार, जि. वर्द्धमान (प. बंगाल)।

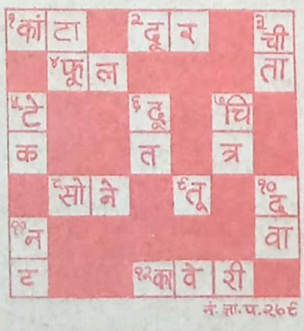
खेल-खिलौने कितने सारे, लेकिन तुम हो सबसे प्यारे।
— रेखा हर्ष, जे/४-१०३ए-बी., डी. डी. ए. फ्लैट, कालकाजी, नई दिल्ली।

शक्ल है इसकी भोली-भाली, करता है घर की रखवाली।
— माधवीलता वाजपेयी, कैलाश वाजपेयी, ग्रा.+पो. पैना बुजुर्ग, शाहजहांपुर (उ. प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : बिंदु बंसल, नारनौल (हरि.); देवकरण जोशी, चुरू (राज.); रस्मिता पांडा, सुंदरगढ़ (उड़ीसा); मो. पुरकान, सितारगंज (उ. प्र.); तनिमा बजाज, नालाघाट (म. प्र.)।

नंदन ज्ञान-पहेली : २७९

परिणाम



इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। पांच सर्वशुद्ध आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है

सर्वशुद्ध : पांच : प्रत्येक को अस्सी रुपए

१. यतीन्द्र, धौलपुर; २.विकास शर्मा, आगरा; ३. प्रवीणकुमार, मुंगेर; ४. नीरजकुमार, बोकारो स्टील सिटी; ५. संजयकुमार, बांका।

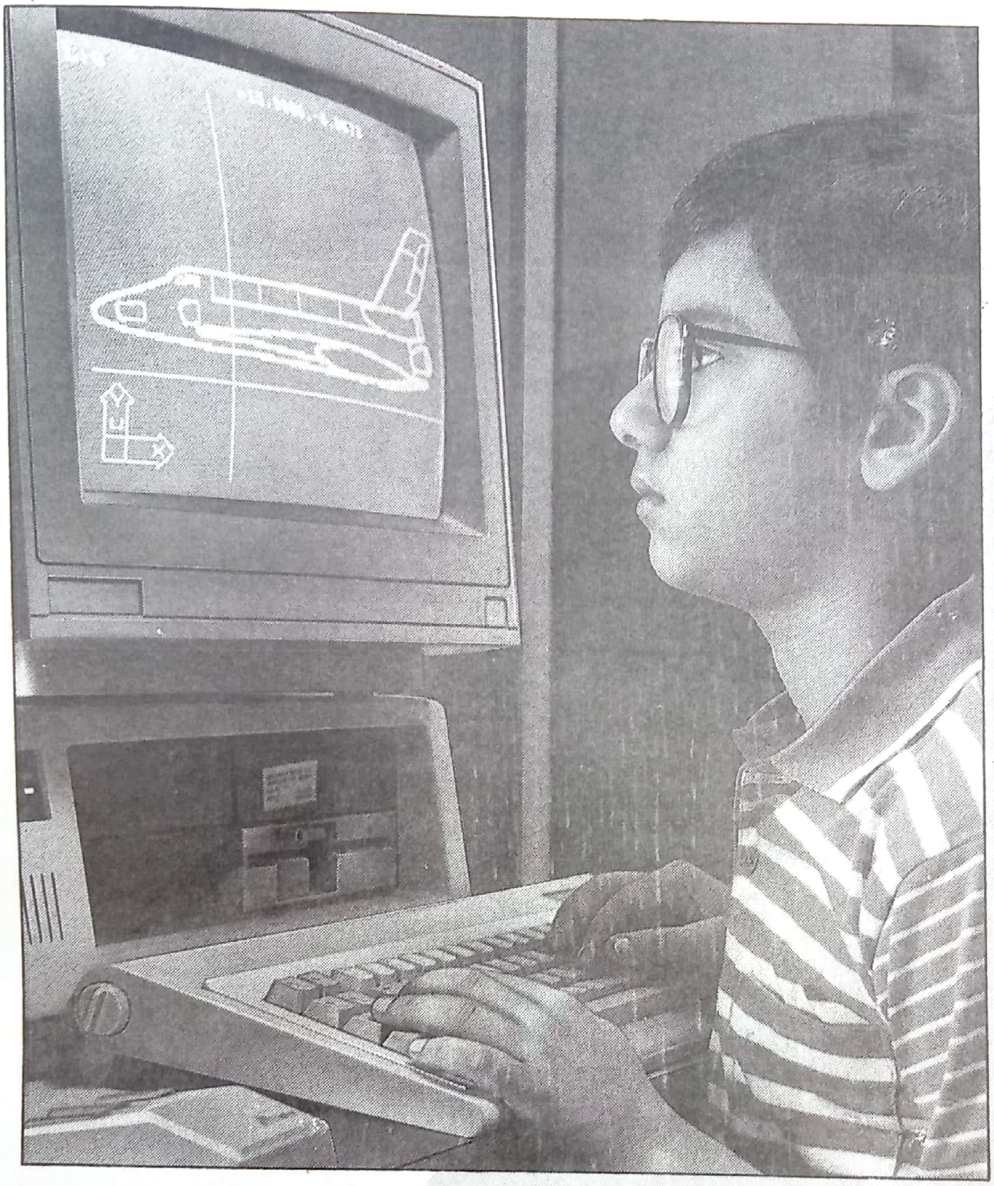
एक गलती : बीस : प्रत्येक को तीस रुपए

१. प्रियंका साव, कलकत्ता; २. दीप्ति चमोली, टिहरी; ३. ऋतु रंजन, पटना; ४. त्रिभुवन खोलिया, नैनीताल; ५. मनोजकुमार साहू, ईटा नगर; ६. मास्टर अनुभव, मेरठ; ७. राजेश राजपुरोहित, बीकानेर; ८. अभिमन्यु अनंत, पटना; ९. अभय मिश्र, कानपुर; १०. मनोजकुमार माथुरी, चंडी (नालंदा); ११. बिहारीलाल अग्रवाल, बरगड़ (उड़ीसा); १२. गीता नारायण, कलकत्ता; १३. नूपुर भट्ट, नैनीताल; १४. बंशीधर उरांव, गुमला; १५. अनामिका वधवा, नई दिल्ली; १६. नेहा विजय, पटना; १७. आंचल अग्रवाल, देवबंद; १८. रघु तिवारी, चित्तौड़गढ़; १९. आरतीकुमारी, बेगुसराय; २०. नतालिया सूद, पटियाला।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बड़ा बादल पर्वत की चोटी के चारों ओर फैला है।
२. घायल पर्वतारोही की छड़ी का हत्था दूसरी तरह का है।
३. उसका पट्टी बंधा पजा लम्बा हो गया है।
४. उस पैर के जूते का तला घिसा हुआ है।
५. कुत्ते के गले में लटके ड्रम की टोंटी लम्बी है।
६. उसकी पीठ पर रखे बक्से का कटाव एक हो गया है।
७. दाईं ओर का झाड़ छोटा है।
८. खड़े व्यक्ति के गले में पड़े बैग का पट्टा सफेद हो गया है।
९. उसके सिर पर अधिक बाल हैं।
१०. सामने दिखाई देतीं पर्वत चोटियों में एक चोटी अधिक हो गई है।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



जब मन में हो कंप्यूटर में नाम कमाने की चाहत
तब अचूकता की ही रहती है जरूरत.

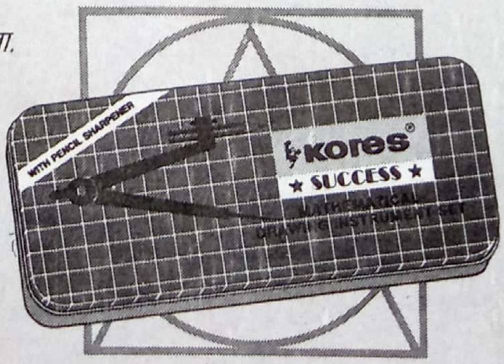
उसकी तो बस एक ही तमन्ना है कि वो कंप्यूटर में नाम कमाए—खूब नाम कमाए.

डिज़ाइनों को नापना, रेखाचित्र बनाना, अपनी ही डिज़ाइनों की रचना और निर्माण करना. इसी में हर वक्त वो लगा रहता है.

वो जो भी करता है उसमें उसे चाहिए पूरी सफलता.

इसीलिए वो हमेशा सर्वोत्तम जॉमेट्री सेट ही चुनता है. कोरस सक्सेस : प्रोट्रेक्टर, डिवाइडर, कंपास, स्केल—सभी अचूकता के लिए हैं. सदा ही सही कार्य करने के लिए ही बने हैं. यह कार्यकुशल सेट आपके लिए लाल और सफ़ेद आकर्षक टिकाऊ मेटल बॉक्स में पेश है.

सर्वोत्तम... सिर्फ़ सर्वोत्तम से ही बनेगी बात.
यदि आपको है सर्वोत्तम और सफलता की चाहत !



कोरस सक्सेस जॉमेट्री सेट
आपकी सफलता का साधन

कोरस (इंडिया) लि., बंबई 400 018. शाखाएँ भारत के सभी शहरों में

AKA/469/HN-01

Scanned with CamScanner